राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 टी-20 में किया था डेब्यू, नाबाद पारी खेलकर दिलाई थी जीत ...

मोदी के नेतृत्व में 2014 से पहले से चली आ रही पॉलिसी पैरालिसिस की 11

वर्ष : 14 | अंक : 32 | नई दिल्ली, मंगलवार, 13 जून, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 41°C

न्यूनतम तापमान 29.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,995
चांदी	72,500
सेंसेक्स	57,635
निफ्टी	16,986

काशी की आत्मा भारत की कालातीत परंपराओं से ऊर्जावान : मोदी

पीएम ने जी-20 देशों के विकास मंत्रियों की बैठक को वर्चुअली किया संबोधित

प्रात : किरण एजेंसी

वाराणसी/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को जी-20 देशों के विकास मंत्रियों की बैठक को वर्चुअली संबोधित किया। उन्होंने बैठक की सफलता की कामना और अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि काशी की आत्मा भारत की कालातीत परंपराओं से ऊजार्वान है। मुझे उम्मीद है कि आप अपना सारा समय मीटिंग रूम में नहीं बिताएंगे। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूं कि आप बाहर जाएं। अन्वेषण करें और काशी की भावना का अनुभव करें। और, मैं ऐसा केवल इसलिए नहीं कहता कि काशी मेरा निर्वाचन क्षेत्र है। मुझे विश्वास है कि गंगा आरती और सारनाथ की यात्रा का अनुभव आपको वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। प्रधानमंत्री ने वीडियो सम्बोधन में कहा, मैं लोकतंत्र की जननी के सबसे पुराने जीवित शहर (बनारस) में आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं। काशी सदियों से ज्ञान, चर्चा, संस्कृति और अध्यात्म का केंद्र रही है। इसमें भारत की विविध विरासत का सार है। उन्होंने कहा -वैश्विक दक्षिण के लिए विकास एक मुख्य मुद्दा है। ग्लोबल साउथ के देश वैश्विक कोविड महामारी द्वारा

उत्पन्न व्यवधानों से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। भू-राजनीतिक तनावों के कारण खाद्य, ईंधन और उर्वरक संकट ने एक और झटका दिया है। ऐसी परिस्थितियों में, आपके द्वारा लिए गए निर्णय पूरी मानवता के लिए बहुत मायने रखते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम सतत विकास लक्ष्यों को पीछे न जाने दें। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी पीछे न छूटे। इस समूह के लिए दुनिया को एक मजबूत संदेश देना अनिवार्य है कि इसे हासिल करने के लिए हमारे पास एक कार्य योजना है। मैं जी-20 विकास मंत्रियों से विकास के इस मॉडल का अध्ययन करने का आग्रह करता हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा-यह प्रासंगिक हो सकता है क्योंकि आप एजेंडा 2030 को गति देने की दिशा में काम कर रहे हैं। भारत में डिजिटलीकरण ने क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। हमने 100 से अधिक आकांक्षी जिलों में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के प्रयास किए हैं जो अल्प-विकास वाले पॉकेट थे। प्रौद्योगिकी का उपयोग लोगों को सशक्त बनाने, डेटा को सुलभ बनाने और समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा रहा है। भारत महिला सशक्तिकरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास तक फैला हुआ है। मैं आपसे महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के लिए गेम-चेंजिंग एक्शन प्लान अपनाने का आग्रह करता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा -भारत में हम नदियों, पेड़ों, पहाड़ों और प्रकृति के सभी तत्वों का बहुत सम्मान करते हैं। पारंपरिक भारतीय विचार एक ग्रह-समर्थक जीवन शैली को बढ़ावा देता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले साल, संयुक्त राष्ट्र महासचिव के साथ, मैंने मिशन लाइफ-लाइफस्टाइल लॉन्च किया था। मुझे खुशी है कि यह समूह लाइफ पर उच्च स्तरीय सिद्धांतों का एक सेट विकसित करने के लिए काम कर रहा है। यह जलवायु कार्रवाई में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा। उल्लेखनीय है कि विदेशमंत्री डॉ. एस. जयशंकर की अध्यक्षता में बड़ालालपुर स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय हस्तकला संकुल सभागार में यह बैठक चल रही है।

मुख्यमंत्री ने सात निश्चय योजना-2 के तहत 44 राजकीय पॉलिटेक्निक संस्थानों में स्थापित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का किया उद्घाटन

विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग का नाम बदलकर विज्ञान प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग होगा : नीतीश

अभियंत्रण महाविद्यालयों के लिये 209 सहायक प्राध्यापक तथा पॉलिटेक्निक संस्थानों के 148 व्याख्याताओं को दिया गया नियुक्ति पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग द्वारा आयोजित नव नियुक्त सहायक प्राध्यापक (विद्युत अभियंत्रण), व्याख्याता (असैनिक अभियंत्रण) एवं व्याख्याता (अर्थशास्त्र) के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने पांच नवनियुक्त सहायक प्राध्यापकों (विद्युत अभियंत्रण) को सांकेतिक रूप से नियुक्ति पत्र प्रदान कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर अधिवेशन भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने रिमोट के माध्यम से सात निश्चय योजना-2 के तहत बिहार के 44 राजकीय पॉलिटेक्निक संस्थानों में स्थापित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग का नाम हमलोग बदलकर विज्ञान प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग करेंगे। बहुत जल्द कैबिनेट से इसकी मंजूरी दी जायेगी। हमलोग काफी संख्या में बहाली करवा रहे हैं।

शिक्षा विभाग एवं पुलिस में काफी संख्या में बहाली की प्रक्रिया जारी है। हमलोग 10 लाख लोगों को नौकरी एवं 10 लाख को रोजगार का अवसर देंगे। हमलोगों के कामों की कोई चर्चा नहीं करता है। पिछले 9 सालों में केंद्र सरकार ने बिहार के लिये कुछ भी नहीं किया है लेकिन हर जगह उसकी ही चर्चा होती रहती है। राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालयों एवं पॉलिटेक्निक संस्थानों में आवश्यकतानुरूप जल्द से जल्द बहाली कराने का निर्णय लिया है। आज अभियंत्रण महाविद्यालयों के लिये 209 सहायक प्राध्यापक तथा पॉलिटेक्निक

संस्थानों के 148 व्याख्याताओं को मिलाकर कुल 415 लोगों को नियुक्ति पत्र दिया गया है। पिछले वर्ष नवंबर माह में भी काफी संख्या में नियुक्ति पत्र वितरण किया गया था। हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक नियुक्तियां हो ताकि पढ़ाई-लिखाई में छात्रों को असुविधा न हो। पहले बिहार में काफी कम संख्या में इंजीनियरिंग कॉलेज और पॉलिटेक्निक संस्थान थे। हमलोगों ने इनकी संख्या बढ़ाने के लिए वर्ष 2016 से इस दिशा में तेजी से काम कराया। बिहार के सभी 38 राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालयों में से 37 के भवन निर्माण का कार्य पूरा हो चुका है और बक्सर में निर्माण कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। वहीं बिहार के सभी 46 पॉलिटेक्निक संस्थानों में से 41 के भवन निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है।

भोजपुर, अरवल और जहानाबाद में पॉलिटेक्निक संस्थानों के भवन निर्माण का कार्य अंतिम चरण में है और पॉलिटेक्निक संस्थान बाढ़ का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है। उन्होंने कहा कि भागलपुर के नाथनगर में निर्माण कार्य शुरू होनेवाला है, इस काम को अविलंब शुरू कराएं। हम चाहते हैं कि सभी पॉलिटेक्निक संस्थानों के भवन निर्माण का कार्य जल्द से जल्द पूर्ण हो। इस दिशा में तेजी से काम सुनिश्चित कराएं। बक्सर में राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय के भवन निर्माण के कार्य में भी तेजी लायें। मुख्यमंत्री ने कहा कि निमाणार्धीन राजकीय अभियंत्रण महाविद्यलायों और पॉलिटेक्निक संस्थानों के कामों को हम निरंतर जगह-जगह जाकर देखते रहे हैं। सभी राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालयों और पॉलिटेक्निक संस्थानों के कैंपस में ही शिक्षक, छात्र और वहां नियुक्त कर्मियों के आवासन की भी व्यवस्था की गयी है ताकि पठन-पाठन में किसी प्रकार की कठिनाई न हो, समय पर पढ़ाई हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालयों और पॉलिटेक्निक संस्थानों में बेहतर शिक्षा प्रदान करने का प्रबंध किया गया है। हम चाहते हैं कि आप सभी छात्रों को ठीक ढंग से पढ़ाये।

हमलोगों ने जो काम किया है, उसको केन्द्र ने अपनाया है : मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोगों ने जो काम किया है, उसको केन्द्र ने अपनाया है। हमलोग बिहार में काफी काम किये हैं लेकिन उसकी चर्चा कोई नहीं करता है। साइकिल योजना जब बिहार में शुरू की गई, उस समय देश और विदेशों में भी ऐसी योजना नहीं थी।

आज कल केंद्र वालों ने मीडिया पर कब्जा कर लिया है। आज कल देश में दो लोग सिर्फ अपना ही नाम लेते रहते हैं। अपने पार्टी के नेताओं का भी नाम नहीं लेते हैं। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का भी नाम नहीं लेते हैं। बापू का भी नाम नहीं लेते हैं। हमारे साथ बिहार में पहले जो लोग काम करते थे, वे भी मेरे खिलाफ आज कल खूब बोलते हैं ताकि उनको बढिया जगह मिल जाय लेकिन कहीं किसी को पार्टी कुछ नहीं दे रहा है। हमलोग सभी के लिए काम करते हैं लेकिन वे लोग सिर्फ अपने लिये काम करते हैं। उन्होंने कहा कि हमलोग ज्यादा से ज्यादा विपक्षी दलों को एकजुट करने में लगे हैं। ऐसा हुआ तो वे लोग सत्ता से चले जायेंगे तो समाज में आपसी समझ और बढ़ेगा। मीडिया वालों को भी सम्मान और इज्जत मिलेगी। लोगों की सेवा में हमलोग लगे रहते हैं और समाज में प्रेम और भाईचारे के लिये काम करते हैं। कुछ लोग माहौल बिगाड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं। जनता को यह सब पता है। हमलोग प्रचार नही करते। समाज में प्रेम और भाईचारे का माहौल रहना चाहिए। आपस में झंझट नहीं करना चाहिए । हमलोग सभी लोगों के लिए काम करते हैं, अपने हित के लिए नहीं करते हैं। आपलोगों को शुभकामनाएं देता हूं आपलोग नियुक्ति पत्र मिला है आपलोग अच्छे ढंग से काम कीजियेगा और मन लगाकर पढाइयेगा ।

ये रहें मौजूद : कार्यक्रम को उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग के मंत्री सुमित कुमार सिंह तथा विज्ञान एवं प्रावैद्यिगिकी विभाग के सचिव लोकेश कुमार सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मोहम्मद जमा खान, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग के निदेशक उदयन मिश्रा, विभिन्न राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालयों के प्राचार्यगण, शिक्षकगण, विभागीय पदाधिकारी / कर्मीगण, नव नियुक्त सहायक प्राध्यापकगण, व्याख्यातागण सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

शोभन में स्थित जगह दरभंगा एम्स के लिये सबसे बेहतर : सीएम

बोलें- केन्द्र सरकार के दिमाग में कुछ और बात होगी

पटना। मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत की। दरभंगा में प्रस्तावित एम्स के लिए राज्य सरकार द्वारा दी जानेवाली जमीन को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने लेने से इंकार कर दिया है, पत्रकारों के सवाल पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि केन्द्र सरकार के दिमाग में कुछ और बात होगी। शोभन में स्थित जगह एम्स के लिये सबसे बेहतर है। सीएम ने कहा कि किसी को कुछ मालूम नहीं है। अभी जो भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं जब वे केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री थे तो हमने कहा था कि दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पताल को ही एम्स बनाएंगे। लेकिन केंद्र ने बाद में तय कर दिया कि उसको नहीं बनाया जायेगा। फिर हमने उसके बगल में ही तय कर दिया क्योंकि वहां की स्थिति ठीक नहीं थी। दरभंगा में जो नयी जगह चुनी गई है वो काफी अच्छी है, कोई भी जाकर देख सकता है। वहां जो दो लेन का रास्ता है उसको भी बढ़ाकर फोर लेन किया जाएगा। ये जगह पढ़ाई के लिए अच्छी हो जाएगी और बाहर से यहां आनेवालों को भी काफी सहूलियत होगी। उनलोगों के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है जब हम कोई अच्छा काम के लिए सुझाव देंगे तो भी वे लोग नहीं सुनेंगे। जब ये लोग हट जाएंगे तो फिर अच्छा-अच्छा काम होगा। दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पताल अपने बिहार का दूसरा सबसे पुराना कॉलेज है। दरभंगा में जो हमलोगों का मेडिकल कॉलेज और अस्पताल है उसका और विस्तार करना है। पटना के पीएमसीएच को और बेहतर ढंग से बना रहे हैं, डीएमसीएच को और बेहतर किया जायेगा।

संक्षिप्त खबरें

प्रधानमंत्री ने चक्रवाती तूफान बिपारजॉय से जुड़े हालात की समीक्षा की

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को चक्रवाती तूफान बिपारजॉय से संबंधित हालात की समीक्षा की। यह चक्रवात बृहस्पतिवार को गुजरात के कच्छ क्षेत्र में दस्तक दे सकता है। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव पी के मिश्रा, कैबिनेट सचिव राजीव गौबा, पृथ्वी विज्ञान सचिव एम रविचंद्रन, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य कमल किशोर और भारत मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र शामिल हुए। बैठक में दी गयी प्रस्तुति के अनुसार कच्छ, देवभूमि द्वारका, पोरबंदर, जामनगर, राजकोट, जूनागढ़ और मोरबी में 15 जून सुबह से शाम तक 125 से 135 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार की हवाओं के साथ तूफान आ सकता है और हवा की रफ्तार 145 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है। अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि बिपारजॉय के बहुत प्रचंड चक्रवाती तूफान के रूप में सौराष्ट्र-कच्छ के तटीय क्षेत्र में दस्तक देने की संभावना है।

अमृतसर की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी ड्रोन बरामद

जालंधर। सीमा सुरक्षा बल ने सोमवार को एक विशेष सूचना के आधार पर अमृतसर जिले के गांव सैदपुर कलां के बाहरी इलाके में तलाशी अभियान दौरान एक पाकिस्तानी ड्रोन बरामद किया है। बीएसएफ पंजाब सीमा के जनसंपर्क अधिकारी ने आज यहां बताया कि तलाशी के दौरान सुबह करीब 07 बजकर 20 मिनट पर गांव सैदपुर कलां के गुरुद्वारे के पास पूरी तरह क्षतिग्रस्त ड्रोन बरामद किया गया। उन्होंने बताया कि बरामद ड्रोन मॉडल डीजेआई मैट्रिस 300 आरटीके सीरीज का क्वाडकॉप्टर है।

बीएसएफ ने हंदवाड़ा से शक्तिशाली विस्फोटक किया बरामद

श्रीनगर। सीमा सुरक्षा बलने सोमवार को जम्मू-कश्मीर के हंदवाड़ा में एक गांव से शक्तिशाली विस्फोटक बरामद किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने यहां बताया कि बीएसएफ के मार्ग सुचारू करने वाले दल ने हंदवाड़ा-नौगांव राजमार्ग पर एक पुलिया के पास भट्टपुरा गांव से आज तड़के शक्तिशाली विस्फोटक बरामद किया। उन्होंने बताया कि सुरक्षाबलों के सतर्क जवानों ने समय रहते विस्फोटक बरामद कर एक बड़ी आतंकवादी घटना विफल कर दिया है। आईईडी को बड़ी आतंकवादी घटना को अंजाम देने लिए लाया गया था।

कार लॉरी की टक्कर में सात लोगों की मौत

एलुरु। आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के नालाजेरला मंडल के अनंतपल्ली गांव में सोमवार को कार की लॉरी से हुई टक्कर में एक बच्चे सहित सात लोगों की मौत हो गई और दो घायल हो गए। पुलिस ने आज यहां बताया कि दुर्घटना उस समय हुई जब राजमुंद्री के रहने वाले एक परिवार के आठ सदस्य हैदराबाद में शादी समारोह के बाद वापस लौट रहे थे इसी दौरान उनकी कार पुल पर एक खड़ी लॉरी से टकरा गई। जिससे छह लोगों को मौत हो गई और एक व्यक्ति ने अस्पताल में ले जाने के दौरान रास्ते में दम तोड़ा।

दक्षिण पश्चिम मानसून कर्नाटक, कोंकण के कुछ हिस्सों की ओर अग्रसर

प्रात : किरण एजेंसी

पुणे। दक्षिण पश्चिम मानसून सोमवार को कर्नाटक के कुछ हिस्सों, कोंकण, तमिलनाडु के शेष हिस्सों, आंध्र प्रदेश, बंगाल की उत्तर-पश्चिम खाड़ी, बिहार के कुछ अन्य हिस्सों, उप हिमालयी पश्चिम बंगाल के अधिकांश हिस्सों तथा सिक्किम के कुछ हिस्सों की ओर बढ़ रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक उत्तर ओडिशा के अलग-अलग हिस्सों में झुलसाने वाली लू के थपेड़े और कुछ हिस्सों में लू जैसी स्थिति बनी हुई है। इसके अलावा तटीय आंध्र प्रदेश और गांगेय पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, विदर्भ, छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार में अलग-अलग इलाकों में भी लू जैसी स्थिति प्रबल है। बिहार,

झारखंड, ओडिशा, तटीय आंध्र प्रदेश और यानम के कुछ हिस्सों, कोंकण और गोवा में अलग-अलग स्थानों पर अधिकतम तापमान सामान्य से 5.1 डिग्री सेल्सियस से काफी ऊपर बना हुआ है। इसके अलावा छत्तीसगढ़, गांगेय पश्चिम बंगाल, मध्य महाराष्ट्र और तेलंगाना में कई स्थानों पर, पूर्वी उत्तर प्रदेश, पूर्वी मध्य प्रदेश, विदर्भ, उप हिमालयी पश्चिम बंगाल, सिक्किम और रायलसीमा में कुछ स्थानों पर, सौराष्ट्र, कच्छ, तटीय कर्नाटक, तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल में पृथक स्थानों पर सामान्य से काफी ऊपर (3.1 डिग्री से पांच डिग्री सेल्सियस) रहा। उत्तर आंतरिक कर्नाटक में अधिकांश स्थानों पर, पश्चिम मध्य प्रदेश और मराठवाड़ा में कई स्थानों पर, केरल, माहे और लक्षद्वीप में कुछ स्थानों, उत्तराखंड और दक्षिण आंतरिक कर्नाटक में पृथक-पृथक स्थानों पर अधिकतम तापमान सामान्य से 1.6 डिग्री से तीन डिग्री सेल्सियस तक ऊपर रहा है। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर और लद्दाख, गिलगित, बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद के कुछ स्थानों पर तापमान सामान्य से काफी नीचे (5.1 डिग्री सेल्सियस नीचे), असम और मेघालय के कई स्थानों पर तापमान सामन्य से 3.1 से 5.0 डिग्री सेल्सियस नीचे रहा, हरियाणा, चंडीगढ, और दिल्ली, हिमचाल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के अलग-अलग हिस्सों में तापमान सामान्य से (-1.6 से -3.0 डिग्री सेल्सियस) नीचे रिकॉर्ड किया गया। इसके अतिरिक्त अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, पंजाब के कुछ हिस्सों, पश्चिम राजस्थान के अलग-अलग हिस्सों और देश के बाकी हिस्सों में तापमान सामान्य के करीब दर्ज किया गया है। तटीय आंध्र प्रदेश और यानम के टुनी में अधिकतम तापमान सबसे अधिक 45.1 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

प्रियंका ने मध्यप्रदेश में चुनावी अभियान का किया शंखनाद

प्रात : किरण एजेंसी

जबलपुर/नई दिल्ली। मध्यप्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चुनावी अभियान का शंखनाद करते हुए कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने आज बिना किसी का नाम लिए कहा कि प्रदेश ने 18 साल सब कुछ देख लिया, अब छह महीने का समय है, इसमें यहां के लोग देखें कि दूसरे राज्यों में कांग्रेस की सरकारें कैसा काम कर रही हैं। श्रीमती वाड्रा ने यहां आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि वे यहां कोई चुनाव प्रचार करने नहीं, बल्कि लोगों को जागरुक करने आई हैं कि जो चीजें कांग्रेस पार्टी देख पा रही है, वो सभी लोग देखें और नेताओं को सच बोलने के लिए मजबूर करें। इस दौरान उन्होंने भावुक अंदाज में ये भी कहा कि उनके परिवार के सदस्यों ने राष्ट्र निर्माण के लिए खून दिया है। उन्होंने बिना किसी का नाम लिए केंद्र और प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि निर्माण करना बहुत कठिन है, जबकि सत्ता को भोगना बहुत आसान है।

कार्यक्रम जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में शामिल हुए मुख्यमंत्री, 107 लोगों की सुनी समस्यायें, अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा निर्देश

जमीन कब्जा की शिकायत पर मुख्यमंत्री गंभीर, जल्द कार्रवाई का दिए निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जमीन कब्जा की शिकायत पर गंभीर दिखें और राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के अधिकारियों को शीघ्र कार्रवाई करने का निर्देश दिए। दरअसल, सोमवार को देशरत्न मार्ग स्थित मुख्यमंत्री सचिवालय परिसर में आयोजित जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में अधिकांश मामले जमीन कब्जा से जुड़ा रहा।

इस पर मुख्यमंत्री सख्त दिखें और मौके पर मौजूद विभागीय अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिए। सहरसा जिले से आए एक बुजुर्ग फरियादी ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि मेरे खेत को कुछ दबंगों ने कब्जा कर लिया है और मुझसे 5 लाख रुपए की मांग कर रहे हैं। पैसा नहीं देने पर खेत में लगी फसल को उजाड़ देते हैं। थाने का लगातार चक्कर लगा रहे हैं बावजूद इसके कोई सुनवाई नहीं हो रही है। अररिया जिले से आए एक युवक ने गुहार लगाते हुए मुख्यमंत्री से कहा कि मेरे पड़ोसी द्वारा मेरी निजी भूमि पर कब्जा किया जा रहा है। इसकी शिकायत थाना में करने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। अररिया जिले से ही आए एक अन्य युवक ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि सार्वजनिक भूमि को अधिग्रहित कर दबंगों द्वारा निजी रास्ता बना लिया गया है। इस संबंध में शिकायत की गई है, लेकिन अब तक किसी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं हो पायी है। वहीं, किशनगंज जिले से आए एक फरियादी ने मुख्यमंत्री से शिकायत करते हुए कहा कि उनकी निजी भूमि का गलत चैहद्दी बताकर जमीन कब्जा कर लिया गया है। मुख्यमंत्री ने राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। कटिहार जिले से आए एक बुजुर्ग ने मुख्यमंत्री से फरियाद करते हुए कहा कि बासगीत पर्चे से

प्राप्त जमीन पर पिछले 8 वर्षों से अब तक उन्हें कब्जा नहीं दिलाया गया है, जिससे पूरे परिवार को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री ने राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देष दिया। लखीसराय जिले से आए एक फरियादी ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि उनकी निजी जमीन पर दबंगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है। सारे कागजात प्रस्तुत किए जाने के बाद भी मामले का हल नहीं हो पा रहा है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को जांचकर उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। पूर्णिया जिले से आये एक युवक ने मुख्यमंत्री से निवेदन करते हुए कहा कि 9 डिसमिल बासगीत पचावार्ली जमीन मिली है उसमें से 4 डिसमिल जमीन दबंगों द्वारा कब्जा कर ली गयी है। मुख्यमंत्री ने राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

शिवहर जिले से आए एक फरियादी ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि उनके पिता ने 50 साल पहले जिस जमीन को खरीदा था उसमें से 7 धूर जमीन तीन साल पहले बिक्री की गई लेकिन खरीददार द्वारा जबरन 12 धूर जमीन पर कब्जा कर लिया गया है। इसकी शिकायत हमने संबंधित विभाग से की, पर आज तक कोई कार्रवाई नहीं होने से परेशानी हो रही है। बेगूसराय जिले से आयी एक महिला फरियादी ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि मेरे पति दिव्यांग हैं और मेरी निजी भूमि को दबंगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है। इसकी शिकायत हमने संबंधित विभाग से की, लेकिन अब तक किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं की जा रही है, जिससे हमें अपनी ही भूमि के लिए दर-दर ठोकर खानी पड़ रही है। मुजफ्फरपुर जिले से आए एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि उनकी जमीन को कब्जा कर लिया गया है और खाली करने के लिए कहने पर जान से मारने की धमकी दी जाती है। वहीं मुजफ्फरपुर जिले से ही आए एक अन्य फरियादी ने गुहार लगाते हुए कहा कि मेरी मां की कोरोना से मौत हो गई लेकिन अनुग्रह अनुदान का भुगतान अभी तक नहीं हो पाया है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग से जांचकर उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

ये रहें मौजूद : जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री आलोक कुमार मेहता, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, समाज कल्याण मंत्री मदन सहनी, शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री लेशी सिंह, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री संतोष कुमार सुमन, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री जितेन्द्र कुमार राय, पंचायती राज मंत्री मुरारी प्रसाद गौतम, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मो जमां खान, श्रम संसाधन मंत्री सुरेन्द्र राम, विज्ञान एवं प्रावैधिकी मंत्री सुमित कुमार सिंह, आपदा प्रबंधन मंत्री शाहनवाज, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, पुलिस महानिदेशक आरएस भट्टी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, पटना के जिलाधिकारी चंद्रशेखर सिंह तथा वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा उपस्थित थे।

फ्री में चाऊमीन-मोमो नहीं दिए तो धारदार हथियार से किया हमला, हिंदू-मुस्लिम संगठन आमने-सामने; तनाव

देहरादून, एजेंसी। फ्री में चाऊमीन व मोमोज खाने को नहीं दिए तो मुस्लिम व्यक्ति ने ठेली संचालक को पीट दिया। इसके बाद दोनों पक्षों के लोग आ गए और तनावपूर्ण माहौल बन गया। पुलिस ने किसी तरह से मामले को शांत करवाया। इस मामले में मुस्लिम पक्ष के तीन आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। मुकेश यादव निवासी श्रीदेव सुमननगर बल्लूपुर रोड ने बताया कि वह अपने घर के बाहर ही एक फास्ट फूड सेंटर चलाता है। रविवार रात को वह अपनी दुकान पर काम कर रहा था तो एक शोएब नाम का लड़का जोकि आपराधिक प्रवृति का है, उसने चाऊमीन व मोमोज फ्री में खाने के लिए मांगा। मना करने पर आरोपित ने मार पिटाई शुरु कर दी। जब रोकने का प्रयास किया तो उसने फोन पर अपने पिता राशिद एवं भाई सहित अन्य को मौके पर बुला लिया। आरोपितों ने उसके घर पर घुसकर धारदार हथियारों, लाठी डंडो से जानलेवा हमला किया गया। इस दौरान अशोक थापा व गौरव कपूर को गंभीर चोटें आई। इस घटना के बाद क्षेत्र में तनाव का माहौल बन गया। कैंट कोतवाली पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला और वहां जमा लोगों को खदेड़ा। कैंट कोतवाली के इंस्पेक्टर संपूर्णानंद गैरोला ने बताया कि इस मामले में चार आरोपित शोएब, उसके पिता राशिद, भाई हरीश सहित अन्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

विवादित जमीन बेचकर हड़प लिए 1.90 करोड़ रुपये

देहरादून, एजेंसी। एक व्यक्ति को जालसाजों ने विवादित जमीन बेचकर 1.90 करोड़ रुपये हड़प लिए। पता चला कि इस जमीन का मुकदमा न्यायालय में विचाराधीन है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने तीन आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। धोखाधड़ी को लेकर दीपक किरसाली निवासी रानीपोखरी ने राजपुर थाने में शिकायत की है। उन्होंने बताया कि उनकी मुलाकात अमरपाल सिंह निवासी नेहरू कॉलोनी, रामपाल सिंह निवासी शास्त्रीनगर, शामली और हरेंद्र सिंह निवासी क्लेमेंटटाउन से हुई थी। इन लोगों ने राजपुर क्षेत्र में उन्हें एक जमीन दिखाई। इन लोगों ने दीपक से कहा कि इस जमीन पर कोई मुकदमा नहीं है। किसी प्रकार का विवाद नहीं है। इसके लिए उन्होंने पैमाइश के दस्तावेज दिखाए थे। तीनों की बातों में आकर जमीन का सौदा उन्होंने कर लिया। इसके बाद 1.90 करोड़ रुपये देकर बैनामा भी कर दिया गया। कुछ दिन बाद उन्हें पता चला कि इस जमीन पर सिविल न्यायालय में मुकदमा चल रहा है। उन्होंने इसके लिए तीनों से बात की लेकिन वह कोई वाजिब जवाब नहीं दे पाए। उन्होंने बैनामा रद्द करने और पैसे लौटाने को कहा तो आरोपियों ने इन्कार कर दिया। सीओ मसूरी अनिल कुमार जोशी ने बताया कि मामले में अमरपाल, रामपाल सिंह और हरेंद्र सिंह के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

पेटीएम केवाईसी अपडेट करने का झांसा देकर 94 हजार रुपये ठगे

देहरादून, एजेंसी। आपका पेटीएम बंद होने वाला है। इसके लिए केवाईसी अपडेट करानी होगी। इस तरह का मैसेज देखकर एक व्यक्ति साइबर ठगी का शिकार हो गया। मैसेज भेजने वाले ठग ने उनके मोबाइल पर एक लिंक भेजा। इस पर जैसे ही उन्होंने अपने पैन और आधार की डिटेल भरी उनके खाते से 94 हजार रुपये कट गए। मामले में रायपुर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। कांता प्रसाद गैरोला निवासी रेजीजॉन रेसीडेंसी, मयूर विहार ने शिकायत में बताया कि गत 30 मई को उनके मोबाइल पर अज्ञात नंबर से मैसेज आया था। इसमें लिखा था कि आपका पेटीएम बंद होने वाला है। इसके लिए केवाईसी करानी होगी। इसके बाद एक कॉल आई। कॉल करने वाले ने खुद को पेटीएम का अधिकारी बताया। उसने केवाईसी के लिए एक लिंक भेजा।

मंत्री जोशी ने किया चार करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण

देहरादून, एजेंसी। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने मसूरी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत चार करोड़ से अधिक की लागत से हुए विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया। मंत्री ने क्षेत्र के विकास के लिए भारतवाला में सामुदायिक भवन, गजियावाला में अतिरिक्त कक्ष, उंतरी गांव में मिलन केंद्र निर्माण और चंद्रोटी में मिलन केंद्र की घोषणा भी की। गणेश जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टिता के चलते 144 करोड़ की लागत से मसूरी पेयजल योजना का निर्माण कार्य पूर्ण होने वाला है। मसूरी में टनल निर्माण सहित रोपवे जैसे अहम प्रोजेक्टों पर कार्य चल रहा है। उन्होंने सिंचाई विभाग के माध्यम से ग्राम पंचायत भितरली में नहर के नवीनीकरण के निर्माण, जिला योजना में पर्यटन विभाग से ग्राम पंचायत गुनियालगांव में पार्क का निर्माण, मंडी परिषद के माध्यम से पुरुकुलगांव, भारतवाला, सिगली, गंगोल पंड़ितवाड़ी, गल्जवाड़ी एवं बिष्टगांव में संपर्क मार्ग सहित अन्य कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस दौरान जिला पंचायत उपाध्यक्ष दीपक पुंडीर भी मौजूद रहे।

आठ साल से नहीं है फिजिशियन, डेंटल सर्जरी की सुविधा लेकिन नहीं है सर्जन

देहरादून, एजेंसी। उप जिला अस्पताल विकासनगर में लंबे समय से फिजिशियन का पद रिक्त है। दंत रोग सर्जन भी नहीं है। जिस कारण मरीजों को निजी अस्पतालों पर निर्भर रहना पड़ता है। स्थानीय लोगों ने अस्पताल में फिजिशियन और डेंटल सर्जन की तैनाती किए जाने की मांग की है। अस्पताल से क्षेत्र की डेढ़ लाख की आबादी जुड़ी हुई है। लेकिन लंबे समय से फिजिशियन का पद रिक्त है। जिस कारण मरीज परेशान रहते हैं। उम्रदराज लोगों को सबसे ज्यादा परेशानी झेलनी पड़ती है। ब्लड प्रेशर, शुगर, सांस और पेट से संबंधित बीमारियों को लेकर मरीजों को परामर्श नहीं मिल पाता। मजबूरी में उन्हें प्राइवेट अस्पतालों में जाना पड़ता है, जिससे मरीजों की जेब पर आर्थिक बोझ भी पड़ता है। अस्पताल में सर्जरी की सुविधाएं होने के बावजूद डेंटल सर्जन की तैनाती नहीं है। दांत से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए लोगों को निजी अस्पतालों पर निर्भर रहना पड़ता है। अस्पताल में पिछले आठ साल से फिजीशियन का पद रिक्त है। डेढ़ साल से डेंटल सर्जन भी नहीं है।

छात्रों से मजाक... देहरादून के बदले मेरठ, बरेली, मुजफ्फरनगर और मुरादाबाद दे दिया परीक्षा केंद्र

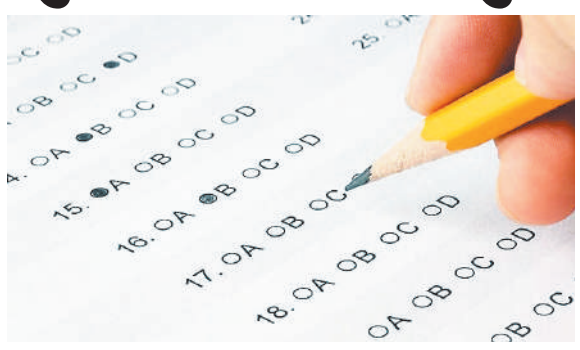

देहरादून, एजेंसी। फार्म में परीक्षा केंद्र के रूप में देहरादून परीक्षा केंद्र को वरीयता दी, लेकिन एजेंसी ने उसे मेरठ परीक्षा केंद्र आवंटित कर दिया। परिजनों ने परीक्षा केंद्र इतनी दूर होने की वजह से परीक्षा की अनुमति नहीं दी। इसी जिले की पूजा को भी देहरादून की जगह मेरठ परीक्षा केंद्र आवंटित किया गया।

केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं इससे संबद्ध कॉलेजों में दाखिले के लिए नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से कराई गई संयुक्त प्रवेश परीक्षा मजाक बन गई है। मनमाने तरीके से परीक्षा केंद्रों में फेरबदल कर देहरादून के बदले छात्र-छात्राओं के मेरठ, बरेली, मुजफ्फरनगर परीक्षा केंद्र दे दिए गए। जिससे सैकड़ों छात्र परीक्षा से वंचित रह गए। खासकर बीएड में अधिकतर छात्राएं परीक्षा नहीं दे पाई।

उत्तरकारी निवासी बबीता बताती है उसने सीयूईटी की बीएड प्रवेश परीक्षा का फार्म भरा था। फार्म में परीक्षा केंद्र के रूप में देहरादून परीक्षा केंद्र को वरीयता दी, लेकिन एजेंसी ने उसे मेरठ परीक्षा केंद्र आवंटित कर दिया। परिजनों ने परीक्षा केंद्र इतनी दूर होने की वजह से परीक्षा की अनुमति नहीं दी। इसी जिले की पूजा को भी देहरादून की जगह मेरठ परीक्षा केंद्र आवंटित किया गया।

पांच से आठ जून तक यूजी कोर्सेज में दाखिले के लिए भी छात्र-छात्राओं के साथ कुछ ऐसा ही हुआ।एचएनबी केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर यादव प्रसाद रेवानी के मुताबिक यूजी में दाखिले के लिए एनआईटी श्रीनगर, पौड़ी और इंजीनियरिंग कालेज घुड़दौड़ी को परीक्षा केंद्र बनाया गया था, लेकिन हर केंद्र में हर दिन डेढ़ से दो सौ छात्र परीक्षा में बैठ सकते थे, लेकिन एक केंद्र में 30 से 35 छात्रों को केंद्र आवंटित किया गया।

ऋषिकेश पहुंचने में ही बच्चों को छह से सात घंटे लग रहे: मेरठ और बरेली में अधिक बच्चों को केंद्र आवंटित किए गए। जबकि हमारे यहां इतनी जगह थी कि पूरे क्षेत्र के बच्चे कवर हो सकते थे। इनको यह पता नहीं है कि पहाड़ में एक से दूसरे जगह की दूरी कितनी है। श्रीनगर के बच्चों को हल्द्वानी और बरेली केंद्र आवंटित किया गया। पर्वतीय मार्ग का सफर और ऊपर से यात्रा सीजन ऐसे में ऋषिकेश पहुंचने में ही बच्चों को छह से सात घंटे लग रहे हैं।

एसोसिएशन ऑफ सेल्फ फाइनेंस इंस्टीट्यूट उत्तराखंड के अध्यक्ष डॉ सुनील अग्रवाल बताते हैं एजेंसी ने परीक्षा के नाम पर छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ किया है। उन्होंने यूजीसी एवं गढ़वाल विश्वविद्यालय को पत्र लिखकर हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों को प्रवेश परीक्षा की बाध्यता से मुक्त रखने को कहा है।

शक्तिफार्म में युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

सितारगंज, एजेंसी। शक्तिफार्म में एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। पुलिस प्रथम दृष्टया युवक के फंदे पर झूलकर आत्महत्या करना मान रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद कारण स्पष्ट हो सकेगा। युवक क्षेत्र में अपने नाना के घर पर बचपन से रहता था। वह अपने नाना के टेंट व्यवसाय में हाथ बंटाता था।

एसएसआई हरविंद्र कुमार ने बताया कि रविवार सुबह करीब दस बजे ग्राम प्रधान राजनगर कोतवाली में सूचना दी कि वार्ड संख्या चार राजनगर निवासी राजा मंडल (18) पुत्र संजय मंडल ने आत्महत्या कर ली है। सूचना के बाद वह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। बताया कि परिजनों के अनुसार युवक कपड़े का फंदा बनाकर लटक गया था। इससे उसकी मौत हुई है। बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बताया कि युवक के आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चला है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद मौत का सही कारण स्पष्ट हो सकेगा।

एक बाइक चालक ने साइकिल सवार दंपती को टक्कर मार दी। हादसे में महिला की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मूल रूप से बिजनौर के अजबगढ़ तथा हाल में मानपुर रोड राम कॉलोनी निवासी जबर सिंह अपनी पत्नी पुष्पा देवी (40) को साइकिल पर बैठा कर घर जा रहे थे। मानपुर रोड पर उसकी साइकिल को तेज रफ्तार बाइक सवार ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि पुष्पा देवी साइकिल से छिटक कर दूर जा गिरी। जिसे गंभीरावस्था में मानपुर रोड स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे परिजनों ने बताया मृतका के दो बेटियां हैं, एक बेटी की शादी हो चुकी है। बाइक सवार फरार बताया जा रहा है। हादसे की अभी पुलिस में रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई है।

केदारघाटी के चोराबाड़ी क्षेत्र में फिर हुआ हिमस्खलन, एक सप्ताह में दूसरी घटना आई सामने

रुद्रप्रयाग, एजेंसी। केदारनाथ में चोराबाड़ी क्षेत्र में सुबह 8.56 बजे एवलांच आया है। एक सप्ताह में एवलांच आने की यह दूसरी घटना है। इससे पहले आठ जून को केदारनाथ में चोराबाड़ी ग्लेशियर जोन में हिमस्खलन हुआ था। इससे काफी देर तक बर्फ का गुबार उठता रहा। इस दौरान केदारनाथ धाम में मौजूद कई श्रद्धालुओं ने इस घटना को अपने मोबाइल में कैद किया था।

इसी रास्ते से जून 2013 की आपदा में भी भारी मात्रा में मलबा और पानी आया था। बीते दस माह में हिमस्खलन (एवलांच) की पांचवीं घटना सामने आई थी। बीते वर्ष सितंबर-अक्तूबर में भी इसी क्षेत्र में एवलांच आया था। इस दौरान पांच से सात मिनट के लिए क्षेत्र में बर्फ का गुबार उठा। जिस तरह से बर्फ का गुबार तेजी से नीचे की तरफ खिसक रहा था, उससे अनुमान लगाया गया कि काफी ऊंचाई से भारी मात्रा में नई बर्फ टूटकर गिरी।

इस दौरान केदारनाथ मंदिर, मंदिर परिसर और गोल चबूतरे में मौजूद श्रद्धालुओं ने इस घटना को अपने मोबाइल में कैद किया। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि एवलांच से केदारनाथ मंदिर सहित संपूर्ण केदारपुरी को किसी प्रकार से कोई नुकसान नहीं हुआ है।

यह घटना मंदिर क्षेत्र से लगभग छह किमी दूर हुई है। उन्होंने बताया कि कपाट खुलने के बाद से केदारनाथ क्षेत्र में बर्फबारी के चलते एवलांच की घटना हुई है, जो सामान्य प्रक्रिया है। उधर, वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी देहरादून के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. मनीष मेहता ने बताया कि हिमालय क्षेत्र में एवलांच सामान्य घटना है। 22 सितंबर को शाम साढ़े चार बजे केदारनाथ मंदिर से लगभग तीन से चार किमी पीछे पहाड़ी से आंशिक हिमस्खलन हुआ है। इसके बाद एक अक्तूबर को शाम साढ़े पांच बजे के आसपास मंदिर से छह से सात किमी पीछे फिर से आंशिक हिमस्खलन हुआ है। इसके बाद दो अक्तूबर को भी चोराबाड़ी ताल से लगभग तीन किमी ऊपर हिमस्खलन हुआ था।

बिजली घर तक पहुंची नहीं, लेकिन काश्तकार को थमा दिया बिल

नई टिहरी, एजेंसी। ऊर्जा निगम के ऊपर ग्रामीणों के घर बिजली पहुंचाने की जिम्मेदारी है। लेकिन प्रतापनगर के कोलधार गांव में ऊर्जा निगम ने एक काश्तकार के घर बिजली तो पहुंचाई नहीं उल्टा बिल जरूर थमा दिया। बिना बिजली के बिल आने से परेशान ग्रामीण अब विभाग के चक्कर काट रहा है लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

प्रतापनगर ब्लॉक के कोलधार गांव निवासी शूरवीर सिंह ने पिछले साल अक्टूबर में ऊर्जा निगम में अपने मकान के लिये बिजली कनेक्शन के लिये आवेदन किया था। उस दौरान विभाग ने उनकी 1600 रूपये की पर्ची काटी और उनके मकान तक बिजली का खंभा लगाकर तार भी पहुंचा दी। शूरवीर सिंह के घर में बिजली का मीटर भी लगा दिया। लेकिन बिजली नहीं आई।

पिछले साल से अभी तक शूरवीर सिंह के घर पर बिजली नहीं आई है। परेशान शूरवीर सिंह बीते अप्रैल माह में जब शिकायत लेकर ऊर्जा निगम के कार्यालय पहुंचे तो वहां भी उनकी सुनवाई नहीं हुई और हैरानी की बात ये है कि उन्हें 573 रूपये का बिजली का बिल थमा दिया गया।

परेशान शूरवीर सिंह अब विभाग के चक्कर काट रहे हैं। लेकिन उनकी कहीं सुनवाई नहीं हो रही है। शूरवीर सिंह का कहना है कि नौ महीने से वह बिजली आने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन बिजली नहीं आई। विभाग को बिजली लगानी चाहिये थी, लेकिन विभाग ने बिना बिजली के ही बिजली का बिल थमा दिया।

इस संबंध में ऊर्जा निगम के एसडीओ सद्दाम अली ने बताया कि ग्रामीण के घर तक बिजली लाइन बिछा दी गई थी। लाइन में कुछ दिक्कत के कारण सप्लाई शुरू नहीं हो पाई।

तो युवक ने आत्महत्या करने से पहले युवती की गला दबाकर की हत्या

देहरादून, एजेंसी। दो दिन पूर्व गेस्ट हाउस के कमरे से मिले मृत युवक-युवती के शवों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट अभी नहीं आई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस को आशंका है कि युवक ने आत्महत्या करने से पहले युवती की गला दबाकर हत्या की। हालांकि, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद इसकी पुष्टि होगी।

गेस्ट हाउस के कमरे से मृत मिले मेरठ के युवक और सेलाकुई के एक गांव की युवती एक-दूसरे के परिचित थे। पूर्व में दोनों एक कंपनी में काम कर चुके थे। पुलिस को कक्ष से न तो कोई सुसाइड नोट मिला और न ही कोई जहरीला पदार्थ की शीशी या पैकेट। युवक का शव पंखे पर लटका था, जबकि युवती का शव बेड पर पड़ा था। युवती की मौत कैसे हुई, इसको लेकर पुलिस उलझी है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में युवती की मौत दम घुटने से होने की बात सामने आ रही है। हालांकि, पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद मौत की असली वजह पता चल पाएगी। पुलिस को आशंका है कि युवक ने पंखे पर लटकने से पहले युवती की गला दबाकर हत्या कर दी। युवती की मौत के बाद युवक भी खुद फांसी के फंदे पर लटक गया।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक युवक और युवती काफी अच्छे दोस्त थे। करीब छह महीने पहले युवक युवती के घर गया था। उसके परिजनों के साथ कहासुनी भी हुई थी। इस बीच कुछ समय पूर्व युवती की सगाई भी हो गई। आशंका जताई जा रही युवती की सगाई से युवक नाराज चल रहा था। युवक ने युवती को गेस्टहाउस में बुलाया और वहां उसकी हत्या कर खुद आत्महत्या कर ली। थाना प्रभारी मोहन सिंह ने बताया कि मामले की हर पहलु पर जांच चल रही है। घटना के बाद कई सवाल उठ रहे हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृत्यु का कारण साफ होने के बाद घटना की तस्वीर साफ हो पाएगी।

तो क्या हरदा हो गए सीएम धामी के मुरीद तारीफ में कही ये बात

देहरादून, एजेंसी। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के उत्तरकाशी प्रवास के दौरान मंडुवे के बीज की बुआई करने की सराहना की। साथ ही उन्होंने सलाह भी दी कि कांग्रेस सरकार के दौरान मंडुवे को प्रोत्साहन देने की जो नीति बनाई गई थी, उसे फिर से लागू किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी शनिवार और रविवार को उत्तरकाशी दौरे पर थे। रविवार सुबह उन्होंने एक खेत में पावर वीडर चलाया और मंडुवे का बीज बोया। उनकी ये तस्वीरें

इनटरनेट मीडिया पर खूब प्रचारित हुईं। इन तस्वीरों पर पूर्व मुख्यमंत्री व वरिष्ठ कांग्रेस नेता हरीश रावत ने इंटरनेट मीडिया में प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री को मंडुवे की बुआई करते देख उन्हें अच्छा लगा। कांग्रेस सरकार के दौरान मंडुवे के समर्थन मूल्य समेत सारे मोटे अनाज और मिर्च की खेती में बोनस देने की योजना शुरू की गई थी। एक हजार रुपये प्रति क्विंटल बोनस दिया जाता था। मौजूदा सरकार ने सारी योजनाएं समाप्त कर दी है। मंडुवा अब खूब प्रचारित हो रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री को सलाह दी कि अभी मंडुवा बोने वाले गायब हो रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस सरकार के समय शुरू की गई योजनाएं फिर से शुरू की जाएं। उन्होंने यह भी लिखा कि राजनीति में पार्टी से परहेज होता है लेकिन योजनाओं से परहेज नहीं होता।

भाजपा सरकार ने ओबीसी के हितों के लिए बहुत काम किए

काशीपुर, एजेंसी। भाजपा ओबीसी मोर्चा के कुमाऊं मंडल जनप्रतिनिधि सम्मेलन में रक्षा और पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट ने कहा कि भाजपा सरकार ने ओबीसी समाज के विकास के लिए कई काम किए हैं। 2015 में ओबीसी आयोग का गठन किया गया। ओबीसी का आरक्षण 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 17 प्रतिशत किया गया। रविवार को दड़ियाल मार्ग पर स्थित एक रिजॉर्ट में भाजपा उत्तराखंड जनसंपर्क अभियान के तहत ओबीसी मोर्चा के जनप्रतिनिधि सम्मेलन में अजय भट्ट ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा ओबीसी समाज की उपेक्षा की है। ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष राकेश गिरी ने कहा कि मोदी सरकार ने ओबीसी हितों की हमेशा चिंता की है। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष गजेंद्र यादव ने कहा कि आरक्षण बढ़ने से समाज के युवाओं को काफी लाभ मिल रहा है। सम्मेलन में कुमाऊं मंडल के 850 ब्लॉक और जनप्रतिनिधि शामिल हुए। पार्षदों ने मेयर ऊषा चौधरी के नेतृत्व में रक्षा राज्य मंत्री भट्ट का स्वागत किया। ओबीसी मोर्चा काशीपुर जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिंह सैनी ने आभार जताया। इस मौके पर विधायक त्रिलोक सिंह चीमा, भाजपा जिलाध्यक्ष गुंजन सुखीजा, गुरविंदर चंडोक, अनिल कुमार तोमर, प्रकाश नेगी, लवीश अरोरा, वैशाली गुप्ता, कंचन वर्मा, सुधा शर्मा आदि मौजूद रहे।

ड्यूटी ऑफ रेस्ट में कटौती पर सामूहिक अवकाश पर गए चालक-परिचालक

हल्द्वानी, एजेंसी। ड्यूटी ऑफ रेस्ट में कटौती को लेकर रोडवेज के चालक-परिचालकों का पारा चढ़ गया। रविवार दोपहर चालक-परिचालक भड़क गए और सामूहिक अवकाश की चेतावनी के साथ हल्द्वानी बस स्टेशन में एकत्रित हो गए। देर शाम तक निगम प्रबंधन के साथ वार्ता चलती रही। वार्ता विफल होने पर चालक और परिचालक अनिश्चितकाल छुट्टी पर चले गए। रेस्ट में कटौती का आदेश आया। जैसे ही इस आदेश की जानकारी रोडवेज कर्मियों को हुई, उनमें आक्रोश पनप गया। निगम प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए चालक-परिचालक हल्द्वानी बस स्टेशन में एकत्रित हो गए। कर्मचारियों ने एक सुर में सामूहिक अवकाश की चेतावनी दी डाली। बाद में करीब 45 चालक और परिचालकों ने मेडिकल लीव के लिए प्रार्थना पत्र दे दिया। इनमें परिचालक ज्यादा थे। सीजन के समय में चालक-परिचालक सामूहिक अवकाश पर चले गए। बस स्टेशन में वरिष्ठ स्टेशन इंचार्ज मधुसदन मिश्रा और एआरएम के बीच काफी देर तक बहस भी हुई।

महाराष्ट्र-दिल्ली के पांच पर्यटकों को गंगा में डूबने से बचाया, दो लापता, एसडीआरएफ का सर्च अभियान जारी

ऋषिकेश, एजेंसी। राम तपस्थली आश्रम में महाराष्ट्र के 10 पर्यटकों का दल घूमने पहुंचा था। इनमें से नागपुर निवासी शेखर बारस्कर (42) नहाने के लिए गंगा तट पर गए थे। इस दौरान वह तेज बहाव में बह गए। वहीं चीला शक्ति नहर में दो युवकों के बहने की सूचना मिली। दूसरी तरफ त्रिवेणीघाट के पास से दिल्ली के 5 पर्यटक भी गंगा में नाहने उतरे थे, लेकिन तेज बहाव में वह बह गए।

एसडीआरएफ ढालवाला की टीम ने अलग-अलग स्थानों से पांच पर्यटकों को गंगा में डूबने से बचा लिया। वहीं दो पर्यटक अभी तक लापता हैं। उनकी तलाश में एसडीआरएफ की टीम सर्च अभियान चला रही है। बचाए गए एक युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

एसडीआरएफ प्रभारी निरीक्षक कविंद्र सजवाण ने बताया कि ब्रह्मपुरी स्थित राम तपस्थली आश्रम में महाराष्ट्र से आए 10 पर्यटकों का दल घूमने पहुंचा था। इनमें से नागपुर निवासी शेखर बारस्कर (42) रविवार सुबह नहाने के लिए गंगा तट पर गए थे। इस दौरान वह तेज बहाव में बह गए। परिजनों और पर्यटकों की जानकारी पर एसडीआरएफ और जल पुलिस मौके पर पहुंची और सर्च अभियान चलाया, लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला।

उधर चीला शक्ति नहर में दो युवकों के बहने की सूचना मिली। टीम ने मौके पर पहुंचकर इनमें से एक युवक को बचा लिया,

लेकिन दूसरा अभी लापता है। युवक की तलाश के लिए एसडीआरएफ की डीप डाइविंग टीम ने चीला पावर हाउस तक सर्च अभियान चलाया हुआ है। उधर त्रिवेणीघाट के पास से दिल्ली के 5 पर्यटक भी गंगा में नाहने उतरे थे, लेकिन तेज बहाव में वह बह गए।

चोरों ने बंद फैक्टरी से उड़ाया हजारों का सामान

रूड़की, एजेंसी। चोरों ने एक बंद फैक्टरी को निशाना बनाते हुए कीमती सामान और दस्तावेज समेत अन्य सामान चोरी कर लिया। पुलिस ने तहरीर के आधार चोरी का केस दर्ज कर लिया है। साथ ही आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है। सिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र स्थित सोलानीपुरम निवासी नीरज अग्रवाल ने गंगनहर कोतवाली पुलिस को बताया कि उनकी बंदाखेड़ी में फैक्टरी है। फैक्टरी काफी समय से बंद पड़ी हुई है। उसने बताया कि शनिवार शाम वह फैक्टरी में किसी काम से गए थे। इस बीच फैक्टरी के गेट का ताला टूटा हुआ था।

समुदाय विशेष के युवक का शांतिभंग में चालान

उत्तरकाशी, एजेंसी। बीते शनिवार को उत्तरकाशी मुख्यालय में एक नेपाली मूल की विवाहिता के साथ पकड़े गए समुदाय विशेष के युवक का पुलिस ने शांतिभंग की धारा में चालान किया है। पुलिस युवक को कोर्ट में पेश कर जेल भेजने की तैयारी कर रही है। वहीं विवाहिता को उसके घर भेज दिया गया है। शनिवार को बस अड्डे पर एक समुदाय विशेष के युवक के साथ नेपाली मूल की विवाहिता को व्यापारियों ने पकड़ा था जिन्हें व्यापारियों ने पुलिस के हवाले कर दिया था। पुलिस ने बिजनौर निवासी कासिम मलिक और विवाहिता से पूछताछ की। बताया कि इनका संपर्क फोन पर हुआ था। युवक विवाहिता से मिलने कांडीसौड़ से उत्तरकाशी पहुंचा था। मामले की जानकारी मिलने पर देर रात नगर व्यापार मंडल के पदाधिकारी कोतवाली पहुंचे जिन्होंने युवक के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने युवक कासिम मलिक के खिलाफ शांतिभंग की धारा के तहत चालान कर कोर्ट में पेश कर रही है। नगर व्यापार मंडल के अध्यक्ष रमेश चौहान ने बताया कि उत्तरकाशी मुख्य बाजार में एक समुदाय विशेष के आभूषण व्यापारी ने अपनी दुकान का नाम काशी विश्वनाथ ज्वैलर्स रखा था जिस पर व्यापार मंडल ने आपत्ति जताई है। उन्होंने व्यापारी से दुकान का नाम बदलने को कहा। व्यापारी ने दुकान का नाम बदल दिया है।

नाबालिग को भगाने की कोशिश विवाद के बाद वहां से समुदाय विशेष के व्यापारियों द्वारा दुकान छोड़ने का सिलसिला लगातार जारी है।

सीएम नीतीश की दो टूक- जमीन संबंधी मामलों का शीघ्र निपटारा करें

हुजूर! रैयती भूमि पर दबंगों द्वारा कब्जा कर लिया है, खाली करने के लिए कहने पर जान से मारने की धमकी देता है

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री को जमीन संबंधी समस्याओं को शीघ्र निपटाने का निर्देश दिए है। सोमवार को देशरत्न मार्ग स्थित मुख्यमंत्री सचिवालय परिसर में आयोजित जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में भागलपुर जिले से आये एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि उनकी रैयती भूमि पर दबंगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है और भूमि को खाली करने के लिए कहने पर गोली मारने की धमकी दी जा रही है। इस मामले की संबंधित अधिकारी से शिकायत किए जाने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हो पा रही है। दरभंगा जिले से आए एक युवक ने मुख्यमंत्री से फरियाद करते हुए कहा कि उसकी निजी जमीन की घेराबंदी कराने के लिए वर्ष 2021 में अंचलाधिकारी और जिलाधिकारी को आवेदन दिया गया है, बावजूद इसके कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। वहीं दरभंगा जिले से ही आए एक युवक ने गुहार लगाते हुए कहा कि स्कूल का फंड पिछले 20 सालों से आ रहा है और लौट जा रहा है। इसकी वजह है कि स्कूल की भूमि को कुछ लोगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है। इस बात की सूचना संबंधित अधिकारी को दिये जाने के बाद भी कोई कारगर कदम नहीं उठाया जा रहा है, जिससे स्कूल का विकास नहीं हो पा रहा है। वहीं दरभंगा जिले से ही आए एक अन्य फरियादी ने बताया कि अतिक्रमण हटाए जाने के लिए अधिकारियों को सूचित किए जाने के बाद भी अतिक्रमण नहीं हटाए जाने की वजह से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को जांचकर उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। वहीं मुजफ्फरपुर जिले से ही आए एक अन्य फरियादी ने गुहार लगाते हुए कहा कि उनकी निजी भूमि नदी में चली गयी है और अब उस पर पुल का निर्माण हो रहा है लेकिन मुझे किसी प्रकार का मुआवजा नहीं दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। मुजफ्फरपुर जिले से आए एक फरियादी ने गुहार लगाते हुए कहा कि मेरे ससुर की कोरोना से मौत हो जाने के बाद भी सरकार द्वारा मिलने वाली अनुग्रह अनुदान की राशि उपलब्ध नहीं करायी गई है। मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य विभाग को उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। भोजपुर जिले से आए एक युवक ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि निजी रास्ते को बंद कर दिया गया है, जबकि आसपास हमलोगों की भूमि उपलब्ध है। इसकी शिकायत करने के बाद भी रास्ते को नहीं खुलवाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को जांचकर समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। मधेपुरा जिले से आए एक फरियादी ने गुहार लगाते हुए कहा कि पारिवारिक विवाद में मेरी निजी जमीन गलत तरीके से दूसरे के हाथों बेच दी गई है। इसकी जानकारी संबंधित अधिकारी को दिए जाने के बाद भी किसी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। वहीं मधेपुरा जिले से ही आए एक अन्य फरियादी ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि जमीन विवरणी में उचित सुधार की जाए ताकि मैं अपनी भूमि को सही तरीके से अधिग्रहित कर सकूं। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को जांचकर उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

इन विभागों से संबंधित मामलों पर हुई सुनवाई : जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने राज्य के विभिन्न जिलों से पहुंचे 107 लोगों की समस्याओं को सुना और संबंधित विभागों के अधिकारियों को समाधान के लिए समुचित कार्रवाई के निर्देश दिए। जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में सामान्य प्रशासन विभाग, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, समाज कल्याण विभाग, पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, वित्त विभाग, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, विज्ञान एवं प्रावैधिकी विभाग, सूचना प्रावैधिकी विभाग, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, श्रम संसाधन विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग, ग्रामीण विकास विभाग तथा पंचायती राज विभाग से संबंधित मामलों पर सुनवाई हुयी।

मोदी सरकार ने देश को कर्जे के मकड़जाल में डुबो रखा है : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने केन्द्र की मोदी सरकार पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने कहा है कि एक तरफ मोदी सरकार विकास पर बड़े-बड़े दावे करती है, दूसरी तरफ इन्होने देश को कर्जे के मकड़जाल में डुबो रखा है। इनकी गलत नीतियों और आर्थिक कुप्रबंधन ने देश की अर्थव्यवस्था का कैसा कबाड़ा निकाल दिया है, यह इनके राज में देश पर बढ़े कर्ज से पता चलता है। उन्होंने कहा कि 2014 में मोदी सरकार के आने पहले देश पर 409 अरब डॉलर का कर्ज था, लेकिन सरकार की कर्जा लेकर घी पीने की आदत के कारण महज 9 वर्षों में विदेशी कर्जा 620 अरब डॉलर के पास पहुंच गया है। यानी आज देश 210 लाख करोड़ के कर्ज के भार तले दबा हुआ है और भाजपा के नेता जश्न मना रहे हैं। इसका मतलब आज देश का हर नागरिक 32 हजार रु के कर्ज में डूबा हुआ है। इसका तात्पर्य है कि आज पैदा होने बच्चे तक के माथे पर भी इतना ही कर्ज होगा। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि देश के माथे पर डाला गया यह कर्ज रूपी बोझ जीडीपी के 60 प्रतिशत से भी ज्यादा है। यदि इसमें राज्यों के कर्ज को जोड़ लिया जाए तो कर्ज बढ़कर जीडीपी का 93 प्रतिशत और कुल 210 लाख करोड़ रुपए हो जाएगा। वहीं सरकार पर कर्ज का ब्याज अब हर साल 6.23 लाख करोड़ हो गया है। यानी कुल आय का 41 प्रतिशत ब्याज में ही देना होगा। वास्तव में सरकार को इस मसले पर श्वेत पत्र जारी करना चाहिए। जिससे देश हकीकत से वाकिफ हो सके।

राजद सुप्रीमो को जन्म दिन पर बधाई देने वालों को राजद ने जताया अभार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद के जन्मदिन पर बधाई और शुभकामना देने वालों को आभार जताया है। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने कहा कि कल पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद का 76 वां जन्मदिन था। इस अवसर पर न केवल बिहार बल्कि देश के दूसरे प्रदेशों और विदेशों से भी बड़ी संख्या में लोगों ने उनके बेहतर स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की कामना की है। आवास पर उनसे मिल कर, दूरभाष द्वारा और सोशल मीडिया के माध्यम से लाखों लाख की संख्या में उनको चाहने वालों ने उनके अवतरण दिवस पर अपनी शुभकामना संदेश भेजा है। राष्ट्रीय जनता दल परिवार उन सबों को तहे दिल से धन्यवाद देती है और उनके प्रति आभार व्यक्त करती है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि आज देश के सामने जो स्थिति पैदा हो गई है। ऐसे समय में लालू यादव की भूमिका काफी बढ़ गई है। सामाजिक न्याय और सद्भावना के साथ देश का विकास चाहने वाले लोगों को आज भी लालू जी के करिश्माई व्यक्तित्व पर भरोसा है। उनके उपस्थिति मात्र से हीं समाजिक न्याय और साम्प्रदायिक सौहार्द पसंद लोगों को उर्जा मिलती रहती है। आज भी विकास की धारा में पिछड़े हुए लोग आशा भरी निगाहों से लालू जी की ओर देखते हैं। यही वजह है कि कल उनके अवतरण दिवस पर न केवल राजद कार्यकताओं और समर्थकों में बल्कि अन्य लोगों में भी जबरदस्त उत्साह देखा गया। स्वस्फूर्त ढंग से गांव और कस्बों में भी बड़ी संख्या में लोगों ने इसे एक त्योहार के रूप में मनाया। दूसरे देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों द्वारा भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने भावनाओं को व्यक्त किया गया। मीडिया द्वारा भी काफी प्रमुखता दी गई। समाज के सभी वर्गों और समुदाय द्वारा मिल रहे सम्मान और स्नेह देखकर राजद सुप्रीमो भी काफी भावुक थे।

24 को पंद्रह से अधिक किसान संगठनों के नेताओं का होगा जुटान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति व संयुक्त किसान मोर्चा की बिहार इकाई की बैठक राज्य किसान सभा के प्रांतीय कार्यालय में हुई। बैठक की अध्यक्षता अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के नेता कॉमरेड राम वृक्ष राम ने किया । इस बैठक में प्रस्तावित ह्ल एमएसपी, खाद्य सुरक्षा व कर्ज मुक्ति राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन 24 जून को रविन्द्र भवन, वीरचन्द पटेल पथ में 11 बजे दिन से 4 बजे शाम तक के आयोजन और उसके तैयारी पर विचार विमर्श हुए और उसे अंतिम रूप दिया गया। इस सम्मेलन को संयुक्त किसान मोर्चा के राष्ट्रीय नेतृत्व के शीर्ष आठ नेताओं सहित बिहार के पंद्रह से अधिक किसान संगठनों के नेता भी संबोधित करेंगे। किसान सम्मेलन में एक हजार से अधिक किसान कार्यकताओं एवं प्रतिनिधियों के भाग लेने को सुनिश्चित किया गया। इसके अलावे किसान सम्मेलन में संयुक्त किसान मोर्चा से जुड़े बिहार के अन्य किसान संगठनों के नेता भी शामिल होंगे। किसान सम्मेलन में किसानों की मांगों से संबंधित एक मांग पत्र भी पेश किया जाएगा जिसे किसान सम्मेलन में पारित करवाया जाएगा। किसानों की मांगों को लेकर भावी आन्दोलन की एक रूपरेखा भी सम्मेलन में पेश की जाएगी। यह सम्मेलन बिहार में किसानो के आंदोलन को अग्रगति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी । बैठक में अखिल भारतीय किसान महासभा के उमेश सिंह एवं राजेन्द्र पटेल, बिहार राज्य किसान सभा के विनोद कुमार, सोना लाल प्रसाद एवं रविन्द्र सिंह, क्रांतिकारी किसान यूनियन के बिन्देश्वरी सिंह एवं वीवी सिंह, अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के रामवृक्ष राम, अखिल भारतीय किसान खेत मजदूर संगठन के इन्द्रदेव राय, अखिल भारतीय खेत मजदूर किसान सभा के नन्द किशोर सिंह, एनएपीएम के उदयन राय , ऑल इंडिया किसान फेडरेशन के जमीरूद्दीन, जय किसान आन्दोलन के अनूप कुमार सिन्हा, जल्ला किसान संघर्ष समिति के शंभूनाथ मेहता आदि शामिल रहें ।

दरभंगा में बनने वाले एम्स को राजनीतिक दांव पेंच में उलझाना चाहती है बीजेपी : अजय

पटना। जदयू के प्रदेश प्रवक्ता और विधायक अजय चौधरी ने दरभंगा में बनने वाले एम्स को लेकर बीजेपी पर राजनीति करने का आरोप लगाया है और कहा कि मुद्दों को भटकाकर बीजेपी इस प्रतिष्ठित अस्पताल के निर्माण कार्य को रुकवाना चाहती है। प्रदेश प्रवक्ता अजय चौधरी ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की कोशिशों के बाद दरभंगा में नए एम्स के निर्माण पर मुहर लगी थी। इसको लेकर नीतीश कुमार की सरकार ने दरभंगा के शोभन बाईपास के पास नए एम्स के प्रस्तावित निर्माण को लेकर मुफ्त में189.17 एकड़ जमीन आवंटित किए जाने का फैसला लिया था। साथ ही एम्स के प्रस्तावित निर्माण के लिए उक्त जमीन का विकास कराने का भी फैसला लिया था। उन्होंने कहा कि एम्स के लिए प्रस्तावित जमीन दरभंगा-आमस फोरलेन से महज पांच किलोमीटर की दूरी पर है जो मरीजों और डॉक्टरों के आवागमन को लेकर बिल्कुल सुगम जगह है। पार्टी प्रवक्ता अजय चौधरी ने कहा कि उक्त फैसले के मुताबिक नीतीश कुमार की सरकार ने उक्त जमीन के समतलीकरण के लिए 309 करोड़ रुपए की स्वीकृति देने की घोषणा की। अब इस जमीन के विकास के लिए टेंडर भी जारी कर दिया गया है लेकिन बीजेपी नेता इसको रोकने को लेकर गंदी राजनीति पर उतर आए हैं। उन्होंने कहा कि जब राज्य सरकार ने उक्त जमीन का अधिग्रहण किया था तो निरीक्षण के लिए पहुंची केंद्रीय टीम ने भी उक्त जमीन को लेकर संतुष्टि जाहिर की थी। प्रदेश प्रवक्ता ने बीजेपी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि बीजेपी के एक पूर्व मंत्री और स्थानीय सांसद दरभंगा एम्स के निर्माण में अड़ंगा लगाने चाहते हैं जिससे राज्य सरकार इस प्रोजेक्ट का क्रेडिट ना ले सके। उन्होंने कहा कि बीजेपी के स्थानीय नेताओं की कोशिशों का ही नतीजा है कि अब केंद्र सरकार एम्स के निर्माण में आनाकानी कर रही है और अधिगृहित जमीन पर सवाल उठा रही है।

15 को हर प्रखण्ड में गुंजेगी महागठबंधन की हुंकार : कांग्रेस

पटना। पटना महानगर कांग्रेस जिलाध्यक्ष शशिरंजन एवं महानगर मुख्य प्रवक्ता निशांत करपटने ने संयुक्त बयान जारी कर बताया कि आगामी 15 जून को प्रस्तावित महागठबंधन का प्रखण्ड धरना ऐतिहासिक और जनता की आंखें खोलने वाला होगा। इस संदर्भ में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के निदेशानुसार, जिलाध्यक्ष शशिरंजन ने पटना महानगर कांग्रेस से जुड़े हरेक प्रखण्ड अध्यक्ष ,नेता एवं कार्यकताओं से गहन विचार विमर्श कर इस धरना जुटान हेतु रणनीति बनाया है। शशिरंजन ने बताया कि यह महागठबंधन का धरना बीजेपी की जनविरोधी विचारधाराओं के खिलाफ गरीब, मजलूम पिछड़े दलित महादलित और बेरोजगारों के सडकों पर उतरने का ऐलान होगा। शशिरंजन ने आगे कहा कि पटना महानगर इस महाधरना को राजनैतिक जंग की तरह से देख रहा। महानगर कांग्रेस ने इसकी ऐतिहासिक सफलता के लिए जबरदस्त तैयारी किया है 15 जून के इस जुटान को देखकर बीजेपी के होश फाख़्ता हो जाएंगे।

शिक्षकों को राज्य कर्मियों का दर्जा दिलाने के लिए भाजपा करेगी राजभवन मार्च : सम्राट

- भाजपा की सरकार बनने पर शिक्षा में यूपी, गुजरात मॉडल होगा लागू : विजय सिन्हा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार में लागू नई शिक्षक नियुक्ति के विरोध में उतरे शिक्षक संगठनों के लोगों ने सोमवार को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी और विधानमंडल में नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा से मुलाकात की और अपनी समस्याओं से अवगत कराया। इस बीच, भाजपा के नेताओं ने शिक्षक संगठनों के नेताओं को आश्वासन दिया कि भाजपा उनके साथ है। शिक्षक संगठनों के नेताओं के साथ हुई बैठक के बाद प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने कहा कि सरकार हड़बड़ी में शिक्षक नियुक्ति नियमावली लाई है, जिसमे कई गड़बड़ियां हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को राज्य कर्मियों का दर्जा दिलाने के लिए जुलाई महीने में राजभवन मार्च करेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षकों के साथ बिहार की सरकार ने छलावा किया है बिहार के शिक्षक अपने को ठगा महसूस कर रहे हैं। श्री चौधरी ने कहा कि जब बिहार में एनडीए सरकार थी तब ही शिक्षकों की नियुक्ति का निर्णय लिया जा चुका था, लेकिन सरकार बदलते ही शिक्षकों को बरगलाने के लिए नई शिक्षक नियुक्ति नियमावली सरकार ले आई। इधर, विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि सरकार नियमावली को सुधारे। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को सामाजिक सम्मान और बच्चो की प्रतिभा को बढ़ाने के लिए प्रतिभावान शिक्षकों की नियुक्ति की जाए। उन्होंने कहा कि नियोजित शिक्षकों को सम्मान करते हुए नियमावली बनाई जाए जिससे शिक्षकों का भी मनोबल बढ़े और शैक्षणिक वातावरण तैयार हो। उन्होंने कहा कि बिहार में अगर भाजपा की सरकार बनाती है तो यूपी और गुजरात का शिक्षा मॉडल लागू होगा। शिक्षक नेता विधान पार्षद नवल किशोर यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी शिक्षकों के मांगों को लेकर सड़क से सदन तक लड़ाई लड़ेगी। विधान परिषद सदस्य जीवन कुमार ने कहा कि शिक्षकों के जीवन से खिलवाड़ नहीं होने देंगे। इस बैठक में मुख्य रूप से भाजपा के प्रदेश महामंत्री व विधायक डॉक्टर संजीव चौरसिया शिक्षक नेता गणेश प्रसाद सिंह सहित सभी शिक्षक संगठन के प्रतिनिधि मौजूद थे।

मंत्री डॉ रामानंद व शाहनवाज सुनवाई कार्यक्रम मे आज होंगे शामिल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के पहल पर राजद द्वारा चल रहे सुनवाई कार्यक्रम में मंगलवार को खान एवं भूतत्व मंत्री डॉ रामानंद यादव तथा आपदा प्रबंधन मंत्री मो शाहनवाज आलम राजद कार्यालय में कार्यकताओं से मिलेंगे और सुनवाई करेगें। इस संबंध में जानकारी देते हुए प्रदेश राजद प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि दोनो मंत्री से मिलने वालों को मंगलवार को राजद कार्यालय में पूर्वाह्न 10 बजे से दोपहर 12 बजे के बीच आवेदक स्वयं उपस्थित होकर रजिस्ट्रेशन कराकर ही सुनवाई कार्यक्रम मे शामिल होंगे। जिनका रजिस्ट्रेशन होगा क्रमानुसार अपराह्न 1 बजे से अपराह्न 3 बजे तक मंत्री द्वय बारी-बारी से कार्यकताओं से मिलकर उनकी समस्याओं को सुनेगें और आवश्यक कार्रवाई करेगें । ज्ञात हो कि राजद कार्यालय में सुनवाई कार्यक्रम निरंतर चल रहा है, और इसमें लोगों की समस्याओं की सुनवाई और कार्रवाई होती रही है। एजाज ने आगे बताया कि कार्यकताओं को मंत्रीगण से मिलकर अपने -अपने क्षेत्र से जुड़े जनसमस्याओं अथवा शिकायतों से उन्हें अवगत कराने के लिए आवश्यक संलग्नों के साथ लिखित में आवेदन देना होता है, उसी के अनुसार सुनवाई के बाद कार्रवाई की जाती है।

पिछड़ों के साथ राज्य सरकार पुरी तरह कर रही अन्याय : भीम

पटना। पूर्व मंत्री भाजपा नेता डॉ भीम सिंह ने भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि बिहार सरकार सरकारी नौकरियों में ओबीसी का नॉन क्रीमी लेयर प्रमाण पत्र बनवाने में आर्थिक आय में कृषि को भी जोड़ती है जो पूरी तरह से नियम संगत नहीं है इसको लेकर राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने मुख्य सचिव बिहार सरकार को सख्त निर्देश दिया है कि वेतन और कृषि आय को नहीं जोड़ा जा सकता है। जिस पर बिहार सरकार के मुख्य सचिव ने मौखिक सहमति प्रदान किया। डॉ सिंह ने कहा राष्ट्रीय पिछड़ा आयोग ने बिहार के मुख्य सचिव सहित तमाम अधिकारियों के साथ बैठक भी किया।इस विषय में और नॉन क्रीमी लेयर ओबीसी प्रमाण पत्र बनाते समय तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का वेतन और कृषि आय किसी भी हाल में किसी भी हाल में नहीं जोड़ने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि पिछड़े के नाम पर सरकार में आने के बावजूद भी पिछड़ों के साथ सरकार पुरी तरह अन्याय कर रही है चाहे लालू प्रसाद की सरकार हो या वर्तमान नीतीश कुमार की सरकार हो। पिछड़े और अति पिछड़ों के मामले में सरकार पूरी तरह संवेदनहीन है। संवाददाता सम्मेलन में डॉ भीम सिंह के साथ प्रदेश प्रवक्ता प्रेम रंजन पटेल एवं प्रदेश मीडिया प्रभारी अशोक भट्ट उपस्थित थे

मधु लिलोठिया के निधन पर प्रदेश कांग्रेस नेताओं ने जताया शोक

पटना। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष एवं बिहार कांग्रेस के पूर्व प्रभारी सचिव राजेश लिलोठिया की धर्मपत्नी मधु लिलोठिया के सड़क दुर्घटना में हुई असामयिक निधन पर बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। अपने शोक संदेश में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉक्टर अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि मधु लिलोठिया एक धर्म परायण महिला थी एवं सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती थी। उनके निधन पर हम सभी मर्माहत है। भगवान उनकी मृत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस दुख की घड़ी में धर्य प्रदान करने की शक्ति दे। कांग्रेस विधायक दल के नेता डॉ शकील अहमद खान ,विधान परिषद में कांग्रेस दल के नेता डॉक्टर मदन मोहन झा, मीडिया प्रभारी राजेश राठौड़, ब्रजेश पांडेय, निर्मल वर्मा, सुबोध कुमार, आनंद माधव, अरविंद चौधरी एवं अशोक गगन ने भी मधु लिलोठिया के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है।

विपक्ष के पास प्रधानमंत्री पद का नहीं है कोई उम्मीदवार : नित्यानंद

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने कहा है कि केंद्र सरकार ने सत्ता में रहते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेतृत्व कर देश का मान बढ़ाया है। साथ ही साथ विकास की गंगा को देश की जनता के घर-घर तक पहुंचाया है। जिसे जनता भलीभांति समझती है। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस, आरजेडी समेत जेडीयू का खाता नहीं खुलेगा। बिहार की जनता यह तय कर चुकि है। भाजपा को नीचा दिखाते-दिखाते खुद ही जनता इनको पताल में भेज देगी। महागठबंधन के नेता गलतफहमी में जी रहे है। बिहार में भाजपा के बढ़ते जानाधार से महागठबंधन को हड़बड़ाहट होने लगी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने पीएम पद के लिए विपक्ष के पास ऐसा कोई चेहरा नहीं है। जिसकी घोषणा की जा सकती है। विपक्षियों को प्रधानमंत्री की लोकप्रियता का अंदाजा है। इन्हें यह पता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने कोई टीक नहीं सकता। इस बार 2024 में महागठबंधन का खाता नहीं खुलेगा। वहीं केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने पटना के कपूर्री सभागार में जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह के सीएम नीतीश कुमार के पीएम कैंडिडेट नहीं होने वाले बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए पूछा कि क्या लल्लन बाबू, नीतीश कुमार के दिल से पूछ कर यह ऐलान कर रहे हैं कि नीतीश बाबू प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नहीं हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि भाजपा मुक्त भारत के नाम पर आरजेडी के साथ मिलकर नीतीश कुमार को धोखा देने का साजिश रच रहे हैं?।

विश्व मोहन चौधरी की पुण्यतिथि पर मंत्री श्रवण कुमार ने दी श्रद्धांजलि

पटना। ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने सोमवार को 12 जून को बिहार विधान परिषद एवं बिहार विधानसभा के पूर्व सदस्य स्व विश्व मोहन चौधरी की 15वीं पुण्यतिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वर्गीय विश्व मोहन चौधरी के याद में उनके पुण्यतिथि के अवसर पर उच्च विद्यालय शवानी में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मंत्री ने वहां उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि स्व चौधरी बाढ़ से तथा हरनौत से बिहार विधानसभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे अपने क्षेत्र के काफी लोकप्रिय एवं जनप्रिय नेता थे। उन्होंने स्वर्गीय चौधरी के पुत्र अनवेश चौधरी को उनके पद चिन्हों पर चलने एवं उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लेने का सुझाव दिया। मंत्री ने आगे कहा कि स्व विश्व मोहन चौधरी एक महान विद्वान एवं समाजवादी नेता थे। इस श्रद्धांजलि सभा में उनके छोटे भाई अरविंद कुमार चौधरी, मनोज कुमार, पूर्व जिला परिषद सदस्य, महेश सिंह प्रदेश सचिव राजद जिला पार्षद बेलछी संतोष कुमार एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

तुफान के कारण पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस का परिचालन रद्द

पटना। बिपरजॉय चक्रवर्ती तुफान के कारण पश्चिम रेलवे पर यात्रा समाप्त करने/खुलने वाली कुछ ट्रेनों का आंशिक समापन/प्रारंभ तथा रद्द किया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार है।12 जून को गुवाहाटी से खुल कर ओखा जाने वाली गाड़ी सं. 15636 गुवाहाटी-ओखा एक्सप्रेस का आंशिक समापन अहमदाबाद में किया जायेगा। 16 जून को ओखा से खुलने वाली गाड़ी सं. 15635 ओखा-गुवाहाटी एक्सप्रेस का आंशिक प्रारंभ अहमदाबाद से किया जायेगा । 11 जून एवं 12 जून को मुजफ्फरपुर से खुल कर पोरबंदर जाने वाली गाड़ी सं. 19270 मुजफ्फरपुर-पोरबंदर एक्सप्रेस का आंशिक समापन विरमगाम जं. पर किया जायेगा। 13 जून को मुजफ्फरपुर से खुल कर पोरबंदर जाने वाली गाड़ी सं. 19270 मुजफ्फरपुर-पोरबंदर एक्सप्रेस का आंशिक समापन राजकोट में किया जाना है। 15 जून को पोरबंदर से खुल कर मुजफ्फरपुर जाने वाली गाड़ी सं. 19269 पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस का परिचालन रद्द रहेगा ।

विद्यालय सह छात्रावास योजना से सैंकड़ों छात्र-छात्राएं हो रहे लाभान्वित

एससी-एसटी व पिछड़ा-अति पिछड़ा समुदाय के विकास को लेकर राज्य सरकार प्रयासरत

- वर्ष 2022-23 में योजना हेतु 85.40 लाख रु. बजट का किया गया प्रावधान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, व पिछड़ा अतिपिछड़ा समुदाय के विकास पर नीतीश सरकार का विशेष जोर है। सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही है। इन योजनाओं का असर अब धरातल पर दिखने लगा है। इन समुदाय से जुड़े छात्र-छात्राओं के लिए भी सरकार द्वारा कई पहलकदमियां की गई है। इस कड़ी में विद्यालय-सह छात्रावास योजना का क्रियान्वयन पटना और गया में किया गया है। इस योजना से पटना की 150 महादलित लड़कियां और गया के 100 महादलित विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। इस विद्यालय को राष्ट्रीय मान्यता मिल रही है। वर्ष 2022-23 में योजना हेतु 85.40 लाख रु. का बजट प्रावधान किया गया है। अनुसूचित जाति समुदायों में बेतिया, बाराहाट, रूपावेल, दूलमपुर (जमुई), मारवा और शीतलपुर (कटिहार), मलिनिया, कुमारकोठी (पूर्णिया), सारोदाग और कैमूर (भभुआ) और रायहल (रोहतास) में कुल 10 आयुर्वेदिक अस्पतालों के लिए स्वीकृति दी गई है। वर्ष 2022-23 में अस्पतालों के रखरखाव के लिए 187.53 लाख रु. आवंटित किए गए हैं। वर्ष 2021-22 में पिछड़ा वर्ग और अति पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थयों के लिए मुख्यमंत्री व्यावसायिक पाठ्यक्रम मार्गदर्शन एवं उत्प्रेरण योजना नामक नई योजना का आरंभ किया गया है। इस योजना के तहत पटना स्थित चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान और ललित नारायण मिश्र आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन संस्थान में प्रबंधकीय परीक्षाओं (कैट, मैट और अन्य रोजगार उन्मुखी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं) के लिए मुफ्त मार्गदर्शन शुरू किया गया है। विधि पाठ्यक्रमों (क्लैट और न्यायिक सेवाओं) के लिए ऐसा मार्गदर्शन चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय उपलब्ध करा रहा है। जिन विद्यार्थियों की पारिवारिक आय अधिकतम 3.00 लाख है वे इस योजना के लिए पात्र हैं। इस योजना के लिए 2022-23 में कुल 70.24 लाख रु. स्वीकृत किए गए हैं। जननायक कपूर्री ठाकुर छात्रावास योजना : पिछड़े और अति पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों के लिए इस योजना की शुरूआत 2008-09 में की गई थी। अभी इसके अंतर्गत 32 जिलों में छात्रावास बनाए गए हैं और सभी 32 चालू हो गए हैं। इन सभी छात्रावासों में जननायक पुस्तकालय और डिजिटल अध्ययन केंद्र विकसित किए जा रहे हैं। राज्य में अति पिछड़ा वर्ग कल्याण छात्रावास और अन्य पिछड़ा वर्ग बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भी चल रहे हैं। वर्ष 2021-22 में जननायक कपूर्री ठाकुर छात्रावास और अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण छात्रावासों में पुस्तकालय तथा प्रेरणा के लिए 32.00 लाख रु. आवंटित किए गए हैं। साथ ही, 12 अन्य पिछड़ा वर्ग बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों में डिजिटल अध्ययन केंद्र विकसित किए जा चुके हैं जो 11 जिलों में काम कर रहे हैं। अभी 32 जननायक कपूर्री ठाकुर छात्रावासों में पुस्तकालय काम कर रहे हैं और डिजिटल कक्षाओं के लिए स्वीकृति दी गई है जिसके लिए आवश्यक सामग्रियां खरीद ली गई हैं। वर्ष 2021-22 में अन्य पिछड़ा वर्ग बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ऑनलाइन कक्षाओं के लिए 20.40 लाख रु स्वीकृत किए गए हैं।

निदेशालय और क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापनाः पिछड़ा वर्ग एवं अति पिछड़ा वर्ग के लिए विभिन्न कल्याण योजनाओं के कुशल क्रियान्वयन के लिए राज्य मुख्यालय में निदेशालय और प्रमंडल, जिला तथा अनुमंडल स्तरों पर क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना के लिए 2021-22 स्वीकृति प्रदान की गई है। निदेशालय के लिए कुल 26 और क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए 420 पद सृजित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री पिछड़ी जाति एवं अति पिछड़ी जाति कौशल विकास योजना : इस योजना का मकसद वंचित लोगों का सामाजिक और आर्थिक कौशल बढ़ाकर उनलोगों को मुख्

अंतर्राष्ट्रीय बाल श्रम निषेध दिवस पर निकला विशेष जागरूकता रथ

● एसडीएम एवं एसडीपीओ ने दिखाई हरी झंडी

रक्सौल, प्रात : किरण संवाददाता

12 जून अंतर्राष्ट्रीय बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी रविकांत सिन्हा एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी धीरेंद्र कुमार द्वारा बाल श्रम उन्मूलन हेतु विशेष जागरुकता रथ को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया गया। इस संयुक्त जागरुकता कार्यक्रम मे प्रयास जुवेनाइल एड सेंटर पूर्वी चंपारण की परियोजना एक्सेस टू जस्टिस, मानव तस्करी रोधी इकाई क्षेत्रक मुख्यालय बेतिया सशस्त्र सीमा बल 47 वीं वाहिनी पंटोका, आशीष परियोजना डंकन अस्पताल, प्लान इंडिया एवं चाइल्ड लाइन सब सेंटर रक्सौल के तहत अंतरराष्ट्रीय बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर संयुक्त जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अनुमंडल पदाधिकारी रवि कांत सिन्हा द्वारा बताया गया कि बाल श्रम उन्मूलन हेतु जागरुकता रथ को रवाना किया गया है इस से हमारे समाज के लोगो को यह जानकारी देनी है कि 6 वर्ष से 14 वर्ष के नाबालिक बच्चो को मजदूरी करना कानून जुर्म है। बच्चे हमारे देश के भविष्य है उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। वही अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी धीरेंद्र कुमार द्वारा बताया गया कि बाल श्रम उन्मूलन हेतु विशेष जागरुकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिससे लोगो में जागरुकता पैदा हो और लोग नाबालिक बच्चे से बाल श्रम करना बंद करे ताकि हमारे समाज से इस समस्या को मिटाया जा सके। एसएसबी, एएचटीयू इंस्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा द्वारा नारा लगाते हुए लोगो को जागरूक किया गया हम सब ने ये ठाना हैं बाल श्रम मिटाना है का नारा देते हुए कार्यक्रम को बढ़ाया गया और भिन्न-भिन्न जगहो पर लोगो को बाल श्रम ना करने की जानकारी देते हुए जागरुकता रथ को आगे बढ़ाया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रयास जुवेनाइल एड सेंटर पूर्वी चम्पारण की जिला परियोजना समन्वयक आरती कुमारी द्वारा किया गया।

जिसमे अनुमंडल पदाधिकारी तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी सहभागियों संबोधित करते हुए सभी से आग्रह किया गया कि अपने स्तर से सभी जगहो पर बाल श्रम ना कराने की जानकारी दें, जिससे हमारे समाज के सभी बच्चे अपने अधिकार से वंचित ना हो। जागरुकता रथ को आगे बढ़ाते हुए रक्सौल रेलवे स्टेशन परिसर मे यात्रियों के बीच स्टेशन अधीक्षक अनिल कुमार, रेलवे सुरक्षा बल इंस्पेक्टर ऋतु राज कश्यप, राजकीय रेल पुलिस के उपस्थिति में उनके द्वारा बताया गया कि बाल श्रम बहुत ही चिंता जनक विषय है, जिस पर हम सभी को एक जुट हो कर ही इस पर रोक लगाया जा सकता है। वही रेलवे स्टेशन परिसर में श्रम परिवर्तन पदाधिकारी प्रतियुष कुमार द्वारा सभी यात्रियों और अलग-अलग जगहो पर लोगो को बाल श्रम उन्मूलन हेतु जानकारी दी गयी तथा श्रम विभाग द्वारा बच्चो को मिलने वाले लाभ को बताया गया। मौके पर आशीष परियोजना से फ्रांचीस मनी, शालनी जुम्नके, मुकेश कुमार, प्रयास संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता विजय कुमार शर्मा, राज गुप्ता, एसएसबी, एएचटीयू से सब इंस्पेस्टर नेहा सिंह, अनिल शर्मा, अरविंद द्विवेदी, मिक्की कुमारी, संगीता, प्लान इंडिया से रामजन्म, राजेश कुमार, चाइल्ड लाइन सब सेंटर रक्सौल से कन्हैया कुमार, उमेश कुमार श्रीवास्तव, अभिषेक कुमार पटेल, किरण वर्मा, रेलवे सुरक्षा बल रक्सौल से संतोष कुमार मिश्रा, कश्यप, सब इंस्पेक्टर संतोष कुमार मिश्रा के साथ रंजन किशोर मिश्रा, सुन्नी कुमार मंडल आदि मौजूद थे।

आशा दिवस को लेकर स्वास्थ्य कर्मियों के साथ हुई बैठक

सीएचसी प्रभारी ने दिए कई निर्देश

मधुबनी, प्रात : किरण संवाददाता

सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खजौली में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर ज्योतींद्र नारायण की अध्यक्षता में आशा कार्यकताओं का आशा दिवस कार्यक्रम आयोजन किया गया . जिसमें सभी संबंधित आशा कार्यकर्ता और आशा फैसिलिटेटर को मोबाइल अकेडमी और किलकारी कार्यक्रम का प्रशिक्षण दिया गया. वही आशा फैसिलिटेटर आशा कार्यकर्ता को सरकार द्वारा प्रायोजित सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों को जनमानस तक घर घर जाकर अपने पोषक क्षेत्र में पहुंचाने के लिए निर्देश दिया गया. आशा कार्यकर्ता को स्वास्थ्य उप केन्द्र सह हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर पदस्थापित प्रतिनियुक्ति सीएचओ एएनएम से समन्वय स्थापित कर प्रत्येक कार्य दिवस पर संबंधित गांव पोषक क्षेत्र में हर तरह की स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने हेतु प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी निर्देश दिया गया. उन्होंने कहा कि कार्य में लापरवाही बरतने पर और दिए गए निर्देश का अनुपालन नहीं करने पर उन संबंधित आशा कार्यकर्ता और आशा फैसिलिटेटर पर सख्त अनुशासनिक कार्रवाई की जाएगी . साथ ही अनुपालन नही करने वाले कर्मी को चिन्हित कर जिला वरीय पदाधिकारी को लिखित रूप में अनुशासनिक कार्यवाही हेतु अनुशंसा कर भेजी जाएगी. उन्होंने कहा कि संबंधित आशा कार्यकर्ता और आशा फैसिलिटेटर को प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा सरकार द्वारा मुहैया कराए गए नए एंड्रॉयड स्मार्टफोन मोबाइल द्वारा सभी स्वास्थ्य कार्यक्रमों का संचालन करने और प्रतिवेदन समर्पित करने हेतु निर्देशित किया गया. बैठक में विशेष रूप से नियमित टीकाकरण,गर्भवती महिलाओं का प्रथम,द्वितीय,तृतीय,चतुर्थ एएनसी जांच महिला बंध्याकरण ऑपरेशन/पुरुष नसबंदी ऑपरेशन,जायदा से जायदा संख्या में अपने अपने पोषक क्षेत्र से सीएचसी मुख्यालय में सुरक्षित प्रसव कराने हेतु और सभी आशा फैसिलिटेटर,आशा कार्यकर्ता को सर्वे,ड्यलिस्ट, अद्यतन कर प्रतीवेदीत करने हेतु निर्देशित किया गया. इस बैठक में प्रखंड स्वास्थ्य प्रबंधक अर्चना भट्ट,प्रखंड सामुदायिक उत्प्रेरक शंभू कुमार राम,प्रखंड मूल्यांकन सह अनुश्रवण राजन प्रसाद रजत,डाटा सेंटर इंचार्ज बबलू कुमार,नोडल स्वास्थ्य कर्मी अरविन्द कुमार मिश्रा,सहयोगी पार्टनर बीएमसी यूनिसेफ काली चरण झा, आशा फैसिलिटेटर मिलन देवी, शीला देवी के अलावा अन्य सभी आशा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

स्कूली बच्चों को प्यार और अपनत्व के साथ उनका बचपन सवांरने के लिए मोहम्मद नुरूल होदा हुए सम्मानित

आदापुर, प्रात : किरण संवाददाता

प्यार और अपनत्व के साथ बच्चों में घुल-मिल कर उन्हें खेल- खेल, गतिविधियों एवं अन्य नये तरीके अपना कर उनका बचपन सवांरने के बेहतर प्रयास के लिए आदापुर प्रखंड स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय बसतपुर के वरीय शिक्षक मोहम्मद नुरूल होदा को रविवार को बौद्ध गया में पंचशील अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड उन्हें गोपाल किरण समाजसेवी संस्था द्वारा बाल श्रम निषेध दिवस की पूर्व संध्या पर बौद्ध गया के महा प्रज्ञा गेस्ट हाउस के सभागार में ह्ल टिकाऊ विकास लक्ष्यों के लिए समुदाय के माध्यम से बालश्रम की रोकथाम ह्ल विषय पर आयोजित एक दिवसीय सेमिनार सह सम्मान समारोह में दिया गया। इस समारोह में बच्चों के भविष्य निर्माण में बेहतर योगदान देने वाले विभिन्न राज्यों के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आए 51 लोगों कों सम्मानित किया गया। मोहम्मद होदा को यह सम्मान संस्था के अध्यक्ष श्री प्रकाश सिंह निमराजे, कोल्हान यूनिवर्सिटी की प्राध्यापिका डा. मीरा पुष्पांजलि, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की प्राध्यापिका डा. देवी लता रावत और बदांयू उत्तर प्रदेश की वरिष्ठ साहित्यकार डा. ममता नौगरैया के हाथों दिया गया। बताते चलें कि मोहम्मद होदा अपने विद्यालय के बच्चों के साथ प्यार, अपनत्व और अपने मित्रवत व्यवहार से बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि जागृत कर उन्हें संस्कारवान बनाने के लिए काफी मेहनत कर रहे हैं। विद्यालय के बच्चों को नहलाते, उनका बाल सवांरते, और उनके कमीज में बटन टांकते भी देखें जाते हैं। मोहम्मद होदा ने बताया कि मैंने यहां कुछ भी असाधारण नहीं किया है, प्रत्येक शिक्षक को ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए।

पिकअप और इनोवा गाड़ी से 99 पेटी शराब जब्त चालक व तस्कर फरार

मधुबनी, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार में शराबबंदी के बाद भी शराब तस्करी का खेल रुकने का नाम नही ले रहा है शराब माफिया तस्करी के ऐसे ऐसे हथकंडे अपना रहे हैं कि पुलिस भी आश्चर्यचकित हो रही है हालांकि शराब तस्करी पर नकेल कसने के लिए पुलिसिया कारवाई भी जारी है। इसमें पुलिस को सफलता भी हाथ लग रही है। ताजा मामला घोघरडीहा थाने का है। यहां पुलिस ने मद्य निषेध विभाग के गुप्त सूचना के आधार पर कारवाई करते हुए एक पिकअप एवं इनोवा गाड़ी से भारी मात्रा में शराब बरामद किया है। शराब से भरी दोनों गाड़ी नरहिया के रास्ते बसुआरी की तरफ जा रही थी। घोघरडीहा थाना अध्यक्ष सर्वेश कुमार झा केमुताबिक घोघरडीहा थाना की पुलिस को गुप्त सूचना मिली की शराब की खेफ नरहिया के रास्ते अन्यत्र ले जा रही है। पुलिस ने जाल बिछाते हुए परसा दक्षणि पंचायत के गिदहा गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय के पास पिकअप एवं इनोवा गाड़ी पर पड़ी। पुलिस की गाड़ी को देखते ही तस्कर एवं गाड़ी के चालक भागने में सफल रहे। पुलिस ने पिकअप व इनोवा गाड़ी को खोलकर जांच की तो पुलिस भी आश्चर्य चकित रह गई। जब खोलकर जांच की गई तो पिकअप एवं इनोवा में 99 पेटी 2376 बोतल यानी 891 लीटर अंग्रेजी शराब मिली। जिसे पुलिस जब्त कर थाने पर लाया।अब पुलिस इस बात का पता करने में जुटी है कि यह शराब गिदहा में किसके यहां डिलीवर होनी थी।

भाजपा का वरिष्ठ कार्यकर्ता सम्मान समारोह आयोजित

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत कल्याणपुर उत्तर पंचायत स्थित राधा-कृष्ण विवाह भवन के सभागार में भारतीय जनता पार्टी द्वारा 2024-25 लोकसभा व विधानसभा की तैयारी को लेकर वरिष्ठ कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन किया। समारोह की अध्यक्षता बीजेपी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष सतीश कुमार झा एवं संचालन जिला मंत्री प्रेम कुमार दास कर रहे थे। वहीं समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार सरकार के पूर्व मंत्री राम सूरत राय एवं प्रदेश महामंत्री देवेश ठाकुर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में समस्तीपुर विधान परिषद सदस्य सह बीजेपी उजियारपुर लोकसभा प्रभारी तरूण कुमार चौधरी, भाजपा के जिला अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा, प्रखंड प्रमुख सह भाजपा जिला उपाध्यक्ष रूपांजली कुमारी, उजियारपुर लोकसभा विस्तारक अमरेन्द्र पाण्डेय, विभूतिपुर विधानसभा संयोजक अरविंद कुशवाहा आदि उपस्थित हुए। कार्यक्रम की शुभारंभ आगत अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात आगत अतिथियों एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता का सन्मानित भाजपा के जिला प्रवक्ता पंकज कुमार लाल के द्वारा चादर, पाग, माला आदि भेंट कर किया गया। वहीं समारोह को संबोधित करते हुए प्रदेश महामंत्री देवेश ठाकुर ने बताया कि भाजपा देश की सबसे बड़ी पार्टी है। किसी भी संगठन को मजबूत बनाने व चलाने के लिए चार तथ्य कुशल नेतृत्व, विचारधारा, संगठन व कर्मठ कार्यकर्ता का होना आवश्यक है। यही गुण भारतीय जनता पार्टी है। जिसका परिणाम है जो ये पार्टी देश की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में है। वहीं बिहार सरकार के पूर्व मंत्री राम सूरत राय ने अपने संबोधन में नरेंद्र मोदी के 9 साल बेमिसाल के रूप में बताते हुए विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। साथ ही समारोह के माध्यम से 2024-25 के लोकसभा व विधानसभा चुनाव की तैयारी के लिए कार्यकताओं सें अभी से ही हर घर पहुंचकर लोगों को जागरूक करने की बात कही। समारोह कों ओबीसी मोर्चा के प्रदेश महामंत्री कैप्टन कमलेश सहनी, जिला महामंत्री राजीव चौधरी, प्रदेश नेता सत्वंत कुमार चौधरी, प्रदेश युवा नेता गुंजन मिश्रा, जिला मंत्री सह जिला परिषद सदस्य रीना राय, मंडल अध्यक्ष विरेन्द्र झा, चन्देश्वर पासवान, चन्द्रमणि सिंह, मनोज कुशवाहा आदि ने संबोधित किया। मौके पर किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष सुजीत भास्कर पटेल, जिला उपाध्यक्ष पूजा सिंह, कृष्ण गोपाल शर्मा सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन भाजपा के जिला प्रवक्ता पंकज कुमार लाल ने किया।

महागठबंधनः एकजुट होकर लड़ाई लड़ केंद्र सरकार को उखाड़ फेंकेंगे

बेगूसराय। महागठबंधन वीरपुर प्रखंड की बैठक ई किसान भवन में राजद नेता अर्जुन यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई। संचालन सीपीआई नेता रामप्रवेश ने की। बैठक को संबोधित करते हुए सीपीआई नेता प्रहलाद सिंह ने कहा कि देश के अंदर अघोषित आपातकाल की स्थिति है। केंद्र में तानाशाह सरकार के कारण बेलगाम महंगाई की मार से जनता त्रस्त है। केंद्र की सरकार सांप्रदायिक उन्माद फैलाकर मस्त है। हिंदुत्व का भावना उभार कर गरीब जनता को लूटने का प्रयास जारी किए हुए है। इस परिस्थिति में तमाम महागठबंधन के घटक दल एकजुट होकर नीचे स्तर से लेकर ऊपरी स्तर तक लड़ाई लड़ेंगे और केंद्र सरकार को उखाड़ फेकेंगे। सभा को कांग्रेस के नेता रामसागर सिंह, धर्मराज साहनी, जदयू के नेता शंभू पासवान, राम सुंदर कुशवाहा, राजद नेता बाल्मीकि यादव, माले नेता रंजीत चौधरी, सीपीआई के नेता चंद्र प्रकाश नारायण सिंह, राम आशीष महतो, राम ज्ञान महतो, राजद नेत्री अनीता साहनी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर राजद के नेता सुखराम महतो, अभिनव गुप्ता, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष संजीव सिंह, डॉ गीता बाबू, नौला के पूर्व सरपंच सहित कई नेता उपस्थित थे।

कृषि वानिकी के तहत प्रगतिशील किसान की बैठक संपन्न

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कृषि वानिकी के तहत प्रगतिशील किसानों कि एक बैठक किसान रामनाथ सिंह कि नर्सरी शिवनाथपुर में हुई। बैठक में सरकार द्वारा चलाई जा रही जलवायु परिवर्तन से पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बताया गया। जैसे हिटवेव, कम वर्षा होना मनुष्य जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। इससे बचने के लिए सरकार तथा वैज्ञानिकों के निर्देश और किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराने हेतु योजना चला कर पेड़ लगाने के लिए बैठक आयोजित किया गया। जिसमें उपस्थित वनरक्षी राजीव रंजन सिंह ने किसानो को पेड़ लगाने से होने वाले फायदा और सरकार द्वारा दी जा रही सरकारी प्रोत्साहन राशि के बारे में विस्तार से बताया गया। जिसमें प्रति पेड़ 10 रुपया सरकार कोष में जमा करके पेड़ लगवा सकते हैं। लेकिन कम से कम 100 पेड़ लगाना अनिवार्य होगा। तीन साल बाद जितना पेड़ सुरक्षित पाया जाएगा उस पेड़ का 70 रुपया प्रति पेड़ के हिसाब से आपको प्रोत्साहन राशि दिया जाएगा। पेड़ भी आपका ही होगा। बैठक में किसान रामजी महतो, मनोज कुमार, बिपुल प्रसाद सिंह, संजय कुमार सिंह, कृष्ण देव प्रसाद सिंह, सुधीर कुमार मिश्र, रामभवन मिश्र, तरुण कुमार, राम उचित पासवान आदि उपस्थित हुए।

जहांगीरपुर पंचायत भवन परिसर में जदयू की बैठक आयोजित

शिवाजीनगर, प्रात : किरण संवाददाता

खानपुर प्रखंड क्षेत्र के जहांगीरपुर पंचायत भवन परिसर में आज जदयू की एक बैठक प्रखंड अध्यक्ष रामनारायण सिंह की अध्यक्षता में तथा गंगा प्रसाद झा के संचालन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित प्रखंड स्तरीय नेताओं व पंचायत अध्यक्षों को संबोधित करते हुए कहा कि जिला उपाध्यक्ष सह प्रखंड प्रभारी शमद खां ने कहा कि सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं को सुलभता से आवाम तक पहुंचाना हमारी पहली जिम्मेदारी है। उन्होंने जाति आधारित गणना की चर्चा करते हुए कहा कि देश में विहार पहला राज्य है जहां आजाद भारत में पहली बार जाति आधारित गणना करवाने की हिम्मत जुटा पाए। ताकि सभी जातियों के संख्या जान सकें और उनके समुचित विकास के लिए उचित योजना बनाई जा सके। लेकिन केंद्र की हिटलरशाही सरकार इसे रोकना चाहती है। इसको लेकर महागठबंधन द्वारा 15 जून को सभी प्रखंड मुख्यालय पर राज्यव्यापी धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। जिसमें जदयू के कार्यकर्ता अधिक से अधिक संख्या में भाग ले। ताकि केंद्र सरकार को एक मैसेज जा सके। मौके पर जिला उपाध्यक्ष बालेश्वर राय, रामविलास राम, जिला पार्षद स्वर्णिमा सिंह, जय राम सहनी, सकील अहमद अंसारी, उपेंद्र महतो, दिनेश प्रसाद महतो, पवन कुमार महतो, शिवनाथ सिंह, रामबाबू सिंह, ब्रह्मदेव राय, प्रदीप कुमार सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

2030 किसानों ने नहीं कराया ई-केवाईसी, अंतिम तिथि बढ़ाई गई

शिवाजीनगर, प्रात : किरण संवाददाता

शिवाजीनगर प्रखंड क्षेत्र में पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों को खेती करने के लिए प्रतिवर्ष 6 हजार रुपए की राशि सहायता के रूप में दी जाती है। यह राशि किसानों को प्रत्येक 4 माह पर वर्ष में तीन किस्त में दी जाती है ताकि सभी प्रमुख फसलों के समय किसान इस राशि का उपयोग खेती के समय कर सके। प्रखंड कृषि पदाधिकारी ने बताया कि प्रखंड में कुल 20 हजार 300 किसानों को किसका लाभ दिया जा रहा है। इस योजना में सही किसानों को लाभ दिलाने के लिए सभी का ऑनलाइन वेरिफिकेशन को लेकर ईकेवाईसी कराने का निर्देश दिया गया है। योजना का लाभ लेने वाले प्रत्येक किसान को ईकेवाईसी कराना आवश्यक है ऐसा नहीं करने पर पहले इसके लिए 28 मई तक की तिथि निर्धारित करते हुए ऐसे किसानों का नाम योजना से हटाने का निर्देश दिया गया था जबकि अभी किसान सलाहकार की राज्यव्यापी हड़ताल के कारण इसकी अंतिम तिथि बढ़ाई गई है। बताया गया कि प्रखंड में करीब 2030 किसान मौजूद हैं जिसका ईकेवाईसी अभी तक नहीं हुआ है। ईकेवाईसी नहीं करने की स्थिति में किसान योजना से वंचित हो सकते हैं। प्रखंड कृषि पदाधिकारी उमेश बैठा ने बताया कि 20300 किसानों को योजना का लाभ मिल रहा है विभागीय निर्देश पर अब ऐसा सभी किसानों को ईकेवाईसी कराना जरूरी है। इसके लिए पहले 28 मई तक का समय दिया गया था। अभी 12 सलाहकार 7 कृषि समन्वयक की हड़ताल के कारण इसका समय बढ़ा है। हड़ताल समाप्त होने के बाद भी भाग बिना ईकेवाईसी वाले किसानों का नाम हटा सकती है। प्रखंड कृषि पदाधिकारी ने बताया कि सलाहकार कृषि समन्वयक को हड़ताल जाने से धान के बीज वितरण करने में हो रही परेशानी जब तक वह हड़ताल से लौट कर नहीं आते हैं तब तक इस बार धान का बीज का वितरण नहीं हो पाएगा। क्योंकि सभी सलाहकार व कृषि समन्वयक के पास ही किसान का आईडी और पासवर्ड है। प्रखंड क्षेत्र में 56 कुंटल धान का बीज वितरण करने का लक्ष्य रखा गया है।

मंथनः पार्टी की मजबूती पर ही चुनाव जीतना संभव

● मटिहानी प्रखंड में लोजपा रामविलास पार्टी की समीक्षा बैठक

बेगूसराय, प्रात : किरण संवाददाता

सोमवार को लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास बेगूसराय जिला के मटिहानी प्रखंड में पार्टी संगठन की समीक्षा बैठक बालमुकुंद सिंह के आवास पर हुई। इस बैठक की अध्यक्षता मटिहानी प्रखंड अध्यक्ष गोपाल सिंह ने की। मुख्य अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष जिला प्रभारी अभय सिंह ने कहा कि कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ होती है। जिला स्तर से लेकर पंचायत स्तर तक के पदाधिकारियों के समक्ष उन्होंने आह्वान किया कि यदि 2024 और 25 के चुनाव में लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास को पूर्ण सफलता दिलाना है और चिराग पासवान को 2025 में मुख्यमंत्री बनाना है, तो संगठन को काफी मजबूत करना होगा।यह संकल्प लेना होगा संगठन को मजबूत कर स्वर्गीय रामविलास पासवान के सपनों को साकार कर सकते हैं। कार्यकताओं से अपेक्षा की संगठन को मजबूत करने के लिए पंचायत से लेकर बूथ स्तर तक जाना होगा। पंचायती राज के प्रदेश अध्यक्ष इंदिरा देवी ने कहा कि हमारी पार्टी के संस्थापक रामविलास पासवान ने अपने जीवन काल में बिहार वासियों के लिए और देशवासियों को जो किया है, उसको गांव-गांव कस्बा, टोलों तक लोगों में एक एक व्यक्ति को कीर्ति बताना अनिवार्य है। प्रदेश महासचिव उप जिला प्रभारी राजकुमार पासवान ने कहा कि हमारे कार्यकताओं और संगठनों के पदाधिकारी के द्वारा आज एक सब्जी फरोश हो या ठेला चालक हो बिहार मजदूर हो जिन लोगों के हाथ में मोबाइल है वह हमारे पार्टी के संस्थापक से रामविलास पासवान का ही देन है। प्रदेश महासचिव मनोज पोद्दार ने कहा कि मटिहानी प्रखंड के सभी पंचायतों में प्रखंड अध्यक्ष को जाकर संगठन में व्यक्ति को जोड़ना ही लक्ष्य होना चाहिए।जिला अध्यक्ष प्रेम कुमार पासवान ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान का विजन बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट डॉक्युमेंट हम जनमानस को अवगत कराने का काम करें, तब जाकर लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के भी कार्यकर्ता बनेंगे, बूथ जीतेंगे। तब चुनाव जीतेंगे। इस बैठक में शिवकुमार शर्मा, रुपेश रंजन, संजय चौधरी, कुमार संदीप, कुमारी माला, अजय कुमार, राकेश सिंह, विदेशी पासवान, उमेश पासवान, भोला पासवान, कुंदन कुमार, राजेश कुमार, दीपक पासवान, रंजन कुमार, टुनटुन सिंह, रंजीत कुमार, सर्जन कुमार, निरज कुमार, पवन कुमार, विकास रजक, अभिनंदन आजाद, चंदन कुमार, मणि कुमार, शंकर सिंह सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

बोनस वितरण समारोह का हुआ आयोजन

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत विशनपुर दुग्ध उत्पादक सहयोग समिति लिमिटेड द्वारा बोनस वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता समिति अध्यक्ष राजीव कुमार मिश्र एवं संचालन आरएसपी देव कर रहे थे। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के अध्यक्ष उमेश राय एवं अति विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रबंध निदेशक रविंद्र कुमार झा, विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व अध्यक्ष श्याम शंकर प्रसाद ठाकुर, संजय सिंह, सूर्य नारायण सिंह, विजय कुमार आजाद, संस्थापक अध्यक्ष अशोक राय उपस्थित हुए। समारोह का शुभारंभ अतिथियों ने संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलित कर किया। वहीं समिति की ओर से आगत अतिथियों को मिथिला परंपरा के अनुसार चादर, पाग, माला आदि भेंट कर सम्मानित किया गया। वहीं समारोह के माध्यम से 165 किसानों के बीच 2012-13 से लेकर 2020-21 तक का बोनस वितरण किया गया। जिसकी कुल राशि आठ लाख 86 हजार 994 रुपए बताया गया। अतिथियों के अलावे समिति के सचिव शैलेन्द्र कुमार राय, निदेशक मंडल के सदस्य वैद्यनाथ राय, दया शंकर राय, राम विनोद पंडित, राम प्यारी देवी, पथ प्रभारी कालेश्वर राय, त्रिभुवन कुमार, गौरव कुमार, दूर देहात के सचिव प्रभू नारायण झा आदि ने संबोधित किया। मौके पर दर्जनों समिति के अध्यक्ष व सचिव तथा सैकड़ों की संख्या में किसान मौजूद थे

जदयू का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न

विभूतिपुर, समस्तीपुर। जनता दल यूनाइटेड के प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण शिविर चोरा टभका पंचायत भवन के प्रांगण में जदयू प्रखंड अध्यक्ष अशोक पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। शिविर का उद्घाटन जदयू के जिला अध्यक्ष अश्वमेघ देवी ने किया। शिविर को संबोधित करते हुए अश्वमेघ देवी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किए गए चुनावी घोषणा, बेरोजगारों को नौकरी, किसानों की आय दोगुनी करने, 2022 तक प्रत्येक गरीबों को प्रधानमंत्री आवास योजना देने, आदि वादा पूरा नहीं करने के साथ-साथ लोकतंत्र की हत्या करने वाली मोदी सरकार को उखाड़ फेंकना है। प्रशिक्षण में प्रखंड प्रभारी धर्म देव कुशवाहा, सतनारायण राय, रामाशीष प्रसाद सिंह, नरेश प्रभाकर, रणधीर कुमार राय, विरेंद्र कुमार, तरुण सिंह, राम बहादुर सिंह, राज कुमार महतो, रामसेवक साह, अनिल कुमार सिंह, रंजय कुमार, शंभू सिंह, गुड्डू सिंह, कपिल देव राय आदि उपस्थित थे।

निश्य मित्र बनाने में राज्य में पहले स्थान पर आया पूर्वी चम्पारण

मोतिहारी, प्रात : किरण संवाददाता

निश्य मित्र बनाने में राज्यस्तर पर पूर्वी चम्पारण पहले स्थान पर आया है। पुरे बिहार में यहाँ सबसे ज्यादा 164 निश्य मित्रों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। वहीं 686 फूड बास्केट किट वितरण में भी दूसरे स्थान पर पूर्वी चम्पारण जिला आया है। ये बातें सिविल सर्जन डॉ. अंजनी कुमार ने कही है। उन्होंने बताया की प्रधानमंत्री ने 2025 तक टीबी से मुक्त करने हेतु देश भर में अभियान चलाया है, जिसके तहत सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधि एवं समाजसेवीयों को निक्ष्य मित्र बनाकर टीबी मरीजों को पोषण सम्बंधित सहयोग ली जा रही है। सीएस ने बताया की जिले के लिए बेहद खुशी की बात है कि प्रधानमंत्री निक्ष्य मित्र अभियान के तहत जिले के विभिन्न सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधि एवं समाजसेवीयों ने रजिस्ट्रेशन कराया है और उनसभी निक्ष्य मित्रों का लगातार सहयोग बना हुआ है, जिससे टीबी मरीजों को फायदा हो रहा है। इस कार्य में लगे उनसभी स्वास्थ्यकर्मी बधाई के पात्र हैं। जिले के यक्षमा पदाधिकारी डॉ रंजीत राय एवं प्रधानमंत्री टीबी मुक्त अभियान के तहत पीएमएवाई के जिला कॉर्डिनेटर ललित कुमार ने कहा कि भारत सरकार द्वारा निक्षय पोषण योजना अंतर्गत 500 की राशि प्रत्येक माह डीबीटी के माध्यम से टीबी मरीजों के बैंक खाते में दी जाती है, परन्तु प्रधानमंत्री के आवाहन पर निक्षय मित्र बनकर कमजोर तबके के टीबी मरीजों के बीच पोषण से युक्त फूड बास्केट वितरण करना भी आवश्यक है ताकि इलाज के साथ टीबी मरीजों को पोषण का लाभ मिल सकें, और वे दवाओं के साथ संतुलित आहार का सेवन कर टीबी से मुक्त हो।उन्होंने बताया कि टीबी मरीजों को न्यूट्रीशनल सपोर्ट करना भी हम लोगों का भी दायित्व है। पीएमएवाई के जिला कॉर्डिनेटर ललित कुमार ने बताया कि रेड क्रॉस सोसाइटी, आईएमए, रोटरी जैसे संस्थान जिले में बढ़- चढ़ कर टीबी मरीजों के सहयोग में आगे आ रही है, इस तरह लोगों का सहयोग मिले तो जिले का स्थान बिहार हीं नहीं देश में पहले स्थान पर आ सकता है। उन्होंने बताया कि यक्ष्मा मरीजों को बलगम जांच, सीबी नेट जांच, एक्सरे आदि की निशुल्क जाँच व इलाज की व्यवस्था अस्पतालों में उपलब्ध है।

बाल श्रमिकों की विमुक्ति के क्षेत्र में अच्छे प्रदर्शन करने वाले मधुबनी के श्रम अधीक्षक पुरस्कृत

मधुबनी। विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर पटना के दशरथ मांझी श्रम एवं अध्ययन संस्थान आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में माननीय मंत्री श्रम संसाधन विभाग सुरेंद्र राम , बिहार राज्य बाल श्रमिक आयोग के अध्यक्ष डॉ चक्रपाणि हिमांशु तथा प्रधान सचिव श्रम संसाधन विभाग डॉक्टर बी राजेंद्र के द्वारा बाल श्रम के वि

संक्षिप्त खबरें

शौच के लिए निकली युवती के साथ छेड़खानी, प्राथमिकी दर्ज

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के पाखोपाली गांव में अपनी छोटी बहन के साथ शौच के लिए गई एक युवती के साथ उसी गांव के कुछ लोगों ने छेड़खानी की। विरोध करने पर उसे मारपीट कर जख्मी कर दिया गया। पाखोपाली गांव की एक युवती अपनी छोटी बहन के साथ मंच और पोखर के तरफ शौच के लिए निकली थी। उसी गांव के रोशन अंसारी ने युवती को जबरन उठा लिया और खेत की तरफ लेकर जाने लगा. छोटी बहन के द्वारा जब शोर मचाया गया, तो उसी गांव की हफिजन खातून, नजमा खातून, गुड़िया खातून, तैमूर खातून ने मारपीट कर जख्मी कर दिया।

सांखे खास में मारपीट में दो महिलाएं जख्मी

उचकागांव। उचकागांव थाना क्षेत्र के सांखे खास गांव में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुए मारपीट में दो महिलाएं जख्मी हो गई। मामले में एक पक्ष की घायल महिला शारदा देवी वहीं दूसरे पक्ष की घायल महिला सरस्वती देवी का इलाज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उचकागांव में कराया गया। मामले में एक पक्ष की घायल महिला शारदा देवी के आवेदन पर गांव के सुनील यादव, आकाश कुमार और ज्योतिष कुमार वही दूसरे पक्ष की घायल महिला सरस्वती देवी के आवेदन पर अनिल यादव और शारदा देवी के विरुद्ध थाने में प्राथमिकी कराई गई है। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

आगलगी में लाखो की संपति जलकर राख

थावे। थावे थाना के चितुटोला गांव में आग लगने से कपड़ा और अन्य सामग्री जलकर राख हो गई। बताया जाता है कि चितुटोला गांव के गुलमोहमद मियां के घर रविवार की शाम को लकड़ी के चूल्हे से खाना बनाया जा रहा था। उसी दौरान चूल्हे की चिंगारी से आग लग गई। आग लगने से अफरा तफरी का माहौल बन गया। आग लगने से कपडा, अनाज और खाना बनाने की सामान जलकर राख हो गया। आग की सूचना पर अग्निशमन दल की गाड़ी घटना स्थल पर पहुचकर ग्रामीणों के सहयोग किसी तरह आग पर काबू पाया। तब तक काफी समान जलकर राख हो गया था। वही कर्मी बिपिन कुमार, सत्येंद्र सिंह व उपेन्द्र यादव सहित काफी संख्या में लोग आग बुझाने में लगे हुए थे।

ट्रेन से 44 पीस बियर बरामद

थावे। पूर्वोत्तर रेलवे के थावे जंक्शन पर जीआरपी द्वारा बोगी तलाशी के दौरान लावारिस हालत में एक बैग, एक झोला बरामद किया गया। बैग व झोला की तालाशी लेने पर 44 बोतल बियर बरामद की गयी। इसकी जानकारी देते हुए जीआरपी प्रभारी जयविष्णु राम ने बताया कि गाड़ी संख्या 05166 सवारी गाड़ी प्लेटफॉर्म नंबर एक पर आकर रुकी तो बोगी तलासी के दौरान शौचालय के छत से लावारिस हालत में बैग व झोला पाया गया। तलाशी लेने पर 44 पीस केन बियर बरामद कर अज्ञात के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच पडताल की जा रही है। बोगी तलासी के दौरान सुरेन्द्र कुमार, विनोद सहनी सहित अन्य जीआरपी जवान मौजूद थे।

कैंप में पांच महिलाओं का किया गया बंध्याकरण

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सोमवार को परिवार नियोजन कार्यक्रम के तहत शिविर का आयोजन किया गया। अस्पताल प्रभारी डॉ अनिल कुमार सिंह ने बताया कि कैंप में बरौली पीएचसी प्रभारी सह सर्जन डॉ विजय कुमार पासवान ने पांच महिलाओं का बंध्याकरण किया।

एक घंटे लेट चली गोमतीनगर एक्सप्रेस

गोपालगंज। थावे-मशरक रेलखंड पर सोमवार को गोमतीनगर से छपरा कचहरी तक जाने वाली गोमतीनगर एक्सप्रेस ट्रेन अपने निर्धारित समय से एक घंटे विलंब से चली। उक्त ट्रेन लेट चलने की वजह से थावे जंक्शन, गोपालगंज, दिघवा दुबौली, मसरक सहित अन्य स्टेशनों पर यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

वाहन चेकिंग अभियान में तीन बाइक चालकों पर जुर्माना

गोपालगंज प्रातः किरण संवाददाता जिले के बैकुंठपुर थाने की पुलिस ने पटना-महम्मदपुर स्टेट हाईवे 90 पर सोमवार को सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया। अभियान के तहत ट्रिपल लोडिंग के आरोप में तीन बाइक चालकों पर जुमार्ना किया गया। थानाध्यक्ष धनंजय कुमार राय ने बताया कि अभियान के तहत हेलमेट सहित अन्य कागजातों की भी जांच की गई।

कोविड जांच के लिए 55 लोगों का लिया गया सैंपल

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सोमवार को कोरोना संक्रमण जांच के लिए 55 लोगों का सैंपल लिया गया। हेल्थ मैनेजर कमरान अहसन ने बताया कि एंटीजन किट से जांच के लिए लैब टेक्नीशियन अनिल कुमार सिंह व एलटी नागेंद्र राय ने सैंपल एकत्रित किया। जांच के दौरान सभी रिपोर्ट नेगेटिव पाए गए।

बहन की शादी में खाना बांटने गए युवक की कमरे में बंदकर हत्या

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के बैकुंठपुर थाने के बंगरा गांव में चचेरी बहन की शादी में खाना बांटने पड़ोस में गए युवक को कमरे में बंद कर हत्या कर दिया गया। मृत युवक दीनानाथ साह का 24 वर्षीय बेटा संजय साह था। घटना की सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। घटना के संबंध में बताया गया कि संजय साह की चचेरी बहन पूजा कुमारी की शादी रविवार की रात हो रही थी। जयमाला के दौरान युवक पड़ोस में एक व्यक्ति के यहां खाना लेकर गया था। देर रात तक जब संजय घर वापस नहीं लौटा तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की। इस बीच पता चला कि जिस व्यक्ति के यहां युवक खाना लेकर गया था। वहां उसे कमरे में बंद कर दिया गया है। अंदर से कमरा बंद करने के बाद घर के अन्य सदस्य गायब थे। कमरे को तोड़कर जब देखा गया तो संजय साह का फंदे से शव लटक रहा था। इसकी सूचना तत्काल पुलिस को दी गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस गांव पहुंचकर मामले की छानबीन शुरू कर दी। पुलिस ने सोमवार की दोपहर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। फिलहाल इस मामले में पुलिस को अब तक लिखित आवेदन नहीं मिल पाया है। पुलिस घटना को लेकर कई बिंदुओं पर तहकीकात कर रही है। पुलिस बल के अधिकारी घटनास्थल पर कैंप कर रहे है।

संजय की हत्या के बाद शादी का कोरम किया गया पूरा: बैकुंठपुर थाने के बंगरा गांव में 24 वर्षीय संजय साह की रविवार की रात हुई हत्या की भनक मिलने के बाद शादी की खुशियां गम में बदल गई। किशुनदेव साह की बेटी पूजा की शादी को लेकर मंडप में रिश्तेदारी से लेकर अन्य लोग एकत्रित हुए थे। तभी हत्या की जानकारी परिजनों को मिली। इससे पहले द्वारपूजा, जयमाला, बर्नेत का रश्म पूरा हो चुका था। सिंदूरदान की रश्म आनन-फानन में पूरा किया गया। उसके बाद रात में ही बारात विदा कर दी गई।

एक साल पहले संजय की हुई थी शादी: बंगरा गांव के संजय साह की शादी एक वर्ष पहले किमी देवी के साथ हुई थी। डेढ़ महीने पहले किमी देवी ने बच्ची को जन्म दिया था। डेढ़ माह की दूधमूही आरजू कुमारी पिता की हत्या से पूरी तरह अनजान थी। पति की मौत के बाद किमी देवी का रो- रोकर बुरा हाल था। स्थानीय लोग उसे सांत्वना दे रहे थे। माता राधिका देवी, बड़ी बहन अनीता देवी, दादी लालमति कुंवर, चाचा किशनदेव साह सहित अन्य परिजन संजय की मौत से आहत थे। अचानक हुई घटना ने परिजनों के अरमानों पर पानी फेर दिया। संजय अपने परिवार का होनहार युवक था।

मोबाइल का कॉल डिटेल्स खंगाल रही पुलिस: बैकुंठपुर थाने के बंगरा गांव में युवक संजय साह की हुई हत्या के बाद पुलिस मोबाइल का कॉल डिटेल खंगाल रही है। पुलिस का मानना है कि कॉल डिटेल्स के आधार पर हत्याकांड का राज खुल सकता है। वैसे युवक की हत्या कमरे में बंद कर किन परिस्थितियों में की गई। इस बिंदु पर भी पुलिस जांच कर रही है। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपित गांव छोड़कर फरार हो गए हैं। तनाव की आशंका को लेकर पुलिस अपनी उपस्थिति में शव की अंत्येष्टि कराई। इस संबध में थानाध्यक्ष धनंजय कुमार राय ने बताया कि संजय साह हत्याकांड की जांच कई बिंदुओं पर की जा रही है। मोबाइल का कॉल डिटेल खंगाला जा रहा है। कॉल डिटेल्स से हत्या का राज खुल सकता है। परिजनों की ओर से आवेदन मिलने के बाद तत्काल हत्या का मामला दर्ज किया जाएगा।

फुलवरिया मे आयोजित मोबाइल लोक अदालत में वाद विवादों का होगा निपटारा

प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया। फुलवरिया प्रखंड मुख्यालय परिसर में 16 जून को गोपालगंज न्याय मंडल अंतर्गत मोबाइल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इस अदालत में सभी प्रकार के सुलहनीय पूर्व वाद एवं लंबित वाद, आपसी बटवारा, जमीनी विवाद, विद्युत वाद परिवहन सहित सभी प्रकार के वादों का निपटारा आपसी सुलह और समझौते के आधार पर ऑन द स्पॉट किया जाएगा। साथ ही लोगों को कानूनी जानकारी विधिक जागरूकता कार्यक्रम में दी जाएगी।

उक्त लोक अदालत में उच्च न्यायालय के जज से लेकर जिला जज और सभी विभागों के जिला स्तरीय उच्च अधिकारी भी मौजूद रहेंगे। जो अपने विभाग से संबंधित वादों को सुनेंगे और उसका निष्पादन कराएंगे। इसकी तैयारी को लेकर सोमवार को बीडीओ अजीत कुमार रौशन ने अपने कार्यालय कक्ष में जनप्रतिनिधियों के साथ एक आवश्यक बैठक करते हुए विभिन्न दिशा निर्देश दिए। उन्होंने लोगों के बीच जागरूकता फैलाने हेतु जनप्रतिनिधियों से अपील की ताकि ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोग इस लोक अदालत में पहुंचकर अपने वाद विवादों का निपटारा करा सकें। उन्होंने बताया कि इस कार्य में विकास मित्र से लेकर और भी कर्मियों को लगाया गया है ताकि इस अदालत का लोग फायदा उठा सकें और अपने समस्याओं का समाधान करा सकें। इस दौरान प्रमुख प्रतिनिधि मोहम्मद सरफराज, बीडीसी विजय कुमार गुप्ता, सद्दाम हुसैन कार्यपालक सहायक आदि मौजूद रहे।

अनियंत्रित पिकअप ने मासूम बच्ची को कुचला, मौत

थावे प्रात : किरण संवाददाता

थावे थाना क्षेत्र के भुसाव हरदिया मुख्य सड़क पर सोमवार की सुबह मवेशी से भरी एक अनियंत्रित पिकअप ने दो साल की मासूम बच्ची को कुचल दिया। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गयी। मासूम बच्ची की मौत के बाद उग्र लोगो ने पुलिस वाहन पर हमला कर क्षतिग्रस्त कर दिया। काफी प्रयास के बाद उग्र लोग शांत हुए जिसके बाद पुलिस ने बच्ची के शव को अपने कब्जे में लेकर अंत्यपरीक्षण के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। बताया जाता है कि फुलवरिया थाने के पकौली बदो गांव की राजाराम यादव की पत्नी अपने दो वर्षीय बच्चे के साथ अपने मायके भुसाव आयी हुयी थी। सोमवार की सुबह सडक किनारे खेलने के दौरान पशुओं से लदे अनियंत्रित पिकअप वाहन ने बच्चे को कुचल दिया। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गयी। सूचना पाकर पंहुची पुलिस को काफी आक्रोश का सामना करना पडा। इस दौरान उग्र लोगो ने पुलिस वाहन को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। हंगामे की सूचना पाकर थानाध्यक्ष शशिरंजन कुमार के नेतृत्व में अपर थानाध्यक्ष कृष्ण कुमार, एसआई सुनील कुमार, महावीर उरांव, पंकज कुमार, श्री भगवान यादव सहित भारी संख्या में पुलिस टीम पंहुच गयी। और काफी मशक्कत के बाद उग्र लोगो को शांत कराया गया। वही पुलिस ने आठ मवेशी से लदे पिकअप वाहन जब्त कर चालक और खलासी को पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। थानाध्यक्ष शशि रंजन कुमार ने बताया की पुलिस ने आठ मवेशियों से लदे पिकअप वाहन को जप्त कर लिया गया है। वही चालक सीवान जिले के तरवारा थाना के चैकी हसन गांव के तैयब हुसैन और खलासी बड़हरिया थाने के मीरसुरहिया गांव के गुलफान साह को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पूछताछ के दौरान दोनो ने पशु तस्करी की बात स्वीकार की है। जिसके आधार पर पुलिस आगे की कारवाई करने में जुट गयी है।

फुलवरिया में मध्य रात्रि में लगी आग एक घर जले लाखों की संपत्ति राख

प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया। फुलवरिया थाना क्षेत्र के विशुनपूरा गांव में रविवार की मध्यरात्रि अचानक आग लगने से लाखों रुपए की संपत्ति जलकर राख हो गई। इस अगलगी में एक घर जलकर राख हो गया। अगलगी से गांव में अफरा-तफरी का माहौल व्याप्त हो गया। अगलगी की सूचना मिलते ही गांव के ग्रामीण आग पर काबू पाने के लिए पानी की बौछारें करने लगे, लेकिन तेज पछुआ हवा के कारण आग की लपटें इतनी तेज थी कि ग्रामीण नजदीक से पानी फेंकने में असफल रहे। अगलगी की सूचना ग्रामीणों ने स्थानीय पुलिस को दी। सूचना मिलते ही त्वरित कार्रवाई करते हुए फुलवरिया पुलिस फायर ब्रिगेड की गाड़ी के साथ पहुंची। जहां आग पर काबू पाने के लिए प्रयास करने लगे। परंतु आग पर काबू पाने में असमर्थ रहे। इतने में स्थानीय ग्रामीणों की मदद से किसी तरह आग पर काबू पाया गया। तब तक घर जलकर राख हो गया। आगलगी की सूचना पर प्रमुख मुन्नी खातून के प्रतिनिधि मोहम्मद सरफराज पहुंचकर अग्नि पीड़ित को आर्थिक मदद दिलाने की बात कही। अग्नि पीडित कन्हैया साह ने बताया कि अगलगी में गेहूं, धान, साइकिल, टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, पलंग मवेशियों का चारा, बर्तन, कपड़ा सहित अन्य सारी सामग्रियां जलकर राख हो गई। उधर अगलगी के कारण गांव में अफरा-तफरी का माहौल व्याप्त गया। अग्नि पीड़ित ने बताया कि आग कैसे लगी। इसकी जानकारी नहीं है। फिलहाल अग्नि पीड़ित परिवार खुले आसमान में जीने को विवश है।

पत्नी की हत्या पर पति ने अज्ञात अपराधियो के विरुद्ध दर्ज करायी प्राथमिकी

थावे प्रात : किरण संवाददाता

थावे थाना के गवदरी चंवर में महिला की चाकू से गोदकर हत्या किए जाने के मामले में पति ने थाने में अज्ञात अपराधियो के विरुद्ध प्राथमिकी कराई है। पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर दो संदिग्धों को हिरासत में लेकर पुछताछ कर रही है। बता दें कि रविवार की सुबह शौच करने गई महिला बबीता देवी को अपराधियों ने खेत में चाकू से हमला कर हत्या कर दिया था। जिसको लेकर पति शिवलाल साह ने प्राथमिकी में आरोप लगाया है, कि पत्नी बबीता देवी रविवार की सुबह पांच बजे शौच करने गई थी। अपने बेटी से पूछा तो बोली की ममी खेत के तरफ शौच करने गई है। तब तक गांव में हल्ला हुआ की एक महिला की हत्या कर शव को चवर में फेंका गया है। जहां पर अपने परिवार के साथ गया तो देखा की मेरी पत्नी के पुरे शरीर पर मिट्टी लगा हुआ था। शिवलाल साह ने बताया की हमारी किसी भी व्यक्ति से दुश्मनी नहीं है। थानाध्यक्ष शशि रंजन कुमार ने बताया की शिवलाल साह के आवेदन पर अज्ञात अपराधियो के विरुद्ध हत्या की प्राथमिकी कर जांच पड़ताल की जा रही है।

वहीं पुलिस इस हत्याकांड में दो संदिग्धों को हिरासत में लेकर पुछताछ कर रही है। थानाध्यक्ष ने बताया की मोबाइल लोकेशन खंगाला जा रहा है। बहुत जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा।

विदेश भेजने के नाम पर युवक से ठगी, प्राथमिकी दर्ज

भोरे। हथुआ थाना क्षेत्र के बरी रायभान गांव के एक व्यक्ति के साथ भोरे के नवका टोला गांव के पति पत्नी ने विदेश भेजने के नाम पर 60000 की ठगी कर ली। पैसा वापस मांगने जाने पर पीड़ितऔर उसकी पत्नी की पिटाई भी की गई। मामले को लेकर स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। बताया जाता है कि हथुआ थाना क्षेत्र के बरी रायभान एवं गांव के धनंजय कुमार सिंह का ससुराल भोरे थाना क्षेत्र के नौका टोला में है। नौका टोला के हरीश चंद्र प्रसाद और उनकी पत्नी निर्मला देवी के ससुराल आने जाने के क्रम में इनका परिचय हो गया। इसी दौरान वर्ष 2013 में हरीश चंद्र प्रसाद ने मलेशिया का वीजा देने के नाम पर 60000 ले लिए, इसके बाद वीजा भी नहीं दिया। पैसे की वापसी को लेकर पीड़ित द्वारा लगातार चक्कर लगाया जाने लगा। लेकिन पैसा नहीं मिला।

भोरे के स्वर्ण व्यवसायी से फोन कर मांगी 10 लाख की रंगदारी

भोरे प्रात : किरण संवाददाता

भोरे में अपराधियों ने एक स्वर्ण व्यवसायी से 10 लाख की रंगदारी मांगी है। रंगदारी नहीं देने पर अंजाम भुगतने की धमकी दी गई है। अंतरराष्ट्रीय नंबर से आए कॉल से यह रंगदारी मांगी गई है। फिलहाल पुलिस ज्वेलरी शॉप के मालिक के बयान के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि थाना क्षेत्र के लामीचैर गांव निवासी राजकुमार सोनी ने फुलवरिया थाने के मिश्र बतरहा में लवली ज्वेलर्स के नाम से एक दुकान खोल रखी है। इनके पुत्र विशाल सोनी के नंबर पर दो नंबरों से फोन आया और फोन करने वाले ने 10 से 12 लाख रुपए के गहने खरीदने की बात कही। इसके अगले दिन राजकुमार सोनी के नंबर पर एक अंतरराष्ट्रीय कॉल आया, जिसने 10 लाख रुपए की मांग की। नहीं देने पर बथुआ बाजार में ज्वेलरी शॉप के दुकानदार के साथ हुई घटना को अंजाम देने की बात कही गई। रंगदारी मांगी जाने के बाद से स्वर्ण व्यवसाई का पूरा परिवार दहशत में आ गया। पूरे मामले की जानकारी पुलिस को दी गई। साथ ही राजकुमार सोनी के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। थानाध्यक्ष ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी गई है। जल्द ही परिणाम सामने आएगा।

फुलवरिया पुलिस ने तीन अभियुक्तों सहित पांच को किया गिरफ्तार

फुलवरिया प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया पुलिस ने रविवार की देर शाम समकालीन अभियान चलाकर क्षेत्र के अलग-अलग गांव में छापेमारी कर फरार चल रहे तीन अभियुक्तों सहित पांच लोगों को गिरफ्तार कर लिया। जिसमें दो पियक्कड़ भी शामिल हैं। पुलिस ने गिरफ्तार पियक्कड़ों की स्वास्थ्य जांच के लिए स्थानीय मरछियां देवी रेफरल अस्पताल फुलवरिया में दाखिला कराया।

जहां चिकित्सकों ने अपनी प्राथमिक जांच के बाद दोनों व्यक्तियों को शराब पीने की पुष्टि की। इसकी जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष अब्दुल मजीद ने बताया कि गिरफ्तार पियक्कड़ों में भोरे थाना वह गांव के निवासी स्वर्गीय कमलेश गोड़ का पुत्र चंदन गोड़ तथा उत्तर प्रदेश के देवरिया जिला अंतर्गत महुआडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत हेतिमपुर गांव के निवासी विदेशी गुप्ता का पुत्र विजय मल गुप्ता के रूप में पहचान की गई है। जबकि गिरफ्तार अभियुक्तों में मरदवानी गांव निवासी जुनूखुन चैधरी का पुत्र शिवजी चैधरी उसी गांव का बच्चा यादव का पुत्र हरकेश यादव तथा चमारीपट्टी गांव के निवासी सुरुज दीक्षित का पुत्र सतेंद्र दीक्षित शामिल है। पुलिस ने गिरफ्तार सभी को सोमवार को न्यायिक हिरासत गोपालगंज भेज दिया है।

पूर्व सरपंच के बेटे की पटना मे सड़क हादसे में मौत

पंचदेवरी। कटेया थाना क्षेत्र के पंचदेवरी प्रखंड की मझवलिया पंचायत के पूर्व सरपंच नेहरुआ कला गांव निवासी ब्रह्मानंद गिरि के बेटे सूरज कुमार की रविवार की रात पटना में सड़क हादसे में मौत हो गयी। वह पटना में रहकर पढ़ाई करता था। रविवार की रात बर्थडे मनाकर अपने मित्रों के साथ रूम पर लौटने के दौरान हादसा हुआ और सूरज की जान चली गयी। इस घटना में उसके अन्य दो मित्रों के भी घायल होने की सूचना है। जिनका इलाज कराया जा रहा है। घटना के बाद परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है। परिजनों ने बताया कि 11 जून की शाम सूरज अपना 17वां बर्थडे सेलिब्रेट करने अपने मित्रों के साथ निकला था।

फर्जी प्रमाण पत्र पर आवेदन करने वाले दो शिक्षक अभ्यर्थियों के विरुद्ध प्राथमिकी

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव प्रखंड नियोजन इकाई के अंतर्गत प्रखंड शिक्षक के लिए फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर आवेदन करना दो शिक्षक अभ्यर्थियों को भारी पड़ गया है। जांच में शिक्षक अभ्यर्थियों का प्रमाण पत्र फर्जी पाए जाने के बाद जिला पदाधिकारी गोपालगंज और जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना गोपालगंज के आदेश के आलोक में उचकागांव प्रखंड शिक्षक के लिए आवेदन करने वाले दो अभ्यार्थियों के विरुद्ध प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी आदित्य अंशु ने प्राथमिकी कराई है। उचकागांव प्रखंड के प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी आदित्य अंशु के आवेदन के आलोक में फुलवरिया थाना क्षेत्र के कोयलादेवा गांव के अनुप कुमार चतुवेर्दी और मीरगंज थाना क्षेत्र के नरईनिया गांव के सोनी देवी के विरुद्ध प्राथमिकी कर पुलिस मामले में जांच कर रही है। सोमवार को बीपीआरओ आदित्य अंशु के आवेदन के आलोक में दो शिक्षक अभ्यर्थियों के विरुद्ध प्राथमिकी होने के साथ ही अब तक उचकागांव प्रखंड क्षेत्र के तीन शिक्षक अभ्यार्थियों के विरुद्ध पुलिस फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर आवेदन करने के आरोप में प्राथमिकी कर चुकी है। फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर शिक्षक नियोजन के लिए आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों में हड़कंप मची हुई है।

देश को लूटने वाली शक्तियां मोदी को हटाने के लिए कर रही दुष्प्रचार: मंगल

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव प्रखंड के बिरवट बाजार में भाजपा के प्रखंड अध्यक्ष दीपक कुमार के नेतृत्व में प्रखंड स्तरीय लाभार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें पहुंचे प्रदेश के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने लाभार्थियों से मिलकर केंद्र सरकार से मिलने वाली योजनाओं के लाभ के बारे में जानकारी। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सूबे के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार देश के गरीबों के लिए 177 योजनाएं चला रही हैं। केंद्र सरकार के द्वारा देश, प्रदेश और जिले के विकास के साथ-साथ गरीबों के विकास के लिए भी काम किया जा रहा है। प्रदेश का कोई भी ऐसा घर नहीं है जिस घर में केंद्र सरकार की किसी भी योजना का लाभ नहीं पहुंचा है। उन्होंने कहा कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने जब दो हजार रुपये का नोट बंद करने का निर्णय लिया तो उससे आम जनता को कोई तकलीफ नहीं हुई। परंतु देश को लूटने वाली पार्टियां एकजुट होकर नरेंद्र मोदी सरकार के नोटबंदी करने पर तकलीफ में है। ये सभी देश को लूटने वाली पार्टियां नरेंद्र मोदी सरकार के विरुद्ध एकजुट होकर दुष्प्रचार कर केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार को हटाना चाहती हैं। परंतु आम जनता इसके चक्कर में आने वाली नहीं है। इस दौरान उन्होंने नरेंद्र मोदी सरकार की उपलब्धियां गिनाने के साथ ही केंद्र सरकार के किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, अन्न योजना, जन धन योजना, कोरोना वैक्सीन सहित कई योजनाओं के लाभार्थियों से मिलकर उन्हें मिलने वाले लाभ के बारे में जानकारी ली। सभा को पूर्व मंत्री जनक राम, पूर्व एमएलसी आदित्य नारायण पांडेय, जिलाध्यक्ष संदीप कुमार उर्फ मंटू गिरी, अनिकेत सिंह, दुर्गा राय, इंजीनियर सुदामा मांझी, उमेश प्रधान, रामेश्वर सिंह, रंजन सिंह, मनीष कुमार, राजकुमार गुप्ता, चंद्रमोहन राय आदि नेताओं ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

दिल्ली के उड़ान में बिहार व भोजपुरी क्षेत्र के बच्चे भी लहरा रहे प्रतिभा का परचम

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। देश की राजधानी नई दिल्ली में उड़ानकृद सेंटर आफ थियेटर आर्ट एंड चाइल्ड डवलपमेंट एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वाध्धान में आयोजित बाल रंगमंच प्रशिक्षण शिविरों में बच्चों की शरारत को खेल खेल में नई दिशा मिल रही है शिविर में बिहार के सारण ,सिवान सहित विभिन्न जिलों के बच्चे अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। मौज मस्ती के बीच बच्चों को जहां रंगमंच की विभिन्न विधाओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है वहीं बच्चे जीवन को जीने की कला भी सीख रहे हैं। उडान द सेंटर आफ थियेटर आर्ट एंड चाइल्ड डवलपमेंट एवं आईजीएनसीए संस्कति मंत्रालय द्वारा बाल रंगमंच प्रशिक्षण शिविरों व कार्यशालाओं का आयोजन दिल्ली के आधा दर्जन स्थानों सहित देश में कुल दस अलग अलग स्थानों पर किया गया है। इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य बच्चों को थियेटर और अभिनय की बारीकियां सीखाना तो है ही साथ ही बच्चों में एकाग्रता, आत्मविश्वास,भाषण कला, ग्राहय क्षमता विकसित किये जाने के साथ साथ उन्हें मंच पर प्रदर्शन की बारीकियां खेल खेल में सीखाई जा रही हैं। उडान द सेंटर आफ थियेटर आर्ट एंड चाइल्ड डवलपमेंट के निदेशक संजय टुटेजा के अनुसार इन कार्यशालाओं व शिविरों में लगभग 500 बच्चे प्रशिक्षण ले रहे हैं जिनमें लगभग 50 बच्चे झुग्गी झौपडी निवासी गरीब बच्चे हैं। प्रशिक्षण के दौरान बच्चों की सृजनात्मकता, वाणिज्यिक कौशल, टीमवर्क, व्यक्तित्व विकास और संवाद क्षमता को विकसित किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि यह पूरा प्रशिक्षण खेल खेल में दिया जाता है ताकि बच्चों के लिये यह प्रशिक्षण कोई बोझ ना हो और बच्चे गर्मियों में स्कूल की छुटिटयों के दौरान मौज मस्ती कर अपनी मौलिक प्रतिभा को विकसित कर सकें।

मशरक जंक्शन और बस स्टैंड पर यात्री सुविधा का अभाव

छपरा। छपरा-थावे रेलखंड के मध्य अवस्थित इकलौते मशरक रेलवे जंक्शन पर यात्री सुविधा का घोर अभाव लगातार बढ़ती गर्मी के बीच यात्रियों के लिए परेशानी का सबब बन गया है। यही हालात मशरक बस स्टैंड का है जहा से दिल्ली , कोलकाता , सिलीगुड़ी , रांची की बस खुलती है। एक पखवाड़े से लगातार बदन झुलसाती गर्मी में यात्री सर पर शेड, पीने के पानी एवम शौचालय को लेकर बेतहाशा परेशान है। मशरक जंक्शन के 400 मीटर लंबे प्लेटफार्म नंबर 1 पर सिर्फ स्टेशन भवन के पास एक छोटा शेड सिर्फ रेलकर्मियों को ही धूप से बचा पाता है यही हालात प्लेटफार्म 2 की भी है । सुबह से दोपहर तक 5 जोड़ी ट्रेन के हजारों यात्री तेज धूप से बचने के लिए स्टेशन भवन या फिर खुले आसमान के नीचे प्लेटफार्म पर गमछा या छाता के सहारे धूप से बचने का प्रयास करते है। स्टेशन प्रवेश द्वार की ओर सकुर्लेटिंग एरिया में लगे पीपल के पेड़ के नीचे यात्री धूप से बचने के लिए इकट्ठा होते है। जंक्शन होने के बाद भी यहां यात्री प्रतिक्षालय एवम विश्रामालय अब तक नही बन पाया है । स्टेशन पर एक दर्जन प्याऊ नल स्थल बना हुआ है किंतु कुछ ही नल में पानी आता है इन नलों से पानी लगातार गिरते रहने से टंकी का पानी बार बार खत्म हो जाता है । जिससे ट्रेन लगते ही पानी के लिए लोग इधर उधर भागने लगते है । प्लेटफार्म नंबर 1 पर रेलकर्मियों एवम यात्रियों के लिए इकलौता शौचालय भी सिर्फ खानापूर्ति भर है जबकि प्लेटफार्म नंबर 2 पर एक भी शौचालय एवम यूरिनल नही होने से महिला यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। यात्री प्रतीक्षालय नही होने से लखनऊ , गोरखपुर , दिल्ली , पटना जाने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है।

व्यापारी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान: सुनील ओझा

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। सोमवार को भारतीय जनता पार्टी के द्वारा शहर के सरस्वती शिशु मंदिर के सभागार में व्यापारी सम्मेलन एवं परिचर्चा का आयोजन जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह की अध्यक्षता में एवं कार्यक्रम प्रभारी जिला महामंत्री धर्मेंद्र कुमार साह के नेतृत्व में किया गया, व्यापारिक सम्मेलन का शुरूआत बिहार प्रदेश के सह प्रभारी व मुख्य अतिथि सुनील ओझा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया मुख्य अतिथि सुनील ओझा का स्वागत कार्यक्रम प्रभारी व महामंत्री धर्मेन्द्र कुमार साह ने अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ से किया।मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता बिहार प्रदेश भाजपा के सह प्रभारी सुनील ओझा जी ने छपरा शहर के व्यापारियों संबोधित करते हुए कहा कि भारत के इतिहास में एवं भारत के विकास में व्यापारी वर्ग का महत्वपूर्ण एवं अभूतपूर्व योगदान रहा चाहे वह मुगलों की लड़ाई हो या भारत के स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई व्यापारियों ने राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने का काम किया है श्री ओझा ने कहा कि भारत के नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने 9 साल के बेमिसाल सेवाकाल में भारत के व्यापारियों को महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध कराएं है किसी भी राष्ट्र के विकास में व्यवसायियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है व्यवसाई किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते केंद्र की नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने अपने 9 साल के सेवाकाल में भारत के व्यापारियों को मजबूत एवं सशक्त बनाने का काम किया है , भारतीय जनता पार्टी के मुख्य सचेतक एवं तरैया के विधायक श्री जनक सिंह ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश में निर्मित स्वदेशी वस्तुओं के लिए देश में बने स्वदेशी सामान

सम्पादकीय

एक सौ लड़कियों का यौन शोषण

यदि भारतीय कुश्ती संघ में फिजियोथेरेपिस्ट रहे परमजीत मलिक के खुलासे पर भरोसा किया जाए और दिल्ली पुलिस उन्हें चश्मदीद गवाह के तौर पर समन कर उनके बयान दर्ज करे, तो पहलवानों के यौन-शोषण केस में तूफान मच सकता है। फिजियो के खुलासों का सारांश है कि कुश्ती संघ और कैंपों के भीतर 100 से ज्यादा महिला पहलवानों का यौन-शोषण किया गया। उन्हें इस काम के लिए विवश किया गया। रात के अंधेरे में वे वाहन लड़कियों को लाने के लिए भेजे जाते थे, जो कुश्ती संघ के तत्कालीन अध्यक्ष एवं भाजपा के बाहुबली सांसद बृजभूषण शरण सिंह की सुरक्षा में तैनात किए गए थे। फिजियो का दावा है कि कई महिला पहलवानों ने उनसे अपना दुखड़ा रोया। वे किसी भी सूरत में कुश्ती नहीं छोडा चाहती थीं, क्योंकि उन्होंने चैम्पियनशिप का पर्याप्त प्रशिक्षण ग्रहण कर लिया था। फिजियो ने तत्कालीन कोच कुलदीप मलिक और सेन से भी उस नरक का कई बार उल्लेख किया था। अंततः कुश्ती संघ से फिजियो की ही छुट्टी कर दी गई। एक और चश्मदीद साक्ष्य हैं-जगबीर सिंह। वह कुश्ती के कई मुकाबलों में अंतरराष्ट्रीय रेफरी थे। उन्होंने थाईलैंड के फुकेट आईलैंड के एक प्रसंग का खुलासा किया है, जब बृजभूषण ने फोटो सेशन के दौरान ही एक महिला पहलवान को आपत्तिजनक रूप से छुआ था और लडकी को अपनी अस्मत बचाने को वहां से भागना पड़ा था। विदेश में बृजभूषण ने भारतीय भोजन की व्यवस्था कराई थी और सभी खिलाडिों, कोच, रेफरी और कुश्ती संघ के मौजूद अधिकारियों आदि को न्योता दिया गया था। उस दौरान बृजभूषण शरण सिंह और अन्य ने खूब शराब पी और महिला पहलवानों पर फब्तियां भी कसीं। उन्हें गलत जगह छुआ भी गया। पुलिस ने रेफरी से बात कर बयान भी लिए हैं। कुश्ती के दोनों ओहदेदारों ने आंखों देखी करतूतों का सार्वजनिक खुलासा भी किया है।

हरियाणा के सोनीपत में 10 जून को जो खाप पंचायत बुलाई गई थी, जगबीर तो उसमें भी मौजूद थे और उन्होंने कुश्ती के भेडिों का भंडाफोड़ जरूर किया होगा। दरअसल यह मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कुश्ती संघ की काली-भद्दी हरकतों का ब्यौरा बयां कर रहा है। यदि देश की राष्ट्रीय ओलंपिक परिषद अंतरराष्ट्रीय परिषद को यौन-शोषण, उत्पीड की शिकायत कर दे, तो बृजभूषण को खेल के संघों और दुनिया से उम्र भर के लिए प्रतिबंधित किया जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी और अन्य पक्ष ऐसी गंभीरता और फजीहत को लेकर चिंतित क्यों नहीं हैं? यह मामला बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक, विनेश फोगाट आदि विख्यात पहलवानों का नहीं है। वे तो दुनिया में भारत और कुश्ती का परचम लहरा चुके हैं। यदि यहीं उनके करियर पर विराम लग जाता है, तो उन्हें ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन एक ही खेल-संघ के भीतर 100 से ज्यादा महिला पहलवानों का यौन-शोषण! यकीनन यह एक गंभीर अपराध है। कुश्ती का खेल प्रभावित हो सकता है! भारत के खेलों पर लैंगिक उत्पीड का धब्बा लगाया जा सकता है। एक सरकार के तौर पर, सिर्फ अपने सांसद को बचाने के मद्देनजर, आंखें कब तक मूंदे रखोगे? कुछ गलत अफवाहें भी फैलाई जा रही हैं। साक्ष्यों से खिलवाड़ किया जा रहा है। ये भी अर्द्धसत्य हैं। यदि पॉक्सो कानून में प्राथमिकी दर्ज की गई है, तो उसे निरस्त करने का अधिकार सिर्फ उच्च न्यायालय को ही है। पुलिस या बाहुबली आरोपित इस संदर्भ में कुछ नहीं कर सकते। नाबालिग पहलवान ने धारा 164 के तहत न्यायाधीश के सामने जो बयान दर्ज कराया है और फिर दूसरा बयान दिया है, तो यह भी न्यायाधीश के विवेक पर है कि वह कौन-सा बयान स्वीकार करते हैं। बहरहाल सवाल यह है कि क्या यौन-अपराधों पर देश में इंसाफ नहीं मिलेगा?

चुनौतियों के बीच भी बढ़ेगी अर्थव्यवस्था

डा. जयंतीलाल भंडारी

इन दिनों प्रकाशित हो रही वैश्विक आर्थिक एवं वित्तीय रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि इस वित्त वर्ष 2023-24 में दुनिया में आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की विकास दर तेजी से बढ़ेगी और दुनिया में सर्वाधिक होगी। ज्ञातव्य है कि पिछले वित्त वर्ष 2022-23 में देश की विकास दर अनुमानों से अधिक 7.2 फीसदी रही है। हाल ही में एक जून को प्रकाशित अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के अहम आंकड़ों ने वैश्विक आर्थिक और वित्तीय चुनौतियों के बीच चालू वित्त वर्ष 2023-24 में भी अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी का जोरदार संकेत देते हुए विकास दर के 6.5 फीसदी रहने की संभावनाओं को आगे बढ़ाया है। गौरतलब है कि पिछले माह मई 2023 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी), विनिर्माण के लिए पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई), यात्री वाहनों की बिक्री और यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) के जरिये हुए लेनदेन में प्रभावी वृद्धि पाई गई है। यदि हम आंकड़ों की और देखें तो पाते हैं कि मई 2023 में जीएसटी संग्रह मई, 2022 के मुकाबले 12 फीसदी बढकर 1.57 लाख करोड़ रुपये रहा। उत्पादन में तेजी के कारण मई में पीएमआई 58.7 पर पहुंच गया। पिछले 31 महीनों में पीएमआई का यह सबसे ऊंचा स्तर है। मई 2023 में यात्री वाहन उद्योग भी तेजी से आगे बढ़ा। यात्री वाहनों की बिक्री भी मई 2022 के मुकाबले 13.5 फीसदी बढकर 334802 इकाई हो गई। इसी तरह मई में यूपीआई लेन-देन ने भी रिकॉर्ड बना दिया।

इस महीने में 14.3 लाख करोड़ रुपये के लेन-देन हुए। मई 2023 में कुल 941 करोड़ यूपीआई लेन-देन थे, जो मई 2022 से 6 फीसदी अधिक रहे। ऐसे में चालू वित्त वर्ष 2023-24 में जीडीपी और आर्थिक वृद्धि के अनुमान बढ़ गए हैं। निश्चित रूप से हाल ही में प्रकाशित उत्साहवर्द्धक आर्थिक आंकड़ों से देश की वैश्विक क्रेडिट रेटिंग भी बढ़ेगी। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि विभिन्न वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बीच भी भारत की अनुकूल क्रेडिट रेटिंग का परिदृश्य है। 18 मई को दुनिया की प्रमुख अमेरिका की एसऐंडपी ग्लोबल रेटिंग ने भारत की सॉवरिन रेटिंग स्थिर परिदृश्य के साथ दीर्घावधि के लिए बीबीबी. और कम अवधि के लिए ।.3 रखी है। यह परिदृश्य बताता है कि भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था और राजस्व में अच्छी वृद्धि राजकोष को मजबूती प्रदान करेगी। साथ ही एसऐंडपी ने उम्मीद जताई है कि भारत की वास्तविक वृद्धि दर वित्त वर्ष 24 में 6 प्रतिशत रहेगी क्योंकि निवेश और उपभोक्ताओं का रुख वृद्धि में अगले कुछ साल तक मददगार रहेगा। ऐसे में वित्त वर्ष 25 और वित्त वर्ष 26 में भारत के लिए 6.9 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान लगाया गया है।

गौरतलब है कि प्रमुख वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसी क्रिसिल ने कहा कि इस वित्तीय वर्ष 2023-24 में चुनौतीपूर्ण वैश्विक वित्तीय स्थिति के बावजूद भारत वैश्विक आर्थिक झटकों को इसलिए सरलतापूर्वक झेल जाएगा, क्योंकि भारत का चालू खाते के घाटे (सीएडी) में सुधार हुआ है। चालू खाते का घाटा कम अवधि की प्रमुख विदेशी देनदारी के रूप में पहचाना जाता है। इससे विनिमय दर और विदेशी निवेशकों की धारणा प्रभावित होती है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि वैश्विक रेटिंग एजेंसी फिच ने भारत की रेटिंग बीबीबी. बरकरार रखी है। दीर्घ अवधि के ऋण पर भारत का परिदृश्य स्थिर रखा है। रेटिंग निर्धारित करते हुए फिच ने कहा कि भारत में पिछले कुछ वर्षों में सरकार के सहयोग से कंपनियों और बैंकों के बही-खाते में काफी सुधार हुआ है और आधारभूत संरचना के विकास पर भी अधिक ध्यान दिया जा रहा है। निजी क्षेत्र भी बड़े स्तर पर निवेश करने की तैयारी कर रहा है। फिच ने कहा कि बढ़ी महंगाई, ऊंची ब्याज दरों और वैश्विक स्तर पर मांग में कमी की बड़ी चुनौतियों के बीच भारत की आंतरिक वित्तीय स्थिति थोड़ी कमजोर जरूर है और प्रति व्यक्ति आय और विश्व बैंक के मानकों पर भी भारत थोड़ा फिसला है, लेकिन दूसरे देशों की तुलना में भारत की आर्थिक वृद्धि की संभावनाएं काफी मजबूत हैं और विदेश से आने वाले वित्तीय संसाधन भी संतोषप्रद हैं। निवेश की बेहतर संभावनाओं के बीच वित्त वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर 6 फीसदी और वित्त वर्ष 2024-25 तक देश की आर्थिक वृद्धि दर बढकर 6.7 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है। इसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में भी कहा गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की बढ़ी हुई अनिश्चितताओं के बीच भारत का मजबूत आर्थिक प्रदर्शन दुनिया में भारत की अहमियत बढ़ा रहा है। वर्ष 2023 में कुल वैश्विक विकास में भारत 15 फीसदी से भी अधिक का योगदान देगा। जहां पिछले वित्त वर्ष 2022-23 में भारत की विकास दर दुनिया में सबसे अधिक रही है, वहीं आगामी वित्त वर्ष 2023-24 में भी भारत की विकास दर 6 फीसदी से अधिक के स्तर पर रहते हुए फिर सर्वोच्च होगी। इसमें कोई दो मत नहीं है कि भारत का बढ़ता विदेश व्यापार और भारत का बढ़ता निर्यात भारत की वैश्विक क्रेडिट रेटिंग को संतोषप्रद बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रहा है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव (जीटीआरआई) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया की आर्थिक अस्थिरताओं के बावजूद वित्त वर्ष 2022-23 में भारत का विदेश व्यापार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचते हुए 1.6 लाख करोड़ डॉलर मूल्य की ऊंचाई पर रहा है।

जी-20 ने हमें डिजिटल स्वास्थ्य के लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण देने का दुर्लभ अवसर प्रदान किया है

एक मानकीकृत इंटरनेट प्रोटोकॉल (आईपी) के बिना, वास्तविकता का हमारा संस्करण मूल रूप से ऐसी व्यवस्था से अलग दिखाई देगा जिसके पास कई स्थानीय क्षेत्रीय नेटवर्क तो हैं लेकिन प्लग-इन करने के लिए कोई समान मानक इंटरनेट सुविधा नहीं है। वास्तविकता का यह वैकल्पिक संस्करण उस प्रवाह के समान है जिसका डिजिटल स्वास्थ्य क्षेत्र आज सामना कर रहा है- विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के मुहाने पर मौजूद दुनिया इस मामले में अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व से एक मानकीकृत ढांचे और दिशा के साथ-साथ एक निर्णायक पहल की प्रतीक्षा कर रही है ताकि इसके माध्यम से अरबों लोगों को लाभान्वित करने की क्षमता रखने वाले नवाचार को ग्लोबल साउथ में बढ़ावा देते हुए बनाए रखना सुनिश्चित किया जा सके। डिजिटल स्वास्थ्य की उत्साहपूर्ण दुनिया छोटे किन्तु प्रभावपूर्ण प्रायोगिकों और उप-क्षेत्रों में स्मार्ट वियरेबल्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, वर्चुअल केयर, रिमोट मॉनिटरिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डेटा एनालिटिक्स, ब्लॉक-चेन, डेटा एक्सचेंज को सक्षम बनाने वाले उपकरण, स्टोरेज, दूरस्थ डेटा कैप्चर जैसे नवाचारों से परिपूर्ण हैं परन्तु यह एकीकृत वैश्विक दृष्टिकोण के अभाव में एक बिखरे हुए इकोसिस्टम में उलझी हुई है।

डॉ मनसुख मांडविया

केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, रसायन और उर्वरक मंत्री, भारत सरकार

आज इंटरनेट के बिना हम एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें, जहां कंप्यूटर नेटवर्क एक-दूसरे से जुड़े न हों। इस तरह की संपर्क रहित दुनिया में, एक देश के लोग ऐसी क्षमता के पुनः आविष्कार पर कार्य करना जारी रख सकते हैं जिसे विश्व के दूसरे भाग में वर्षों से उपयोग किया जा रहा है। लेकिन एक मानकीकृत इंटरनेट प्रोटोकॉल (आईपी) के बिना, वास्तविकता का हमारा संस्करण मूल रूप से ऐसी व्यवस्था से अलग दिखाई देगा जिसके पास कई स्थानीय क्षेत्रीय नेटवर्क तो हैं लेकिन प्लग-इन करने के लिए कोई समान मानक इंटरनेट सुविधा नहीं है। वास्तविकता का यह वैकल्पिक संस्करण उस प्रवाह के समान है जिसका डिजिटल स्वास्थ्य क्षेत्र आज सामना कर रहा है- विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के मुहाने पर मौजूद दुनिया इस मामले में अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व से एक मानकीकृत ढांचे और दिशा के साथ-साथ एक निर्णायक पहल की प्रतीक्षा कर रही है ताकि इसके माध्यम से अरबों लोगों को लाभान्वित करने की क्षमता रखने वाले नवाचार को ग्लोबल साउथ में बढ़ावा देते हुए बनाए रखना सुनिश्चित किया जा सके।

डिजिटल स्वास्थ्य की उत्साहपूर्ण दुनिया छोटे किन्तु प्रभावपूर्ण प्रायोगिकों और उप-क्षेत्रों में स्मार्ट वियरेबल्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, वर्चुअल केयर, रिमोट मॉनिटरिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डेटा एनालिटिक्स, ब्लॉक-चेन, डेटा एक्सचेंज को सक्षम बनाने वाले उपकरण, स्टोरेज, दूरस्थ डेटा कैप्चर जैसे नवाचारों से परिपूर्ण हैं परन्तु यह एकीकृत वैश्विक दृष्टिकोण के अभाव में एक बिखरे हुए इकोसिस्टम में उलझी हुई है। ये सारी परिस्थितियां ऐसे समय में हैं जब महामारी ने हमें पहले से ही स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में डिजिटल उपकरणों की असाधारण क्षमता का अहसास करा दिया है।

डिजिटल स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की रूपरेखा तैयार करना- भारत में एक महान प्रयोग

हाल के दिनों में हम भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में डिजिटल उपकरणों की परिवर्तनकारी क्षमता का उपयोग करने के साथ-साथ इसका अनुभव कर चुके हैं। कोविड-19 के दौरान, कोविन और ई-संजीवनी जैसे प्लेटफॉर्म पूरी तरह से गेम-चेंजर सिद्ध हुए। इन डिजिटल उपकरणों ने न सिर्फ टीके लगाने के तरीके को ही बदल दिया बल्कि इनके माध्यम से एक अरब से अधिक लोगों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई गईं और इनमें वे लोग भी शामिल थे, जिन तक पहुंचना सबसे मुश्किल कार्य था।

भारत के कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम का डिजिटल आधार- कोविन, जहां एक ओर वैक्सीन की उपलब्धता और इसे लगाए जाने की व्यवस्था पर नजर रखता है तो वहीं दूसरी ओर यह प्रत्येक लाभार्थी के कोविड-19 टीकाकरण के लिए पंजीकरण करने के अलावा वास्तविक टीकाकरण प्रक्रिया, टीकाकरण के प्रमाण के रूप में डिजिटल प्रमाणपत्र के साथ-साथ अन्य सुविधाऐं भी प्रदान करता है।

लोगों और व्यवस्था के बीच सूचना की विषमता को कम करते हुए, कोविन ने टीकाकरण अभियान को लोकतंत्रात्मक बनाते हुए यह सुनिश्चित भी किया कि सभी पात्र लाभार्थियों के लिए टीकों की उपलब्धता को सुलभ बनाया जा सके। अमीर हो या गरीब, यह सभी के लिए टीकाकरण कराने का समान तरीका था और सभी टीका लगवाने के लिए एक ही कतार में खड़े थे। इस सशक्त साधन की क्षमता को देखते हुए, हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसे दुनिया के लिए एक भेंट के रूप में प्रस्तुत किया।

इसी तरह से टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म ई-संजीवनी, जिसके माध्यम से लोगों को अपने घर पर ही आरामपूर्वक डॉक्टरों के साथ ऑनलाइन परामर्श की सुविधा मिली, शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया और इसके माध्यम से 10 करोड़ से अधिक परामर्श लिए गए। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से एक दिन में सर्वाधिक 5 लाख से अधिक परामर्श भी लिए गए।

डिजिटल रूप से सक्षम कोविड वार रूम ने लगभग वास्तविक समय पर ही हमें साक्ष्य-आधारित नीतिगत निर्णय लेने में सहायता की। एक विशेष निगरानी प्रणाली- कोविड-19 इंडिया पोर्टल ने भौगोलिक स्थिति के आधार पर न सिर्फ बीमारी बल्कि मामलों की संख्या के आधार पर राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर मांग का आकलन करते हुए आवश्यक आपूर्ति के लिए आवश्यक वस्तु सूची की निगरानी भी की। आरोग्य सेतु, आरटी-पीसीआर ऐप और अन्य डिजिटल उपकरणों के माध्यम से हमारे देश के डेटा को नीति में परिवर्तित करने का मार्ग प्रशस्त किया जिसने हमारी कोविड-19 नीति प्रतिक्रिया को एक परिमाण के क्रम से मजबूत किया।

सार्वजनिक स्वास्थ्य में डिजिटल उपकरणों की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए, भारत पहले से ही एक राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य इकोसिस्टम- आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) को तैयार कर रहा है। इसके माध्यम से रोगी अपने मेडिकल रिकॉर्ड को सुरक्षित रखने और इसे प्राप्त करने के अलावा उचित उपचार और उपचार उपरान्त की प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ साझा कर सकते हैं। यह रोगियों को स्वास्थ्य सुविधाओं और सेवा प्रदाताओं के बारे में सटीक जानकारी दिलाने में मदद करता है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम नेतृत्व में भारत दुनिया के लिए, विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों में समान डिजिटल स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए हमारे शिक्षण और संसाधनों को साझा करने के लिए तैयार है ताकि हमारे अनुभव उन्हें डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं के लिए किए जाने वाले प्रयासों में मदद कर सकें। विश्व के इन क्षेत्रों में सुविधाओं से वंचित लोग अत्याधुनिक डिजिटल समाधानों और नवाचारों का लाभ प्राप्त कर सकते हैं और इसे सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाव कवरेज का सपना साकार हो सकता है।

वैश्विक डिजिटल स्वास्थ्य इकोसिस्टम क्या है?

कॉपीराइट व्यवस्थाओं और स्वामित्व प्रणालियों ने डिजिटल समाधानों तक पहुंच को अवरुद्ध कर दिया है। अधिकांश परिवर्तनकारी डिजिटल समाधान आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि वे भाषा, सामग्री और उन तक पहुंचने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे के संदर्भ में असमान रूप से वितरित हैं।

प्रासंगिक डिजिटल सार्वजनिक सामान या ओपन-सोर्स समाधान मौजूद होने पर भी, उनकी उपयोगिता सीमित है क्योंकि वे एक मंच, डेटा और नीति से बंधे हैं जिसके लिए कोई समान वैश्विक मानक नहीं हैं। इसके अलावा, डिजिटल स्वास्थ्य के लिए कोई व्यापक वैश्विक प्रशासनिक प्रारूप भी नहीं है जो विभिन्न प्रणालियों में पारस्परिकता का ध्यान रख सके।

डिजिटल स्वास्थ्य के संदर्भ में वैश्विक मानकों को निर्धारित करने के लिए कई स्वतंत्र प्रयास भी जारी हैं, लेकिन ये पहल एकाधिकार के तौर पर कार्य कर रही हैं, और लागू होने के लिए किसी भी समर्थन के बिना काफी हद तक असंगठित हैं। ये चुनौतियाँ अवसरों में बदल सकती हैं यदि हम एक वैश्विक समुदाय के रूप में एक प्रभावी एकल मंच पर सभी प्रयासों को समान रूप से साथ रखने का संकल्प कर सकते हैं। इस मामले में जी-20 प्रभावी रूप से डिजिटल स्वास्थ्य हेतु भविष्य के लिए दृष्टिकोण पर विचार करने और इसका निर्माण करने के लिए एक शक्तिशाली मंच के रूप में तैयार है।

जी-20 में भारत की अध्यक्षता एक डिजिटल स्वास्थ्य सफलता के लिए प्रयासरत

कल्पना कीजिए कि अगर हम मानवता के लिए डिजिटल स्वास्थ्य के लिए एक प्रभावी वैश्विक प्रारूप बनाते हैं और उसे लागू करते हैं तो इस असाधारण क्षमता को सबके लिए समान रूप से उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए हमें सामूहिक रूप से वर्तमान में जारी विभिन्न प्रयासों को डिजिटल स्वास्थ्य पर एक समान वैश्विक पहल में परिवर्तित करने के साथ-साथ एक शासन ढांचे को संस्थागत बनाने, एक समान प्रोटोकॉल पर सहयोग करने, डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं के रूप में स्वास्थ्य सेवा में आशाजनक

मोदी मैजिक पर उठते सवाल आगामी चुनाव में भाजपा हुई बेहाल

हो भी क्यूं नही, भारत विश्व का सबसे बड़े लोकतंत्र ही नहीं बल्कि विश्व के सबसे अधिक आबादी देश बन गया है खैर! इस वर्ष 5 राज्यों के विधान सभा व अगले वर्ष 2024 में होने वाले लोक सभा के चुनाव होने वाली है। इन चुनावों के अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीति बनाने लगी है। चाहे केन्द्र की सता में भाजपा हो या विपक्ष में कांग्रेस हो। शाथ अन्य राजनीति दलो व क्षेत्रीय राजनीतिक दल भी अपनी अपनी किस्मत आजमा रही है। इसी क्रम में आज हम केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को ले कर है। आगामी वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में मोदी मैजिक की चमक फीका पड़ने लगा है। मोदी मैजिक पर उठते सवाल आगामी चुनाव में भाजपा हुई बेहाल यह हम या कोई विपक्षी राजनीतिक दल द्वारा नहीं कह रहा है बल्कि इस संदर्भ में विगत दिनों आर एस एस के मुखपत्र ऑर्गनाइजर के संपादकीय पेज में छपे लेख सें भारतीय राजनीति की दिशा दशा में परिवर्तन के संकेत दिए है। इस लेख के माध्यम से मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र की भाजपा सरकार के लिए दिशा निर्देश जारी कर दी है।

विनोद तकियावाला

लेखक 33 वर्षों से पत्रकारिता में निरन्तर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं

बैश्विक राजनीति के मानचित्र की क्षितिज पर भारत राजनीति की चर्चा व चमक हमेशा ही होती है।हो भी क्यूं नही, भारत विश्व का सबसे बड़े लोकतंत्र ही नहीं बल्कि विश्व के सबसे अधिक आबादी देश बन गया है खैर! इस वर्ष 5 राज्यों के विधान सभा व अगले वर्ष 2024 में होने वाले लोक सभा के चुनाव होने वाली है। इन चुनावों के अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीति बनाने लगी है। चाहे केन्द्र की सता में भाजपा हो या विपक्ष में कांग्रेस हो। शाथ अन्य राजनीति दलो व क्षेत्रीय राजनीतिक दल भी अपनी अपनी किस्मत आजमा रही है। इसी क्रम में आज हम केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को ले कर है। आगामी वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में मोदी मैजिक की चमक फीका पड़ने लगा है।

मोदी मैजिक पर उठते सवाल आगामी चुनाव में भाजपा हुई बेहाल यह हम या कोई विपक्षी राजनीतिक दल द्वारा नहीं कह रहा है बल्कि इस संदर्भ में विगत दिनों आर एस एस के मुखपत्र ऑर्गनाइजर के संपादकीय पेज में छपे लेख सें भारतीय राजनीति की दिशा दशा में परिवर्तन के संकेत दिए है। इस लेख के माध्यम से मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र की भाजपा सरकार के लिए दिशा निर्देश जारी कर दी है। इस वर्ष में होने वाले राज्यस्थान, मध्यप्रदेश, छतीसगढ, तेलंगाना व मिजोरम 5 राज्यों व अगले वर्ष 24 में लोक सभा के चुनाव होने वाले है। आप को बता दे कि अभी इन पाँच राज्यों से राज्यस्थान, छतीसगढ़ में कांगेस, तेलंगाना में वीआरएस व मिजोरम में मिजो नेशनल फ्रंट की सरकार व मध्यप्रदेश में राजनीति हॉर्स ट्रेड़िग में महारत हासिल करने वाली भाजपा की सरकार है।

भारतीय राजनीति की विशेषज्ञ व राजनीति ज्योतिषियों की कुण्डली गणना के अनुसार भाजपा व उनके नेताओं की ग्रह स्थिति व महादशा ठीक नहीं चल रहा है। हिमाचल में हार बिहार में पार्टी सता गठबंधन से बाहर होना,दिल्ली में 15 वर्षो से एमस डी एक छत्र राज्य करने वाली भाजपा बाहर का रास्ता दिखाया गया इतना ही कनार्टक के नाटक में कांग्रेस की करिशमाई जीत व भाजपा की करारी हार मिलने सें पार्टी के संगठन व शीर्ष नेतृत्व पर सबाल उठने लगी है। ऐसे में नागपुर के केद्र में गहन चिन्तन मनन व मंथन का दौर चलना लाजिम है। दिल्ली दरबार में आनन फानन पार्टी के जमीनी हकीकत व सच्चाई को जानने व समझने की पार्टी के अन्दर व बाहर गहन विचार मंथन का मैराथन होना स्वाभाविक है। इस श्रंखला में आरएसएस के मुख्यपत्र ऑर्गनाइजर के संपादकीय लेख के माध्यम से भाजपा को बड़ी नसीहत दे है। आगामी वर्ष 2024 के लोक सभा चुनाव व इस वर्ष राज्यों के विधान सभा चुनाव से पहले इसके कई सियासी मायने लगाये जा रहे है। इस प्रकरण से सता के सियासी गलियारे में खलबली मच गयी है।पार्टी के अन्दर बाहर दबी जुबान से कई सवाल उठ रहे हैं कि आखिर संघ ने भाजपा को आखिर क्यों ऐसी कडी नसीहत दी? संघ के पास कोई चारा नहीं था क्या।संघ को कांग्रेस की बढ़ती लोकप्रियता व विपक्षी राजनीतिक दलों का 2024 चुनाव से पहले गहन-चिन्तन व गठवन्धन के रणनीति से संघ को भाजपा की हार सताने लगीहै। आदि आदि। आइए हम इसे समझने की कोशिश करते है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखपत्र ऑर्गनाइजर के जरिए भारतीय जनता पार्टी को बड़ी नसीहत दी है। ऑर्गनाइजर ने अपने संपादीय लेख में भाजपा को सचेत करते हुए कहा है कि अगर पार्टी को चुनाव जीतते रहना है तो सिर्फ अब मोदी मैजिक और हिंदुत्व का चेहरा काफी नहीं होगा। इस लेख के माध्यम से संघ ने कर्नाटक में भाजपा की हार का कारण भी बताया है। चुनावी वर्ष में संध के मुखपत्र में छपे इस लेख ने सता के सियासी गलियारे में खलबली मचा दी है। विगत दिनों कर्नाटक के विधान सभा चुनाव में भाजपा को मिली करारी हार का विश्लेषण करते हुए ऑर्गनाइजर के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कर्नाटक चुनाव का जिक्र करते हुए लिखते है कि कर्नाटक विधान सभा चुनाव में भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा था। केंद्र में सत्ता संभालने के बाद पहली बार प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी व भाजपा को विधानसभा चुनाव में भ्रष्टाचार के आरोपों का बचाव करना पड़ा है। परिणाम इस चुनाव में भाजपा के 14 मंत्री चुनाव हार गए। जो पार्टी के लिए चिंता व चिन्तन का विषय है। उन्होने अपने लेख में उल्लेख किया है कि जब राष्ट्रीय स्तर के नेतृत्व की भूमिका न्यूनतम होती है और कनार्टक विधान सभा चुनावीअभियान में स्थानीय स्तर पर रखा जाता है, जिसका कांग्रेस को फायदा होता है। परिवार द्वारा संचालित पार्टी ने राज्य स्तर पर एक एकीकृत चेहरा पेश करने की कोशिश की और 2018 के चुनावों की तुलना में पांच प्रतिशत अतिरिक्त वोट हासिल किए। केवल पीएम मोदी के चेहरे और हिंदुत्व के बल पर भाजपा चुनाव नहीं जीत सकती है। पार्टी को चुनाव जीतने के लिए स्थानीय स्तर पर नए नेताओं को आगे लाना होगा। केंद्र से तालमेल बिठाकर काम करना होगा,तभी विधानसभा चुनावों में पार्टी को जीत मिल सकती है।

प्रफुल्ल केतकर ने पीएम मोदी की सत्ता के नौ वर्षों की उपलब्धियों की प्रशंसा की है। उनका मानना है कि 2014 में भारत में अधिकांश लोगों ने लोकतंत्र में विश्वास खो दिया था। प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार ने महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के साथ उन आकांक्षाओं के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और कई मोर्चों पर काम किया है। उन्होने लिखा है कि बीजेपी नेतृत्व ने चुनाव में राष्ट्रीय मुद्दों को लाने का प्रयास किया,वही कांग्रेस ने स्थानीय मुद्दे को जनता के बीच में गये। जो कांग्रेस की जीत का सबसे बड़ा कारण यह ही है। भाजपा कर्नाटक चुनाव में जातीय मुद्दों के जरिए वोट को जुटाने का प्रयास हुआ,पार्टी ये भुल गए कि राज्य टेक्नोलॉजी का हब है। ऐसे में ये चिंता का विषय है।

आरएसएस के मुखपत्र के संपादकीय लेख पर कांग्रेस पार्टी का कहाँ पीछे रहने वाली थी। भाजपा को लेकर संघ द्वारा दी गई नसीहत पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस नेता और कर्नाटक के प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि बीजेपी और आरएसएस ने स्वीकार किया कि कर्नाटक के लोगों ने पीएम नरेंद्र मोदी को नकार दिया है। वो लोग जो पीएम मोदी का महिमा मंडित करते थकते नहीं हैं, उन्हें भी इससे सबक लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में राजनीतिक विश्लेषक की राय में संघ ने यह उदाहरण भाजपा को भले ही कर्नाटक चुनाव का दिया हो, लेकिन संघ का इशारा हाल के दिनों में हुए सभी राज्यों के चुनाव पर है। संघ इसके जरिए 2024 लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा को अगाह करने की कोशिश कर रहा है। ताकि जो चूक कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश के विधान सभा के चुनाव में भाजपा से हुई है वो आगे के चुनाव में न हो। संघ ने अपने इस संपादकीय से भाजपा को तीन बड़े संदेश दिए हैं।

(1) पार्टी को नए नेतृत्व को तैयार करना होगा। आरएसएस ने स्पष्ट संकेत दिया है कि मोदी का नाम हर चुनाव में इस्तेमाल करना ठीक नहीं है। मोदी के नाम पर भाजपा आखिर कब तक चुनाव लड़ती रहेगी? इसलिए पार्टी को स्थानीय चेहरों की तलाश करनी चाहिए। स्थानीय स्तर पर नए चेहरों को मजबूत कर उन्हें जिम्मेदारियां दी जानी चाहिए। नए चेहरों के आने से पार्टी में नेतृत्व की नई पीढी तैयार होगी, जिससे आने वाले दिनों में पार्टी को लाभ होगा।

(2) वर्ष के अंत में आगामी 5 राज्यों के विधान सभा चुनावों में राष्ट्रीय की जगह क्षेत्रीय मुद्दों को अहमियत दी जा। भाजपा हर चुनाव में राष्ट्रीय मुद्दों को आगे करती है। जिसका कई जगह इसका लाभ मिलता है, कई बार नुकसान भी उठाना पड़ा है।

(3) भाजपा को भ्रष्टाचार पर सतर्क होना पड़ेगा। सन 2014 में पीएम मोदी ने पूरा चुनाव ही भ्रष्टाचार के मुद्दे पर लड़ा था।

गलत जानकारी वाले पूर्व प्रधानमंत्री जानसन की सदस्

संक्षिप्त खबरें

नाबालिग लड़की से दुष्कर्म का मामला दर्ज

मुजफ्फरपुर। गायघाट थाना क्षेत्र के एक गांव में 11वर्षीय नाबालिक लड़की के साथ बेरहमी से दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। इस संबंध में पीड़िता की मां ने थाने में प्राथमिकी दर्ज. कराई है। जिसमें गांव के ही पचास वर्ष के एक व्यक्ति को आरोपित किया गया है।बताया कि उनकी पुत्री शनिवार को खेत से घास लेने गई थी। इसी बीच गांव के ही 50 वर्षीय एक दरिंदे ने नाबालिक को पकड़ कर जबरदस्ती दुष्कर्म किया। जब चीखने चिल्लाने की आवाज सुन खेत में काम कर रहे एक ग्रामीण को देख उसे छोड़ कर फरार हो गया। इसके बाद पीड़िता के परिजनों ने दर्द से कराहती बच्ची को ईलाज हेतु गायघाट सीएचसी में लाया। जहां चिकित्सकों ने पीड़िता को प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर ईलाज के लिए एसकेएमसीएच रेफर कर दिया। थाना अध्यक्ष मोनू कुमार ने बताया कि आरोपित को बोच हां थाना क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया गया है। वह घटना के बाद गांव छोड़कर फरार हो गया था। इसके साथ ही आगे की कार्रवाई किया जा रहा है।

जिला विकास समन्वय समिति की बैठक हुई आयोजित

पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे महत्तपूर्ण जरूरत है-डीएम

- आने वाले दिनों में आठ लाख नए पेड़ लगाए जाएंगे।
- नल जल के सभी अपूर्ण कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराने का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जिला विकास समन्वय समिति की बैठक आयोजित हुई। जिलाधिकारी ने बैठक में सात निश्चय योजना जल जीवन हरियाली सहित अन्य कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर एजेंडाबार समीक्षा किया जिलाधिकारी ने कुओं के जीर्णोद्वार पोखरे के जीर्णोद्वार रेन वाटर हार्वेस्टिंग और सोखता निर्माण में हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे महत्तपूर्ण जरूरत है। उन्होंने कहा कि बढ़ती गर्मी और घटते भूगर्भीय जल स्तर को देखते हुए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है। इसके लिए वृक्षारोपण के महत्व को रेखांकित करते हुए आने वाले दिनों में आठ लाख नए पेड़ लगाए जाएंगे। उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि वर्षा ऋतु के आगमन को नजदीक देखते हुए वृक्षारोपण कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए अभी से तैयारियां शुरू कर दी जाएं। डीआरसीसी की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा डीआरसीसी के मध्यम से इंटर पास और काम की तलाश कर रहे बीस से पच्चीस साल के बीच के नौजवानों के लिए भत्ता दिए जाने का प्रावधान है। इस प्रकार की कई महत्वकांक्षी योजनाएं जिले में संचालित हैं। इनकी जानकारी प्रदान करने के लिए सभी प्रमुख शिक्षण संस्थानों के समक्ष होर्डिंग लगाए जाएं। उन्होंने डीआरसीसी प्रबंधक को प्रखंड स्तर पर कैंप लगाकर योग्य लाभुकों को लाभ प्रदान किए जाने की पहल करने के निर्देश दिए हैं। नल जल की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि प्रथम चरण में जिले के सभी वार्डों के फंक्शनल नल जल इकाइयों का चार्ज लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग को सौंप देना है। इसके लिए उन्होंने प्रखंड स्तर पर प्रगति की समीक्षा की और आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने सभी प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि नल जल के सभी अपूर्ण कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराएं। जिलाधिकारी ने सभी प्रखंडों में लंबित सेवांत लाभ के मामलों की समीक्षा करते हुए कहा कि अक्सर चार्ज के आदान प्रदान को लेकर मामले लंबित चले आते हैं जिससे बाद में कठिनाई बढ़ती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जून में एक ही कार्य स्थल पर तीन वर्ष से कार्यरत सभी कर्मियों के तबादले होंगे। इसके मद्देनजर समय से एलपीसी दिए जाने की आवश्यक पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द कार्यालयों में कैश बुक अपडेट करवा लें। ताकि स्थानांतरण की स्थिति में परेशानियों का सामना न करना पड़े इसके अतिरिक्त लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान सामाजिक सुरक्षा कोषांग द्वारा प्रदान की जा रही पेंशन सांसद आदर्श ग्राम योजना राशन कार्ड के लंबित मामलों सहित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं की समीक्षा की गई जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री आवास योजना के अंतर्गत प्राथमिकता देते हुए सभी महादलित टोलों के योग्य लाभुकों की पहचान की जाए। ताकि योजना को समय से लागू किया जा सके।उक्त बैठक में उप विकास आयुक्त, विशाल राज, नगर आयुक्त अनिल चौधरी, प्रभारी पदाधिकारी जिला विकास शाखा, निधि राज, जिला आपूर्ति पदाधिकारी, वंदना कुमारी, जिला पंचायती राज पदाधिकारी शैलेंद्र कुमार, अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, डॉ आर के सिंह, कार्यपालक अभियंता विद्युत, मो अरमान सहित जिले के सभी प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी और प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी उपस्थित थे।

गढ़हरा में रेल वैगन पुनरुद्धार कारखाना चालू होने तक होगा आंदोलन

- पूर्व रेलमंत्री लालू प्रसाद की जयंती पर उनके द्वारा किया गया शिलान्यास रेल वैगन पर बोले नेता और कार्यकर्ता

गढ़हरा, बरौनी। रेलवे पुनरुद्धार समिति, गढ़हरा बरौनी की ओर से पूर्व रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव का 76वें जन्मदिवस पर समर्थकों ने चरणबद्ध आंदोलन का शंखनाद किया। इस मौके पर गढ़हरा बरौनी रेल परिक्षेत्र के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा स्वीकृत परियोजनाओं को पूरा कराने के लिए चरणबद्ध आंदोलन करने का निर्णय लिया गया। संयोजक अशोक कुमार मुन्ना ने कहा कि राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दोनों केंद्रीय रेलमंत्री रह चुके हैं। बीते 17 अक्टूबर, 2007 को तात्कालिक रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव गढ़हरा पहुंच रेलवे वैगन पुनरुद्धार कारखाना का शिलान्यास किया था। कार्यक्रम रेलवे इंटर कॉलेज गढहरा में हुआ था। गढ़हरा के लिए पहली सौगात करोड़ों की लागत से वैगन कारखाना का टाइल्स लगा हुआ कई कमरे बनाये गये। टावर टंकी बनाया गया, जो अर्द्धनिर्मित भवन आदि आज खंडहर में तब्दील हो रहा है। इसका विकास करने के बजाय यह कैम्पस बिहार सरकार के वन विभाग को सौंप दिया गया। जो आश्चर्यजनक है। श्री मुन्ना ने कहा कि शिलान्यास कार्यक्रम में रेलमंत्री के साथ मंचासीन नेताओं ने भी मुंह बंद कर लिया। आज कारखाना में सैकड़ों लोगों की नौकरी और सैकड़ों परिवार को रोजगार मिलना तय था। कहा कि एशिया प्रसिद्ध गढहरा रेलवे यानान्तरण की संपूर्ण बंदी 1995 में ही हो गयी। इसके बाद लालूजी के आगमन से विकास का द्वार खुलने की आशा जगी थी। बैठक में प्रगतिशील सहयोग समिति के सदस्य मो खालिद, रामाधार यादव, सरोज कुमार पाठक, सुरेंद्र साह, रामदास पासवान, लक्ष्मी राय, फूदन महतो, गोपाल कुमार चौधरी, महेंद्र सिंह सहित दर्जनों श्रमिक शामिल थे।

भाकपा अंचल कमेटी की बैठक आयोजित

बखरी, बेगूसराय प्रात : किरण संवाददाता

भाकपा बखरी अंचल कमिटी ने उड़ीसा ट्रेन हादसा से हुई मानव क्षति पर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित किया। एक स्वर से सभी नेताओं ने कहा कि इतना बड़ा ट्रेन हादसा लापरवाही की वजह से हुई है। सरकार अपनी जिम्मेवारी से भाग नही सकती।सभी मृतक परिवारों को उचित मुआवजा मिलनी चाहिए। श्रद्धांजलि सभा के उपरांत विधायक सूर्यकान्त पासवान, अंचल मंत्री शिव सहनी, सहायक अंचल मंत्री जितेन्द्र जीतू, संजय राय, सुरेश सहनी, पूर्व मुखिया राम प्रयाग राय के नेतृत्व में अंचल परिषद की बखरी की बैठक हुई। जिसमें शाखा मंत्री अशोक केशरी, सिकंदर पासवान, त्रिवेणी महतो, रामसेवक महतों, भुवनेश्वर सदा, प्रेम कुमार भारती, अशोक गुप्ता, सावित्री देवी, समदर्शी नंदन विद्यार्थी ने अपना विचार रखा। सूर्यनारायण सिंह स्मारक भवन बखरी में आयोजित बैठक की अध्यक्षता राटन मुखिया प्रतिनिधि सुरेश राम की अध्यक्षता में हुई। बैठक में विभिन्न गांवों में हुई भीषण अगलगी की घटना पर दुख जताया गया एवं सरकार से मांग की गयी कि सभी अग्निपीड़ित परिवार को आवास मुहैय्या किया जाना चाहिए। साथ ही आमलोगों से भी अपील की कि खतरनाक पछुआ हवा में सबलोग सावधानी बरतें। लकड़ी पर खाना बनाने वालों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जिला पार्टी द्वारा चलाये गए पदयात्रा कार्यक्रम में संग्रहित समस्या के निदान हेतु 20 जून को समाहरणालय पर आयोजित सत्याग्रह कार्यक्रम में जमजुट कर भाग लेने पर सहमति बनाई गई। साथ ही महागठबंधन दल द्वारा 15 जून को प्रखण्ड मुख्यलय पर आयोजित महाधरना में पार्टी कार्यकर्ता बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे।

टास्कफोर्स की बैठक में सम्बंधित विभागों को दिए गये आवश्यक निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के मद्येनजर समाहरणालय सभागार में जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक हुई। आपदा के अपर समाहर्ता अजय कुमार ने पीपीटी के माध्यम से उपस्थित सदस्यों के सामने आपदा के तैयारी की रूप रेखा रखी। कहा गया कि सभी प्रखंडों में वर्षा मापक यंत्र कार्यरत होने के संबंध में निरीक्षण कर ले। प्रतिदिन सुबह 8 बजे वर्षा माप के समन्वय प्रतिवेदन करे। संकटग्रस्त की पहचान करे साथ ही धात्री एवं गर्भवती महिलाओं को चिन्हित कर सूचीबद्ध करने का निदेश दिया गया। तटबंधों की सुरक्षा को लेकर कार्यपालक अभियंता को निरीक्षण करने साथ ही 3 दिन के भीतर सभी संबंधित अंचलाधिकारी को प्रतिवेदन देने का निर्देश दिया गया।अनुमंडल पदाधिकारी और कार्यपालक अभियंता को संयुक्त रूप से निरीक्षण करने को कहा गया। कंट्रोल रूम 15 जून से लगातार कार्यशील रहेगा। जानकारी दी गई कि जिला आपातकालीन संचालन केन्द्र चालू है। आपातकालीन संचालन केन्द्र से प्रतिदिन कर्मी आपदा को लेकर प्रतिवेदित करेंगें। नाव का रजिस्ट्रेशन, परमिट, फिटनेस तथा उसके एकरारनामा को अद्यतन करने का निदेश दिया गया। निर्देश दिया गया कि 20 जून तक वांछित नावों का पंजीकरण करा ले। शरण स्थल पर शौचालय, पेयजल, बैनर, आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी निदेश दिया । कैंप इंचार्ज को भी चिन्हित करने तथा अगलगी, वज्रपात का ससमय रिपोर्ट भेजने का निदेश सीओं दिया गया। बैठक में एडीएम राजस्व संजीव कुमार, एडीएम आपदा परीक्ष्यमान आईएस साराअशरफ, डीटीओ, आपदा प्रभारी तथा संबंधित पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

सीएचसी में गर्भवत्ति महिलाओं को अल्पाहार वितरण किया गया

खजौली, प्रात : किरण संवाददाता

खजौली के ओपीडी में दंत चिकित्सक डा. साहिद एकवाल आयुष चिकित्सक डा. रमेश पासवान डा. विकास कुमार द्वारा तीन सो से ज्यादा गर्भवत्ति महिलाएं मरीजों को एएनसी जांच कर मुप्त में दवा मुहैया कराया गया सभी महिलाओं को सीएचसी की ओर से एक बोतल बिसलेरी शीतल पेयजल एव अल्पाहार दिया गया. डा. साहिद एकवाल ने बताया कि बिहार सरकार स्वास्थ समिति के निदेर्शानुसार प्रत्येक माह के 9 एव 21 तारीख को गर्भवत्ति महिलाएं को एएनसी जांच सीएचसी के ओपीडी में किया जाता है.उन्होंने कहा कि गर्भवत्ति महिलाएं को हेमोग्लोबिन ब्लड प्रैशर एचआईबी वीपी ब्लड सुगर एव एचसीएसएजी का जांच सीएचसी में कराया गया है.वही सीएचसी के स्वास्थ प्रबंधक अर्चना भट्ट ने कहा कि एएनसी जांच शिविर में डा. रमेश पासवान एव डा. विकास कुमार द्वारा सभी गर्भवत्ति महिलाओं को जांच के बाद सुरक्षित उपाय की जानकारी दी.उन्होंने जांच के दौरान गर्भवत्ति महिलाएं को खानपान सहित स समय दवा लेने की जानकारी दी. वही हेल्थ मैनेजर अर्चना भट्ट ने सभी गर्भवत्ति महिलाओं को जांच के बाद सीएचसी के सभागार में कुर्सी पर बैठाकर अल्पाहार के रूप में केला सेव बिस्कुट नमकीन भुजिया सहित एक लीटर बिसलेरी शीतल जल वितरण किया गया.वही एएनसी जांच के दौरान आयुष चिकित्सक डा. रमेश पासवान एव विकास कुमार ने कहा कि भीषण गर्मी के वावजूद भी सभी गर्भवत्ति महिलाएं अपने स्वास्थ के प्रति जागरूक रहने को लेकर सीएचसी में जांच के लिए महिलाओं की भीड़ उमड़ पड़ी. इस जांच शिविर में डियूटी पर तैनात फार्मांशिष्ट उमेंद्र कुमार एएनएम रानी कुमारी शबनम सिन्हा आशा फेसिलेटर एव सीएचसी सुरक्षा गार्ड मौजूद रहे।

पुलिस ने 133 कार्टन विदेशी शराब के साथ तीन वाहनों को किया जप्त

बेगूसराय। छौडाही ओपी की पुलिस ने ट्रक से 133 कार्टन विदेशी शराब के साथ तीन वाहनों को भी जप्त किया है। बरामद किए गए सभी शराब पंजाब राज्य निर्मित है। जो कि उत्तर प्रदेश नंबर की ट्रक से छौडाही ओपी थाना क्षेत्र में अन लोडिंग के लिए लाई गई थी। फिलहाल पुलिस ट्रक नंबरों के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्यवाही में जुटी है। बिहार में पूर्ण शराबबंदी रहने के बावजूद भी शराब तस्कर शराब लाने से बाज नहीं आ रहे हैं। गुप्त सूचना मिलने के बाद रेड मारकर बैगा गांव के बहियार से ट्रक से शराब तस्कर द्वारा अनलोड करने के पहले तीन गाड़ी के साथ 133 कार्टन विदेशी शराब को बरामद किया है। जिसकी कीमत लगभग 14 लाख रुपया आंकी जा रही है।

पिता ने पुत्र के ऊपर लगाया आरोप प्राथमिकी हुआ दर्ज

मधुबनी। मधुबनी जिला के खजौली थाना क्षेत्र के एकडारा गांव निवासी राम सेवक यादव ने अपने पुत्र अमरेंद्र कुमार के विरोध खजौली थाना में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज करायी है.उन्होंने अपने प्राथमिकी आवेदन में आरोप लगाया है कि मेरे पुत्र अमरेंद्र कुमार जो प्रायः शराब पिककर घर मे गाली गलौज एव मारपीट के साथ अप्रिय घटना करता रहता है.वही थाना क्षेत्र के दयालपाली गांव निवासी राम विलेक्षण सिंह ने थाना में आवेदन देकर अपने पुत्र नंद कुमार सिंह के विरोध में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है. उन्होंने प्राथमिकी आवेदन में दर्शाया है कि 11 जून को करीब 8.30 वजे रात्रि में मेरा पुत्र नंद कुमार सिंह नशे के हालत में मेरे एव अपनी बहन के साथ मारपीट कर एव घर मे रखे समान को तोड़ फोड़ कर नष्ट कर दिया .वही विरोध करने पर मुझे जान मारने की नीयत से मारपीट किया गया. वही मेरी पुत्री रितु कुमारी को जान मारने की नीयत से मारपीट किया गया.वही थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि आवेदन के आलोक में दोनो शराब पियक्कड़ को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया.

नव पदस्थापित थानाध्यक्ष को जनहित में मांग पत्र समर्पित किया भाकपा- माले भूषण सिंह

मधुबनी जिले के जयनगर प्रखंड के अंतर्गत देवधा के थाना नव पदस्थापित थानाध्यक्ष अमृत लाल वर्णवाल को भूषण सिंह प्रखंड सचिव भाकपा माले के नेतृत्व में देवधा के लोकल कमिटी सचिव रशीद अंसारी मुमताज नजाम के साथ शुभकामनाएं पत्र देते हुए थानाध्यक्ष से कमजोर गरीब मजबूर मजदूर और पीड़ित लोगों का फरियाद व्यवहारिक तरीके से सुनने और झूठा प्राथमिकी दर्ज नहीं करने अपराधी भू - माफिया तथा दोहरी चरित्र वाले व्यक्तियों पर आवश्यक कार्रवाई करने की मांग और नव पदस्थापित थानाध्यक्ष अमृत लाल वर्णवाल से किया गया है।

महागठबंधन दलों की बैठक आयोजित

- महागठबंधन ने रेल हादसे में मरने वाले लोगों के प्रति शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजली अर्पित किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। जयनगर महागठबंधन के आह्वान पर राज्यव्यापी आंदोलन के तहत 15 जून 2023 को आयोजित प्रखंड कार्यालय पर धरना को सफल बनाने के लिए पुराना नगर पंचायत कार्यालय जयनगर में राजद के प्रखंड अध्यक्ष उमेश यादव के अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसका संचालन भाकपा माले के प्रखंड सचिव भूषण सिंह ने किया बैठक देर संध्या में संपन्न हुआ । बैठक में भाकपा माले, भाकपा, माकपा, राजद, जदयू, कांग्रेस के दर्जनों नेतृत्वकारी साथियों ने भाग लिए। वक्ताओं ने भाजपा सरकार की 9 साल की तबाही बबार्दी के खिलाफ और जातीय गणना महंगाई बेरोजगारी संवैधानिक संस्थाओं के दुरुपयोग किसानों की आय दुगुनी करने उन्माद- उत्पात की राजनीति पर रोक लगाने , दलित- गरीबों की आवास एवं खाद्यान्न योजना बंद करने की साजिश के खिलाफ और बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने सहित कुछ अन्य प्रमुख सवालों पर राज्य के सभी प्रखंडों पर आगामी 15 जून 2023 को महागठबंधन दलों के बैनर से धरना- प्रदर्शन का आह्वान को सफल बनाने के लिए 13 जून से प्रचार प्रसार नुक्कड़ सभा लोगों की बड़ी संख्याओं में गोलबंदी और जनसम्पर्क अभियान महागठबंधन के नेतृत्वकारी साथियों के द्वारा चलाने और धरना में हजारों की संख्या में लोगों को भाग लेने का आवाह्न किया गया। बैठक में भाकपा माले के प्रखंड सचिव भूषण सिंह, मुस्तफा, महेश्वर पासवान, हसलेन , भाकपा के अंचल मंत्री राम नारायण बनरैत , शहर मंत्री श्रवण साह ,वार्ड पार्षद सुरज ठाकुर, शिवजी पासवान, वकील वैठा , दौरीक यादव , माकपा के जिला सचिव मंडल सदस्य जदयू के प्रखंड अध्यक्ष राजकुमार सिंह मुख्य पार्षद कैलाश पासवान जिला युवा अध्यक्ष संतोष साह राजेन्द्र प्रसाद कामत राजद प्रखंड अध्यक्ष उमेश यादव, प्रदीप कुमार प्रभाकर जयनारायण यादव , नौशाद अहमद गंगा चौधरी , अमीत यादव, राम जुल्म यादव सचिन चौधरी , कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष सुरेन्द्र महतो , अनुरंजन सिंह, रामचंद्र साह , सुजीत कुमार यादव समेत महागठबंधन के कार्यकताओं ने संबोधित किया अंत में रेलवे हादसे में मरने वाले लोगों के प्रति शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजली अर्पित किया गया।

पुलिस ने शराब के साथ अभियुक्त को किया गिरफ्तार

मधुबनी। मधुबनी जिला मुख्यालय से सटे रहिका थाना पुलिस ने शराब मामले में पियक्कड़ को 4 बोतल देसी नेपाली शराब के साथ किया गिरफ्तार शराबी को रहिका हॉट से लाल पासवान पिता सियाराम पासवान ग्राम रहिका को गिरफ्तार कर लिया गया। वही कांड में फरार चल रहे अभियुक्त गांव सतलखा गांव निवासी लालबाबू साहनी को गिरफ्तार कर लिया गया गिरफ्तार लालबाबू साहनी के विरुद्ध फर्नीचर की दुकान में मारपीट कर जख्मी कर देने व गाली गलौज करने के आरोप में पूर्व में रहिका थाना में प्राथमिकी दर्ज किया गया था। कांड में फरार चल रहे अभियुक्तों को रहिका पुलिस के द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है गिरफ्तार दोनों अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में लेने हेतु व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेज दिया गया है अग्रिम कार्रवाई करते हुए 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में लेते हुए कारामंडल रामपट्टी मधुबनी भेज दिया है।

भाकपा ने की 15 जून को राज्यव्यापी धरना - प्रदर्शन को सफल बनाने की अपील

मुजफ्फरपुर, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी सभी इकाइयों से केन्द्र में भाजपा नेतृत्व वाली नरेन्द्र मोदी सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 15 जून को महागठबंधन द्वारा प्रखण्ड मुख्यालयों पर आयोजित धरना-प्रदर्शन की तैयारी में जुट जाने का आह्वान किया है। पार्टी के राज्य सचिवमंडल सदस्य अजय कुमार सिंह ने बयान जारी कर कहा कि जातिय गणना, मंहगाई, बेरोजगारी, संवैधानिक संस्थाओं का दुरूपयोग, संविधान - लोकतंत्र पर बढ़ते हमले, दलितों-गरीबों की आवास, खाद्य व अन्य योजनाओं में कटौती, किसानों की आय दुगूनी करने, एम॰एस॰पी॰ को कानूनी मान्यता देने तथा उन्माद-उत्पात की राजनीति पर रोक लगाने जैसे अनेक जनसमस्याओं से संबंधित मुद्दो को लेकर महागठबंधन दलों द्वारा आयोजित 15 जून के धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे। इन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के नौ वर्षों के कार्यकाल में अर्थव्यवस्था पूरी तरह चौपट हो गई है। महंगाई आसमान छू रही है। गरीब और गरीब हो गए हैं, तो पूंजीपतियों की संपत्ति में बेतहासा बढ़ोतरी हुई है। चार करोड़ से अधिक छोटे बड़े उधोग बंद हो गए हैं। युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रत्येक वर्ष दो करोड़ नौजवानों को नौकरी देने की घोषणा के बावजूद इस सरकार में बेरोजगारों की तादाद में लगातार बढ़ोतरी हुई है। प्रधानमंत्री का घोषणा केवल घोषणा ही बनकर रह गयी। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है। देश की जनता ठगा हुआ महसूस कर रही है। इन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में लोकतंत्र और संविधान सुरक्षित नहीं है। लोकतांत्रिक अधिकारों पर लगातार हमले किये जा रहे हैं। संवैधानिक अधिकारों को समाप्त किया जा रहा है। अपने विरोधियों को जांच एजेंसियों द्वारा डराया- धमकाया जा रहा है। इस सरकार में दलितों, आदिवासियों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों पर हमले बढ़े हैं। देश में साम्प्रदायिक तनाव बढ़े हैं। भाजपा समाज को बांटने का कार्य कर रही है।

सेना भर्ती रैली की समीक्षा बैठक

मुजफ्फरपुर। स्थानीय चक्कर मैदान सेना भर्ती कार्यालय परिसर में जिला पदाधिकारी एवं सेना के वरीय पदाधिकारी के बीच सेना भर्ती रैली को लेकर समीक्षा की गयी। जिसमें अपर समाहर्ता आपदा, डीएसपी होमगार्ड, नजारत, कार्यपालक अभियंता भवन, डीपीआरओ सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित हुए। इसमें मुख्य रूप से चल रहे तैयारियों का जायजा लिया। आवासन हेतु पंडाल, दौड़ ट्रेक मैदान, पेयजल, शौचालय तथा अन्य आवश्यक व्यवस्था का मुआयना किया गया। सभी संबंधित पदाधिकारी को इस बावत ससमय व्यवस्था सुनिश्चित करने का निदेश दिया गया। सेना भर्ती निदेशक कर्नल रोमिल विश्वास ने जिला प्रशासन से मोबाइल टॉयलेट सीसीटीवी टैंकर जलदूत, दवा की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। डीएम ने 14 की शाम तक सभी व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देष दिया।

सच्चा व अच्छा संगठन हमेशा आपसी समन्वय व तालमेल से चलता: आरके झा

बरौनी रिफाइनरी की टाउनशिप स्थित जुबिली हॉल में बीटीएमयू के 24वें वार्षिक अधिवेशन के दूसरे सत्र में आयोजित आमसभा

बेगूसराय, प्रात : किरण संवाददाता

बरौनी तेलशोधक मजदूर यूनियन की कार्यप्रणाली प्रशंसनीय है।सच्चा व अच्छा संगठन हमेशा आपसी समन्वय व तालमेल से चलता है। उपरोक्त बातें बरौनी रिफाइनरी के कार्यपालक निदेशक सह रिफाइनरी प्रमुख आरके झा ने बीटीएमयू के 24वें वार्षिक अधिवेशन के दूसरे सत्र में आयोजित आमसभा में कही। उन्होंने कहा कि बीटीएमयू, प्रबंधन और कर्मचारियों के मध्य एक मजबूत कडी की तरह कार्य करता है। श्री झा ने इंडियन ऑयल के अध्यक्ष का शुभकामना संदेश पर पढा। कार्यपालक निदेशक (तकनीकी) ने संगठन की महत्ता पर बोलते हुए कहा कि सच्चा संगठन सदैव अपने उद्देश्यों की पूर्ति सजग व समर्पित रहता है। अकेला मनुष्य शक्तिहीन होता है। लेकिन संगठन से जुडने पर उसके अन्दर शक्ति का समावेश हो जाता है। इस आमसभा में बरौनी तेलशोधक मजदूर यूनियन के अतिरिक्त महासचिव संजीव कुमार ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने यूनियन की उपलब्धियों व आगामी चुनौतियों की विशेष रूप से चर्चा की।नवनिर्वाचित कार्यकारी अध्यक्ष रजनीश रंजन ने नयी कार्यकारिणी सदस्यों को बधाई दी तथा सदैव कर्मचारियों के हितों के लिए कार्य करने की सलाह दी।

इस अवसर पर भूतपूर्व विधायक अवधेश राय, महाप्रबंधक एस सत्यव्रती, मुकेश मिश्रा (उपमहाप्रबंधक मानव संसाधन), विनोद कुमार (सचिव, ऑफिसर एसोसिएशन), नीरज कुमार(मुख्य प्रबंधक), वरीय उपाध्यक्ष संजय प्रसाद सिंह, सहायक महासचिव रमेश कुमार, उपमहासचिव साइमन मूर्म, संगठन मंत्री भोगेंद्र कुमार कमल, भाकपा संगठन सचिव भोगेंद्र कुमार कमल समेत काफी कर्मचारी उपस्थित थे। सभा की अध्यक्षता यूनियन के कार्यकारी अध्यक्ष (प्रभारी) आशुतोष कुमार सिंह ने की। जबकि संचालन यूनियन के सचिव वागीश आनंद ने किया। इस अवसर पर यूनियन से जुडे पुराने साथियो को सम्मानित भी किया गया।

राष्ट्रीय प्रतियोगिता एसजीएफआई अंडर-19 में बेगूसराय के कुश्ती खिलाड़ी ने जीता कांस्य पदक

बेगूसराय प्रात : किरण संवाददाता

सोमवार को जिला कुश्ती संघ बेगूसराय के सचिव सह एनआईएस कोच कुंदन कुमार ठाकुर ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर कुश्ती प्रतियोगिता छत्रसाल स्टेडियम दिल्ली में अंडर-19 एसजीएफआई राष्ट्रीय विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित थे। जिसमें बेगूसराय के खिलाड़ी सहित पूरे बिहार के चयनित खिलाड़ी बिहार टीम की ओर से राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु 5 मई को दिल्ली रवाना हुई थी। दिल्ली में एसजीएफआई राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता 6 जून से 10 मई तक प्रतियोगिता आयोजित हुई। बेगूसराय जिले के खिलाड़ी ने राष्ट्रीय स्तर पर जिले का नाम रोशन करने का काम किया। जिसमें कांस्य पदक प्राप्त करने में सफल रहे। जिले के तेघरा प्रखंड के तेघरागंज वार्ड नंबर 14 निवासी कारी महतो के पुत्र 67 किलो ग्राम मे करण कुमार ने 66 बी एसजीएफआई राष्ट्रीय अंडर-19 विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त कर बेगूसराय जिले के गौरवान्वित किया। जिला कुश्ती संघ के सचिव कुंदन कुमार ठाकुर ने बताया कि करण के अलावा भी बेगूसराय के दो बालिका खिलाड़ी भी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लिए थे। जिन्हें खाली हाथ लगा। बेगूसराय से भाग लेने वाले खिलाड़ी सलोना बखरी निवासी मुकेश स्वर्णकार की पुत्री निर्जला कुमारी और विनोदपुर निवासी मुकेश कुमार की पुत्री जुगनू भारद्वाज ने भाग लिया। 2023 में करण कुमार ने पदक प्राप्त कर जिला का नाम रोशन किया। इससे पूर्व भी 2018 में बेगूसराय को कांस्य पदक प्राप्त हुआ था। एसजीएफआई राष्ट्रीय स्तर कुश्ती प्रतियोगिता में हीरा कुमार यादव ने जिले को एसजीएफआई में पहला पदक दिलाए थे। राष्ट्रीय प्रतियोगिता से पूर्व राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता जो छपरा में 28 मई को आयोजित थी। बेहतर प्रदर्शन करने वालों खिलाड़ी का चयन राष्ट्रीय एसजीएफआई कुश्ती प्रतियोगिता के लिए सिलेक्शन किया गया था। करण कुमार ने परिवार एवं गांव, जिला के साथ-साथ राज्य का नाम रोशन करने का काम किया। इस उपलब्धि पर जिला कुश्ती संघ बेगूसराय तथा बिहार कुश्ती संघ पटना को हार्दिक बधाई दी। बिहार कुश्ती संघ के अध्यक्ष विशाल सिंह, महासचिव विनय कुमार सिंह, जिला कुश्ती संघ के मुख्य संरक्षक डॉ सुरेश प्रसाद राय, पूर्व मेयर संजय सिंह, पूर्व उप मेयर राजीव रंजन कोषाध्यक्ष डॉक्टर रंजन चौधरी, उपाध्यक्ष डॉ विक्रांत भास्कर, जिला कुश्ती संघ के सचिव सह एनआईएस कोच कुंदन कुमार ठाकुर, राज्य स्तरीय आयोजन समिति के अध्यक्ष सुनील कुमार, मेडिकल टीम के सुशील कुमार, संदीप कुमार, राहुल कुमार, पंकज कुमार पंडित, नंदन कुमार मणिकांत, बसंत शर्मा, विजय कुमार पोद्दार, कन्हैया झा, कुंदन कुमार, सुधीर कुमार, शशिकांत, चेतन आनंद, दीपक कुमार दीप इत्यादि लोग पदक प्राप्त खिलाड़ियों को उज्जवल भविष्य की कामना की।

संक्षिप्त खबरें

पंचायत समिति सदस्य ने सार्वजनिक शौचालय का किया उदघाटन

पूर्णिया/ कसबा । पन्द्रहवीं वित आयोग योजना के तहत पंचायत समिति अंतर्गत सबदलपुर पंचायत वार्ड संख्या 12 के सबदलपुर गांव में 5 लाख 49 हजार की लागत से सार्वजनिक शौचालाय का निर्माण का विधिवत उद्घाटन पंचायत समिति सदस्य दिलीप प्रसाद साह के हाथों फीता काटकर किया गया। इस मौके पर पैक्स चैयरमैन प्रदीप महलदार, समाजसेवी गंगा प्रसाद चौहान, नाथू लाल दास, महावीर दास, संजय साह, सुरेन दास समेत दर्जनों गणमान्य मौजूद थे। इस मौके पर पंचायत समिति सदस्य दिलीप प्रसाद साह ने कहा कि सार्वजनिक शौचालय का निर्माण पन्द्रवीं वित्त के द्वारा की गई है। इस शौचालय से गांव के महिलाओं को शौच आदि क्रिया करने में काफी सहूलियत होगी तथा स्वच्छ समाज का निर्माण में सहयोग प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि महिलाओं व पुरुषों को आये दिन देखा जाता है कि सड़क के किनारे तथा खेत खलिहान में शौच खुले आसमान नीचे में प्रयोग किया जाता रहा है। अब गांव के लोगों को बाहर में जाने की आवश्यकता नहीं है वह अपना शौच आदि क्रिया नवनिर्मित शौचालय में करें। इससे समाज में बेहतर सन्देश जाएगा। वहीं सत्संग कमिटी के अध्यक्ष गंगा प्रसाद चौहान ने कहा कि पंचायत समिति सदस्य के द्वारा सार्वजनिक शौचालय निर्माण समाज के लिए बेहतर विकास का एक कड़ी है ।सार्वजनिक शौचालय निर्माण से गांव के महिला तथा पुरुषों को सुलभ शौचालय का सौगात मिली है। इस जगह पर सार्वजनिक शौचालय निर्माण का कल्पना हम समाज वासी नहीं कि थी वर्तमान समय मे यह बनकर तैयार हो गया है और उसे बेहतर ढंग से बनाया गया है। यह शौचालय नहीं समाज को स्वच्छता और जागरूकता का संदेश मिला है ताकि स्वच्छ भारत निर्माण की कल्पना को साकार किया जा सकें।

ग्रामीण स्वच्छता एवं पोषण दिवस को लेकर स्वास्थ्य कर्मी एवं जनप्रतिनिधियों की बैठक

पूर्णिया/ केनगर । प्रखंड के काझा, बिठनौली पूरब, बनभाग चुनापुर समेत पंचायत क्षेत्र में विशेष ग्रामीण स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस मनाया गया। वहीं दूसरी ओर विशेष ग्रामीण स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस मनाने को लेकर केनगर पीएचसी के स्वास्थ्य कर्मियों द्धारा सबंधित पंचायत के मुखिया की अध्यक्षता में बैठक का भी आयोजन किया गया। काझा पंचायत के काझा सर्किट हाउस परिसर में मुखिया राजेश कुमार साह, बिठनौली पूरब पंचायत में मुखिया निस्बत परवीन, बनभाग चुनापुर पंचायत में मुखिया मो असफाक आलम की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में यूनिसेफ के जिला समन्वयक मुकेश कुमार गुप्ता द्वारा गर्भवती महिलाएं, धात्री, किशोर किशोरी एवम योग्य दंपती के स्वास्थ्य, पोषण एवम स्वच्छता संबंधी सेवाओं पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। इस मौके पर संगीता कुमारी एल एस, सभी आशा, आंगनवाड़ी, नर्स, वार्ड प्रतिनिधि महेश यादव, कुमोद पासवान, डोमी साह, स्वच्छता पर्यवेक्षक धर्मेन्द्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

विश्व बाल श्रम दिवस पर चाइल्ड लाइन के द्वारा निकाली गयी जागरूकता रैली

पूर्णिया । विश्व बाल श्रम दिवस पर श्रम संसाधन विभाग एवं चाइल्डलाइन द्वारा निकाली गई कौशल विकास के छात्र एवं छात्राओं के द्वारा प्रभात फेरी हर साल 12 जून को बाल श्रम निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है और लोगों को बाल श्रम के प्रति जागरूक किया जाता है। कार्यशाला में बच्चों को उनके बचपन से जोड़कर उन्हें शिक्षित करने के संबंध में भी बताया गया। बाल श्रम के प्रमुख कारणों के गरीबी और अशिक्षा ही प्रमुख कारणों से बच्चे कम उम्र में श्रम से जुड़ जाते हैं इसलिए बच्चों को शिक्षा से जोड़ना और बचपन देना उनका अधिकार है। भारत सरकार द्वारा भी बाल श्रम प्रतिशोध अधिनियम 1986 एवं शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के माध्यम से बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए एवं बाल श्रम में संलग्न करने वालों को बंद करने का प्रावधान है। शहर में चला जन जागरूकता एवं रैली अभियान के उपरांत श्रम संसाधन विभाग चाइल्डलाइन के द्वारा समाहरणालय सभागार गेट से आरएनसा चौक, भट्ठा, नेवालाल लाल चौक, लाइन बाजार शहर के इत्यादि जगह पर रैली निकाली गई जिसमें बच्चियों के द्वारा नारा दिया गया बाल मजदूरी बंद करो बंद करो, खेल पढ़ाई और प्यार यह सब हम बच्चों का अधिकार, शिक्षा दे शक्ति बाल मजदूरी से मुक्ति, हम भी है किसी आंखो के नूर हमें मत बनाओ बाल मजदूर, बाल मजदूरी बंद करो बंद करो। बाल श्रम के मामलों में चाइल्ड लाइन के टोल फ्री नंबर 1098 पर दे सूचना जिसमें शहर वासियों एवं व्यापारियों को अपने प्रतिष्ठानों में बालकों को नियुक्त नहीं करने की अपील करते हुए पंपलेट बांटे गए जिसमें बाल श्रम से संबंधित कानून की जानकारी दी गई।

स्कूल में पढ़ाई के नाम पर शिक्षक करते हैं बच्चों से सौचालय की साफाई : अभिभावक

मध्यान भोजन में टीचर ने खिला दिया बच्चों को कीड़ा वाला खाना

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले भर के स्कूलों में सर्वशिक्षा अभियान को मजबूत बनाने के लिए स्कूली बच्चों के लिए मिडडे मील योजना के तहत विद्यालय में बच्चों को भोजन करने की व्यवस्था की गई है लेकिन नवगछिया के इस्माइलपुर प्रखंड स्थित नारायणपुर नया टोला मध्य विद्यालय में मिड डे मील के खाना खाने से कई बच्चे बीमार हो गये है। वही आक्रोशित ग्रामीणों ने

आनन फानन में सभी बीमार बच्चों को नजदीकी निजी में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां मौजूद चिकित्सकों ने सभी बच्चों की हालत को खतरे से बाहर बताया हैं। हालांकि पूरे मामले को लेकर के विद्यालय के प्राध्यापक कुछ भी कहने से इनकार कर रहे हैं। वही विद्यालय के बच्चों ने बताया कि स्कूल के मास्टर साहब हम लोगों से बाथरूम की साफ करवाते हैं, बाकायदा हम लोग उसे बाथरूम का प्रयोग भी नहीं करते हैं। बच्चों ने ये भी बताया कि हम लोग जब उसे बाथरूम का प्रयोग करने जाते हैं, तो मैडम हमें मार पीट करने लगती है, और साथ ही कहती हैं बाहर जाओ यह तुम्हारे बाप का शौचालय घर नहीं है, जो जब मन आए तब प्रयोग करोगे ।बच्चों ने कहा कि हम विद्यालय में सप्ताह के सातों दिन स्कूल तो आते हैं, लेकिन मध्यान भोजन का समुचित लाभ नहीं मिल पाता हैं। वही मध्यान भोजन के खाने में रोज-रोज कीड़े भोजन की थाली में निकल जा रहा हैं, जिसको देखकर हम लोग मध्यान भोजन को फेंक देते हैं। जिससे खाने के बाद हमारे शरीर में कमजोरी महसूस होने लगी है। वही स्कूल के बच्चों ने विद्यालय के शिक्षकों व प्रधानाध्यापक पर गम्भीर आरोप लगाते हुए कहा कि अपने खान-पान के लिए सर हमलोगो से पढ़ाई के दौरान ही दालमोट, चावल चीनी, तंबाकू बाहर के दुकान से लाने को कहते है। वहीं स्थानीय लोगों व जनप्रतिनिधि ने भी शिक्षकों को लेकर जमकर विरोध जताया है। आक्रोशित ग्रामीणों ने कहां एक तो विद्यालय समय पर शिक्षक आते ही नहीं हैं और आते भी है तो पढ़ने के वजह कुर्शिया तोड़ते नजत आते है। मध्यान भोजन के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति करते हैं। जहां सरकार द्वारा निर्धारित हर दिन विद्यालय में भोजन के मैन्यू के हिसाब से अलग अलग तरह के भोजन बच्चों को करना है, तो वही विद्यालय प्राचार्य व शिक्षक अपनी राशियों के गमण किये जाने के उद्देश्य से बच्चों को सिर्फ खिचड़ी ही मुहैया करायी जा रही है। वही उक्त खिचड़ी में न तो दाल का पता रहता है और नही सही चावल का हर दिन किड़ा युक्त भोजन बच्चों को करा कर बीमार बना दिया है।

एसएसपी ने अधिकारी व थानेदार के साथ की बैठक

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले के आसपास के क्षेत्र इलाके में अपराध का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है, एक तरफ पुलिस अपराध पर नकेल कसने के लिए अपनी रणनीति बनाती है तो वहीं दूसरी तरफ अपराधी अपनी अपराधिक घटना को अंजाम देने से बाज नहीं आते, इसी बाबत समाहरणालय स्थित समीक्षा भवन में वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार की अध्यक्षता में अपराध पर नकेल कसने व उनके विरुद्ध कार्रवाई करने की रणनीति को लेकर एक बैठक आहूत की। बैठक में जिलापरिक्षेत्र के सभी पुलिस अधिकारी व और थानाध्यक्ष शामिल हुए थे।

वही बैठक जारी करते हुए एसएससी आनंद कुमार ने कहां कि अपने अपने थाना में पंजीकृत व लंबित प्रकरणों व वांछित अपराधी की गिरफ्तारी को जल्द से जल्द सुनिश्चित करें, साथ ही सभी थानाध्यक्ष अपने-अपने थाना क्षेत्र में गस्ती गतिविधियों को सुदृढ़ करने के साथ लंबित चल रहे कांडों का निष्पादन करें। वही उन्होंने आदेशित करते हुए कहा है कि थानावार गुंडा पंजी रजिस्टर को अपटूडेट कर उनसे जुड़ी जानकारी प्राप्त करें। जिससे अपराधी के द्वारा घटित अपराध पर नकेल कसने के लिए जितने भी हथकंडे उसे अपनाएं साथ साइबर क्राइम को लेकर भी उन्होंने सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि अब कही जाने की जरूरत नहीं है, अपने जिले में भी महिला थाना भवन परिसर में साइबर थाना अवस्थित है किसी भी तरह की साइबर क्राइम की बातें सामने आने पर उसे जल्द से जल्द निपटारा करने की दिशा में सहयोग प्रदान करने के साथ कार्रवाई करना सुनिश्चित करें।

कुख्यात दो अपराधियों को पुलिस ने किया हथियार के साथ गिरफ्तार

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया पुलिस जिला क्षेत्र में अपराधियों का मनोबल सर चढ़कर बोल रहा है लेकिन पुलिस भी पीछे नहीं वह भी लगातार कार्रवाई करते हुए अपराधियों को खदेड़ कर पकड़ रही है, और सलाखों के पीछे भेज रही है। इसी कड़ी में नवगछिया पुलिस कार्यालय से अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई की दिशा में एक और मामला सामने आया है। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि विगत 10 जून की संध्या में नवगछिया पुलिस विभाग को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि नवगछिया के कुख्यात टॉप 10 अपराधकर्मी मतवाला हत्याकांड के आरोपी तथा नवगछिया के अतिरिक्त कटिहार एवं पूर्णिया जिला के करीब आध दर्जन कांडों के वांछित फिरार अभियुक्त महाराणा यादव अपने अन्य साथियों के साथ सधुआ दियारा इलाके में किसी बड़ी योजना को तैयार करने की मुहिम में जुटा हुआ है। उक्त सूचना के आलोक में त्वरित कार्रवाई करने की दिशा में पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर एसडीओपी नबगछिया के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन किया गया। गठित टीम में रंगरा ओपी, ढोलबज्जा थाना पुलिस को एकत्रित किया गया। वही गठित टीम द्वारा अविलंब घटनास्थल पर पहुँची जहां अपराध कर्मी पुलिस बल को देखकर दो व्यक्ति मौके से भागने लगा, जिसे पुलिस बल के सहयोग से खदेडकर पकड़ लिय गया। वही पुलिस बलों द्वारा बारी बारी से दोनो गिरफ्तार अभियुक्तों से पूछताछ करने पर एक ने अपना नाम महाराणा यादव और दूसरे ने अपना नाम नवल यादव बताया। तलाशी के कम में दोनो के पास से अवैध हथियार व कारतूस को बरामद किया गया है, वही पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दोनो को मौके से हिरासत में लेते हुए गिरफ्तार कर लिया गया है। वही पुलिस टीम द्वारा गिरफ्तार दोनो वांछित अभियुक्तों के विरुद्ध कानूनी सम्मत कार्रवाई के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। उक्त मामले को लेकर नवगछिया एसपी सुशांत कुमार सरोज ने प्रेसवार्ता करते हुए उक्त आशय की जानकारी दी। वही उन्होंने बताया कि दोनों अपराधी का अपराधिक इतिहास है, इससे पूछताछ की जा रही है, उम्मीद है कई केस का उद्भेदन इन लोगों से पूछने से सामने आ जाएगा। दोनों अपराधियों के पास से जो हथियार व सामग्री बरामद हुए हैं, उसमें एक लोडेड देशी पिस्तौल, विंडोलिया के अंदर से सात पीस 315 बोर का जिंदा गोली और लावा कंपनी का कीपैड मोबाइल बरामद हुआ है।

जदयू भागलपुर इकाई के द्वारा कार्यकारिणी बैठक हुई आयोजित

भागलपुर। जिले के स्थानीय विवाह भवन में आज जिला जनता दल यू भागलपुर के द्वारा कार्यकारिणी सदस्यों की एक अहम बैठक रखी गई जिसमें जदयू ने 2024 के चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी को जड़ से उखाड़ फेंकने की कवायद शुरू कर दी है, साथ ही नए सदस्यता ग्रहण किए सदस्यों का फूल माला व अंग वस्त्र देकर सम्मानित भी किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष बिपिन बिहारी सिंह ने की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जदयू के प्रमंडल पदाधिकारी अमरनाथ सरकार ने कहा कि आगामी 2024 में नीतीश कुमार लाल किला पर झंडा फहराएंगे और भाजपा को हम लोग जड़ से उखाड़ फेकेंगे।

जिले में पहली बार मेडिकाकॉन की शहर वासियों को मिलेगी सुविधा : भाजपा प्रवक्ता

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। मेडिका हॉस्पिटल, कोलकाता व हीलिंग टच हॉस्पिटल भागलपुर के द्वारा भागलपुर सहित आसपास के जिलों के चिकित्सकों के लिये भागलपुर में पहली बार मेडिकाकॉन की ओर से आसपास के लोगों को महानगर जैसी चिकित्सा सुविधा का लाभ अब भागलपुर में भी मिलने वाली है, जिसको लेकर चिकित्सकों की एक बैठक सह सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कई रोगों के बारे में डॉक्टरों के बीच कई बिंदुओं पर परिचर्चा के साथ विस्तृत वार्ता हुई है। आयोजित मेडिकल अधिवेशन में हृदय रोग, कैंसर, न्योरोसर्जरी, मूत्र रोग एवं क्रिटिकल केयर जैसे संवेदनशील विषयों पर जाने माने चिकित्सकों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किये जाने के साथ नई चिकित्सा पद्धति पर विचार-विमर्श किया गया है।

कार्यक्रम में कोलकता पटना एवं दिल्ली के सुप्रसिद्ध डॉक्टर ने अपना व्याख्यान देते हुए इलाज पद्धति के जानकारी को साझा किया गया। कार्यक्रम में मेडिका सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल के डॉ. राकेश सिन्हा, पूर्व उद्योग मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन, मेडिका आईसीयू के चेयरमैन संजय सिंह, पद्मश्री डॉक्टर दिलीप सिंह, महापौर डॉक्टर वसुंधरा लाल, मेडिकल प्रेसिडेंट डॉक्टर सोमित्रा भारद्वाज के अलावे शहर के कई गणमान्य चिकित्सक उपस्थित थे।

वहीं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व उद्योग मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन ने कहा कि भागलपुर वासियों के लिए मेडिका की टीम ने जो कार्य किए है वो काफी सराहनीय है, जिससे शहरवासियों को काफी लाभ मिलेगा। वहीं मेडिका के चिकित्सक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि भागलपुर वासियों के लिए आने वाले समय में मेडिका अस्पताल चिकित्सा जगत में अमृतवाण के रूप में सहायक साबित होगा।

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जीरोमाइल स्थित रेशम बोर्ड भवन के सभागार में एडीजी कमजोर वर्ग के तहत सभी कांडा के बेहतर अनुसंधान के लिए 7 जिले के चयनित 50 महिला पुलिस पदाधिकारी के पांच दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरूआत डीआईजी विवेकानंद, वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार, सिटी डीएसपी, एएसपी समेत कई गणमान्य पुलिस पदाधिकारी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर विधिवत उद्घाटन किया। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत अब महिला पुलिस पदाधिकारी कई केसों में बारीकी से अनुसंधान करने को प्रशिक्षित किया जायेगा। जिससे कठिन से कठिन कांडों के अनुसंधान भी सही तरीके से निष्पादित किया जा सकेगा। वही साइबर क्राइम की गति भी तेजी से बढ़ता जा रहा है जिसको लेकर साइबर के एक्सपर्ट अपनी बातों को सबों के बीच साझा करेंगे, और कई बिंदुओं पर वार्ता करेंगे। जिससे अनुसंधान में साफ सुथरा और जल्दी निष्पादित करने में मदद मिल सकेगा। वही कार्यक्रम को लेकर डीआईजी विवेकानंद ने बताया कि भागलपुर के रेशम बोर्ड भवन में एडीजी कमजोर वर्ग के तहत पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया है, जिसमें 7 जिले के 50 महिला प्रतिभागी शामिल हैं। इसमें महिला सुरक्षा से जुड़े सभी आयामों को प्रतिनिधित्व करेंगी। इसमें कानून से संबंधित व कोर्ट से संबंधित जानकारियां जुड़े रहेंगे, इस प्रशिक्षण से संबंधित पदाधिकारी को अनुसंधान के समय किन छोटी से बड़ी बातों को ध्यान रखा है, उक्त विषय बिंदु पर प्रशिक्षणार्थियों को ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इन सभी विषयों की जानकारी साझा करने वाले विशेषज्ञ कार्यक्रम में आए हुए हैं, और साइबर सेल के विशेषज्ञ भी शामिल हैं, उम्मीद है इस प्रशिक्षण से पुलिस विभाग को काफी फायदा मिल सकेगा और अनुसंधान करने में पदाधिकारी को काफी मददगार साबित होगा।

स्विमिंग पूल में डूबे 21 वर्षीय युवक के परिजन से मिलने पहुंचे विधायक

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले में स्मार्ट सिटी के तहत हो रहे सौन्दरकर्ण निर्माण कार्य की दिशा में स्थानीय सैंडिस कंपाउंड मैदान परिसर में बनाये स्विमिंग पुल में बीते दिनों एक युवक की हुई मौत के बाद राजनीतिक सरगर्मी तेज हो गई हैं। उक्त मामले को लेकर स्थानीय विधायक सह कांग्रेस दल के नेता अजित शर्मा व उसकी टीम मृतक मोहम्मद शकील के घर मिलने पहुंचे। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि विगत दिनों मो शकील के 21 वर्षीय पुत्र मो. शारिक की नहाने के दौरान डूबने से मौत हो गई थी। वही डूबने की घटना के समय उक्त स्विमिंग पूल के आसपास ना तो कोई ट्रेनर मौजूद थे ना ही कोई देखरेख करने वाले कर्मी जिससे मो शकील अपने 21 वर्षीय पुत्र को खोने के बाद पीड़ित मो. शकील का पूरा परिवार का रो रो कर बुरा हाल है। घटना के पीड़ित पिता मोहम्मद शकील से मिलने भागलपुर विधायक अजीत शर्मा उनके घर पहुंचे और उन्हें ढांढस बांध कर उनके परिवार को सहायता प्रदान करने की बात कही। वही भागलपुर विधायक अजीत शर्मा ने कहा कि यह स्विमिंग पूल जब ओलंपिक के मद्देनजर बना है तो इसमें नए बच्चों को जाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए थी, यह पूर्णरूपेण स्विमिंग पूल निर्माण कर्ता स्मार्ट सिटी बालों की गलती है।

इस पर उच्च स्तरीय जांच के साथ बैठा कर जो साक्ष्य सामने आएगा, उन दोषियों के विरुद्ध विधिसंबद्ध कार्रवाई की जाएगी। वहीं उन्होंने कहा स्मार्ट सिटी के तहत बने स्विमिंग पूल में जब वहां कुछ बच्चे नहा रहे थे तो वहां पर प्रशिक्षक और गार्ड का रहना अति आवश्यक था, अगर प्रशिक्षक और गार्ड रहते तो शायद यह घटना घटित नहीं होती और किसी का परिवार नही उजड़ता। वही पीड़ित पिता मोहम्मद शकील ने घटना को लेकर बताया कि वहां की व्यवस्था बिल्कुल भी अच्छी नहीं है, मैं जब मायागंज पहुंचा तो मेरे बेटे ने दम तोड़ दिया था।

उसके बाद स्मार्ट सिटी के कुछ लोग हमें डराने धमकाने की भी कोशिश की है, और पोस्टमार्टम रिपोर्ट को भी कमजोर कर दिया। वही उनके पिता रोते बिलखते विधायक से अनुरोध करते दिखे और उनका कहना था कि मुझे इंसाफ चाहिए और दोषियों पर कार्रवाई हो।

धन के बल पर नगर परिषद के चेयरमैन बनने वाले गिरे औंधे मुंह

मुंगेर। नगर परिषद हवेली खड़गपुर में धन बल के बल पर नगर परिषद के चेयरमैन पद पर कब्जा जमाने के प्रयास करने वाले आधा दर्जन प्रत्याशियों को यहां के मतदाताओं ने धूल चटा दिया है। करीब आधा दर्जन प्रत्याशियों ने नगर क्षेत्र के 25 वार्डों में जमकर धन बल की जोर आजमाइश किया लेकिन मतगणना और चुनाव परिणाम प्राप्त होने के बाद धनबल के बल पर नगर परिषद चेयरमैन बनने के प्रयास करने वाले प्रत्याशी औंधे मुंह गिर गए। बताया जाता है कि मतगणना परिणाम प्राप्त होने के बाद से कई प्रत्याशियों के बीच मायूसी छा गया है क्योंकि वह इस नगर परिषद चुनाव में जमकर धन बल की जोर आजमाइश किए थे। लाखों रुपए लूटाने के बावजूद कई प्रत्याशी को हार का सामना करना पड़ गया। इधर रविवार के दिन निर्वाचित पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी खड़गपुर ने चुनाव परिणाम की घोषणा कर दिए है, प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्य पार्षद पद पर करीब 17 प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल कर अंतिम समय तक चुनाव के मैदान में डटे हुए थे।

बिजली विभाग के रवैये को लेकर प्रदर्शनकारियों का फूटा गुस्सा

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले भर में बिजली की समस्या को लेकर लोग त्राहिमाम है, शहरी क्षेत्र सहित आसपास के इलाके में फिर से बिजली की समस्या बढ़ने लगी है। जिसको लेकर शहरवासियों के द्वारा बिजली विभाग के खिलाफ चर्मबद्ध आंदोलन शुरू कर दिया है। गौरतलब हो कि भागलपुर में स्मार्ट मीटर वापस लेने, 24 घंटे निर्बाध बिजली देने, डिमांड चार्ज वापस लेने व बिजली विभाग रात्रिकालीन सेवा सुचारु रुप से पहल करने की मांग को लेकर दिन प्रतिदिन बिजली उपभोक्ता सहित स्थानीय लोगों का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा है, वही बिजली विभाग के विरुद्ध आक्रोशित होकर बिजली उपभोक्ता संघर्ष समिति के बैनर तले हल्ला बोल प्रदर्शन जारी है। इसी बीच एक कार्यक्रम में शिरकत करने भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सह पूर्व उद्योग मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन भागलपुर पहुंचे। जहां उन्होंने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि यह बिजली की समस्या मुझे अभी तक मालूम नहीं हो पायी थी, मैं जल्द ही उपभोक्ता की समस्या को लेकर बिजली मंत्री से ऊक्त मुद्दे पर बात करूँगा और इसका निदान निकालने की कोशिश करूंगा, साथ ही उन्होंने कहा कि बिजली विभाग जिस तरह से अपना कर उपभोक्ताओं से वसूल रही है, इससे लगता है कि पूरे बिहार का खर्च बिजली विभाग ही चुकता करेगी ये बहुत ही संवेदनशील मामला है। बिजली विभाग के रवैये को लेकर कोई ठोस कदम उठाने की जरूरत है उस पर में बिहार सरकार उर्जा मंत्री से बात करूंगा।

रूबी देवी पहली बार लडी चुनाव बनी वार्ड 12 के वार्ड पार्षद

मुंगेर। नगर निकाय चुनाव 2023 के नगर परिषद हवेली खड़गपुर की मतगणना रविवार के दिन संपन्न हो गया। नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड संख्या 12 के मतदाताओं ने अपने सुयोग्य प्रत्याशी रूबी देवी पति कुमार राज को जीता कर अपना पार्षद बनाया है। बताया जाता है कि इस वार्ड संख्या 12 से कुल 5 प्रत्याशी चुनाव मैदान में मौजूद थे जो कि किरण कुमारी को 109 वोट बेवी देवी को 137 वोट रूबी देवी को 256 वोट शिरीन नाज को 218 वोट सुशीला देवी को 130 वोट प्राप्त हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर निकाय चुनाव में वार्ड संख्या 12 से सभी प्रत्याशी पहली बार उम्मीदवार बनी थी। नगर निकाय चुनाव 2023 के वार्ड संख्या 12 के करीब 1457 मतदाताओं में से 850 मतदाताओं ने 9 जून शुक्रवार को अपना वोट डाले। परिणाम घोषणा के बाद रूबी देवी को विजेता प्रत्याशी घोषित कर दिया गया । हवेली खड़गपुर नगर निकाय चुनाव में विजयी होने पर वार्ड 12 के वोटरों ने विजयी प्रत्याशी रूबी देवी को बधाई व शुभकामनाएं देने के लिए दिन भर उनके घर आते जाते नजर आया । विजयी प्रत्याशी रूबी देवी को बधाई देने वालों में डॉ अशोक कुमार केसरी डॉक्टर विदेशी सिंह डॉ कमलधारी प्रसाद केसरी पत्रकार सदानंद झा विरही , सदानंद नायक अनुराधा कुमारी उर्फ लवली कुमारी माला देवी पूनम कुमारी कुमारी रजनी देवी बलराम सिंह प्रकाश राम सहित सामाजिक कार्यकर्ता साहित्यकार इत्यादि शामिल थे।

ग्रामसभा द्वारा पंचायतों को किया जाएगा टीबी मुक्त : मिहिरकांत झा

प्रात : किरण ब्यूरो

पूर्णिया । जिला संचारी रोग पदाधिकारी डॉ मिहिरकान्त झा ने बताया है कि ग्राम पंचायत स्तर पर टीबी मुक्त पंचायत घोषित करने के लिए पंचायत विकास योजना में टीबी उन्मूलन कार्यक्रम से संबंधित गतिविधियों को शामिल करना होगा। सामुदायिक स्तर पर टीबी के लक्षणों, जांच एवं उपचार की निःशुल्क व्यवस्था, सरकार द्वारा टीबी रोगियों तथा इलाज में मिलने वाली लाभ के बारे में जानकारी देनी होगी। जन आरोग्य समिति, ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण समितियों की मासिक व त्रैमासिक बैठकों में टीबी पंचायत घोषित करने की शर्तों, संकेतकों पर प्रगति की टीबी मुक्त करने की दिशा में समीक्षा एवं कठिनाइयों के समाधान के लिए सार्थक प्रयास करना होगा। पंचायत एवं ग्राम स्तर पर टीबी मुक्त पंचायत घोषित करने के क्रम में पहचान की गई समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध संसाधनों की मैपिंग एवं सदुपयोग का प्रयास करना है। साथ ही समाज के सक्षम लोगों द्वारा टीबी रोगियों को फूड बास्केट प्रदान करने को लेकर प्रेरित कर निक्षय मित्रों की संख्या में इजाफा करने की आवश्यकता है। जिला टीबी एड्स समन्ववयक राजेश कुमार शर्मा ने कहा कि देश से टीबी मुक्त पंचायत का शुभारंभ किया जा चुका है। जिसका मुख्य उद्देश्य ग्राम पंचायतों के सहयोग से टीबी उन्मूलन की दिशा में कार्य करना है। जिसके तहत पंचायती राज संस्थाओं का सशक्तीकरण किया जा सके। इसके साथ ही वह टीबी की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ कर आकलन करते हुए स्थानीय व्यवस्थानुसार समाधान की दिशा में भी आवश्यक कदम उठाया जाए। ताकि पंचायतों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बने तथा पंचायतों द्वारा टीबी उन्मूलन में किये गए प्रयासों की सराहना की जाए। इसके लिए ग्राम पंचायतों के साथ आयोजित बैठकों में जिला के संचारी रोग पदाधिकारी (टीबी) एवं जिला पंचायती राज्य पदाधिकारी अथवा उनके प्रतिनिधि द्वारा कार्यक्रम की रूप रेखा, गतिविधियां एवं स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा एवं गैर सरकारी सहयोगी संगठनों, टीबी चैम्पियन, निक्षय मित्र आदि महत्त्वपूर्ण हितग्राहियों के बीच परस्पर समन्वय, संवाद एवं साझा दायित्व पर जानकारी दी।

जिला पदाधिकारी ने संबंधित विभागीय पदाधिकारियों के साथ किया समीक्षात्मक बैठक

प्रात : किरण ब्यूरो

पूर्णिया । जिला पदाधिकारी कुंदन कुमार की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक आहूत की गई। सर्वप्रथम बैठक के दौरान जिला अधिकारी के द्वारा पूर्व के समीक्षात्मक बैठक में दिए गए निदेर्शों के अनुपालन की समीक्षा की गई। इसी कड़ी में बाढ़ से पूर्व तैयारी को लेकर जिलाधिकारी द्वारा पूर्व के समीक्षा बैठक मे कार्यपालक अभियंता बाढ़ नियंत्रण एवं जल निस्सरण को अति संवेदनशील स्थानों पर बाढ़ निरोधक कार्यो को जल्द शुरू करवाने का निदेश दिया गया था। समीक्षा के क्रम में जिला अधिकारी द्वारा अति संवेदनशील स्थानों पर बाढ़ निरोधक कार्यो की प्रगति पूछे जाने पर कार्यपालक अभियंता जल निस्सरन द्वारा बताया गया की कुल 6 अति संवेदनशील स्थानों में से 5 स्थानों पर बाढ़ निरोधक कार्य शुरू कर दिया गया है। इस पर जिलाधिकारी ने शेष 1 अति संवेदनशील स्थान पर जल्द कार्य शुरू करवाने का निदेश कार्यपालक अभियंता को देते हुए कहा की निर्धारित मापदंडों के अनुसार छोटी से छोटी चीजों को ध्यान में रखते हुए गुणवतापूर्ण कार्य समय पर पूरा करे, इस कार्य में छोटी सी भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में उपस्थित कार्यपालक अभियंता बाढ़ नियंत्रण एवं जल निस्सरण द्वारा बताया गया की अमौर प्रखंड में कतिपय स्थानों पर बिजली की समस्या है एवं पोल शिफ्ट करने की आवश्यकता है। इस पर जिला पदाधिकारी ने कार्यपालक अभियंता, विद्युत को मामले की जांच कर त्वरित कार्रवाई करने का निदेश दिया गया। बताते चले की बायसी में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जिसका निर्माण कार्य लगभग डेढ़ वर्षो से लंबित था ।उस निर्माण कार्य को शुरू करवा कर कार्य स्थल का निरीक्षण जिला अधिकारी द्वारा किया गया था एवं आवश्यक दिशा निदेश दिए गए थे। समीक्षा में जिला अधिकारी द्वारा दिए गए निदेश के आलोक में संबंधित अधिकारी द्वारा बताया गया की कार्य प्रगति पर है और लेआउट का कार्य बुधवार से शुरू कर दिया। इसी प्रकार से जिला अधिकारी द्वारा मुख्यमंत्री सात निश्चय योजना, मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर स्ट्रीट योजना, अस्पताल एवं विद्यालय के लिए भूमि की उपलब्धता, प्रधानमंत्री आवास योजना, भूमि विवाद, लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम की प्रगति, मुख्यमंत्री के जनता दरबार से प्राप्त आवेदनों के निष्पादन, न्यायालय एवं मानवाधिकार आयोग से प्राप्त पत्रों का निष्पादन, लोक सेवाओं के अधिकार अधिनियम, शिक्षा विभाग, आईसीडीएस, आपूर्ति विभाग, जिला भू अर्जन, आपदा, मनरेगा, पीएचईडी बाढ़ नियंत्रण एवं संबंधित विभागों की समीक्षा के क्रम में जिला अधिकारी द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश सं

कंगना रणौत ने ठुकराई धनुष की फिल्म

बॉलीवुड इंडस्ट्री की पंगा क्वीन यानी कंगना रणौत जल्द फिल्म इमरजेंसी के साथ बड़े पर्दे पर धमाल मचाने आ रही हैं। हालांकि, इसी बीच कंगना एक खबर को लेकर खूब सुर्खियों में रहीं। खबर थी कि एक्ट्रेस ने तमिल सुपरस्टार धनुष की फिल्म में काम करने से मना कर दिया, जिसका नाम अस्थायी रूप से डी 50 था। इस रिपोर्ट के वायरल होते ही कयासों का बाजार गर्म हो गया और लोग तरह-तरह के संभावित कारण देने लगे जिसकी वजह से कंगना ने फिल्म को ठुकराया हो। हालांकि, अब नई रिपोर्ट ने अटकलों पर पूरी तरह विराम लगा दिया है। धनुष की फिल्म को ठुकराने की खबरों पर खुद कंगना रणौत ने प्रतिक्रिया दी है। एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम स्टोरी का सहारा लेते हुए एक खबर के स्क्रीनशॉट को साझा कर लिखा है, फेक न्यूज अलर्ट, ऐसी कोई फिल्म मुझे ऑफर नहीं की गई थी। कंगना ने आगे जोड़ा, धनुष मेरे फेवरेट हैं, मैं उन्हें कभी ना नहीं कर सकती। धनुष सन पिक्चर्स के बैनर तले अपनी 50वीं फिल्म की तैयारी कर रहे हैं। इसी को लेकर एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया था कि इसमें लीड रोल के लिए कंगना रणौत को अप्रोच किया गया था, लेकिन एक्ट्रेस ने इसे करने से मना कर दिया। रिपोर्ट में आगे दावा किया गया कि कंगना ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि यह एक नकारात्मक भूमिका के लिए था। हालांकि, रिपोर्ट पर कंगना की प्रतिक्रिया ने सभी अटकलों पर पूर्ण विराम लगा दिया है। धनुष ने कभी भी कंगना रणौत को कोई रोल ऑफर नहीं किया और न ही उन्होंने इसे करने से इनकार किया। धनुष की 50वीं फिल्म डी 50 को उनकी पहली फिल्म पुधुपेट्टई की अगली कड़ी कहा जा रहा है। 2006 की पुधुपेट्टई तमिल भाषा की एक्शन फिल्म है। यह पुधुपेट्टई के एक झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले छात्र की कहानी है, जो एक खूंखार गैंगस्टर बन जाता है।

रजनीकांत की फिल्म में कैमियो कर सकते हैं अमिताभ बच्चन

सिनेमा के दो लीजेंडरी एक्टर्स- रजनीकांत और अमिताभ बच्चन 32 साल बाद एक ही फिल्म में साथ नजर आ सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अमिताभ बच्चन रजनीकांत की अपकमिंग फिल्म थलाइवर 170 में कैमियो कर सकते हैं।

थलाइवर 170 में अमिताभ बच्चन कर सकते हैं कैमियो

फिलहाल रजनीकांत अपनी फिल्म जेलर की शूटिंग में बिजी हैं। इन फिल्मों में बाद रजनीकांत डायरेक्टर टीजे ज्ञानवेल की फिल्म थलाइवर 170 में नजर आएंगे। ये फिल्म रजनीकांत के करियर की 170वीं फिल्म है और अगले साल रिलीज होगी। अमिताभ बच्चन के साथ ही फिल्म में तमिल एक्टर सूर्या का कैमियो भी देखने को मिल सकता है।

आखिरी बार 1991 में साथ दिखे थे अमिताभ-रजनीकांत

रिपोर्ट्स के मुताबिक पहले फिल्ममेकर्स ने इस फिल्म में कैमियो रोल एक्टर विक्रम को ऑफर किया था। लेकिन, अब ये रोल बिग बी को ऑफर कर दिया गया है। हालांकि, इस पर ऑफिशियल कंफेर्मेशन आना अभी बाकी है। आखिरी बार अमिताभ बच्चन और रजनीकांत एक साथ 1991 में आई एक्शन ड्रामा फिल्म हम में दिखाई दिए थे।

पुलिस ऑफिसर के रोल में नजर आएंगे रजनीकांत

रिपोर्ट्स के मुताबिक थलाइवर 170 सच्ची घटनाओं पर बेस्ड फिल्म होगी। फिल्म को लाइका प्रोडक्शंस प्रोड्यूस कर रही है। फिल्म में अनिरुद्ध रविचंद्र ने म्यूजिक दिया है। फिल्म में रजनीकांत पुलिस ऑफिसर के रोल में नजर आ सकते हैं। जल्द ही रजनीकांत डायरेक्टर नेल्सन दिलीप कुमार की फिल्म जेलर में नजर आएंगे। इस फिल्म में मलयालम एक्टर मोहनलाल और जैकी श्रॉफ भी नजर आएंगे। ये फिल्म इसी साल रिलीज हो जाएगी। इसके साथ ही रजनीकांत अपनी बेटी ऐश्वर्या की फिल्म लाल सलाम में कैमियो रोल में दिखेंगे। वहीं, अमिताभ बच्चन जल्द ही फिल्म प्रोजेक्ट के में दिखेंगे। इस फिल्म के डायरेक्टर नाग अश्विन हैं। फिल्म में दीपिका पादुकोण और प्रभास भी नजर आएंगे।

सिद्धार्थ ने कंफर्म किया अदिति संग अफेयर?

इन दिनों बॉलीवुड के गलियारों में एक्टर सिद्धार्थ और एक्ट्रेस अदिति राव हैदरी के अफेयर की चर्चा है। हाल ही में दोनों सितारे जयपुर में अपने दोस्त शारवानंद की शादी में शामिल हुए। दोनों ने काफी अलग अंदाज में खूब तस्वीरें भी क्लिक कराईं। बेशक दोनों के अफेयर की खबरें काफी वक्त से उड़ रही हैं, मगर ये दोनों अभी तक इस बात से इनकार करते आए हैं। हालांकि, अप्रत्यक्ष रूप से इन्होंने डेटिंग का इशारा जरूर किया है। हाल ही में एक बार फिर सिद्धार्थ कुछ ऐसा ही करते नजर आए। अदिति कई बार अफेयर की अफवाहों पर रिएक्ट कर चुकी हैं। अब हाल ही में सिद्धार्थ ने कुछ ऐसा कह दिया, जिससे यह समझा जा सकता है कि दोनों के बीच कुछ खिचड़ी पक रही है। सिद्धार्थ ने सीधे तौर पर तो कुछ नहीं कहा, लेकिन हंसी-मजाक में इतना जरूर संकेत दिया कि वह और अदिति एक-दूसरे के लिए बेहद खास हैं।

हाल ही में सिद्धार्थ अपनी फिल्म टक्कर के प्रमोशन के लिए एक तेलुगु सिंगिंग रियलिटी शो में बतौर गेस्ट शामिल हुए। वहां उन्होंने अदिति राव हैदरी के साथ अपने रिलेशनशिप पर बात की। दरअसल, शो में एंकर ने सिद्धार्थ से पूछा, क्या कोई ऐसा है, जिसके साथ वह हमेशा गाना पसंद करेंगे। इस पर सिद्धार्थ ने जवाब दिया, हमारे गांव में कहा जाता है कि अदिति देवो भव। एक्टर ने अदिति देवो भव कहकर इशारों-इशारों में यह जता दिया कि वह अदिति राव हैदरी को डेट कर रहे हैं। एक्टर का यह वीडियो सोशल मीडिया पर जबर्दस्त तरीके से वायरल हो रहा है। इस पर यूजर्स काफी मजेदार कमेंट्स कर रहे हैं।

बता दें कि अदिति कई बार डेटिंग को लेकर हिंट दे चुकी हैं, लेकिन यह पहली दफा है जब सिद्धार्थ ने इस पर कोई प्रतिक्रिया दी है। सिद्धार्थ की इस टिप्पणी ने दोनों के अफेयर की खबरों को और ज्यादा हवा दे दी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक तेलुगु फिल्म महा समुद्रम के दौरान दोनों एक-दूजे के करीब आए।

शिवांगी जोशी ने शुरू की नए शो बरसातें की शूटिंग

ये रिश्ता क्या कहलाता है में अपने किरदार नायरा से घर-घर में पहचान बना चुकीं शिवांगी जोशी जल्द ही बरसातें नाम से एक नए शो में नजर आएंगी। एक्ट्रेस ने कहा कि सोनी टीवी के लिए बालाजी द्वारा निर्मित शो की शूटिंग शुरू हो चुकी है। उन्होंने कहा, दर्शकों को जल्द ही शो देखने को मिलेगा। शिवांगी ने बरुन सोबती और रिधि डोगरा अभिनीत अमेजन मिनी टीवी शो बदतमीज दिल के ट्रेलर लॉन्च के मौके पर यह जानकारी दी। उन्होंने कहा- यह ट्रेलर से काफी आशाजनक लग रहा है और मुझे यकीन है कि सीरीज अद्भुत होगी। बरुण और रिद्धि दो बेहतरीन अभिनेता हैं। खतरों के खिलाड़ी 12 में एक्शन करती नजर आई एक्ट्रेस इस सीजन किसे चीयर कर रही हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, जैसा कि ज्यादातर लोग जानते हैं, इंडस्ट्री में मेरे ज्यादा दोस्त नहीं हैं। इसलिए इस सीजन में मेरा कोई भी दोस्त नहीं है। लेकिन हां, मैं सभी को शुभकामनाएं देना चाहती हूं। शिवांगी के अपकमिंग शो बरसातें में वह डबल रोल में नजर आएंगी। उनके साथ कुशाल टंडन की जोड़ी बनाई गई है। एक्ट्रेस जल्द ही अंकित गुप्ता के साथ एक म्यूजिक वीडियो बारिश आई है में भी दिखाई देंगी। इस गाने को रजत नागपाल के म्यूजिक के साथ रितो रीबा ने गाया है और दिल को छू लेने वाले बोल राणा सोतल के हैं।

ब्यूटी ब्रांड शुगर पॉप की ब्रांड ऐंबैस्डर बनीं शहनाज गिल

शहनाज गिल ब्यूटी ब्रांड शुगर पॉप की ब्रांड ऐंबैस्डर बन गई हैं। शुगर पॉप ब्रांड के हैंडल ने सोशल मीडिया पर पोस्ट के जरिए ये जानकारी दी है। पोस्ट में शहनाज को इंट्रोड्यूस करते हुए लिखा- हेय बेस्टीस! हमारे बीच एक नया फन, बबली, फंकी पॉपस्टार आ गया है। वेलकम शहनाज गिल! शुगर पॉप फैमिली आपके आने से बहुत एक्साइटेड है।

शहनाज ने शेयर की ब्रांड की कैंपेन वीडियो

शहनाज ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर भी ब्रांड ऐंबैस्डर के तौर पर खुद को इंट्रोड्यूस करते हुए छोटी-सी डिजिटल इंट्रोडक्टरी कैंपेन वीडियो शेयर की है। इसमें शहनाज इंडिया की होमग्रोन ब्रांड के प्रोडक्ट्स की बात बताते हुए कह रही हैं- हेलो! एक गुड न्यूज़ शेयर करूं..आपको अगर बनना है पॉप स्टार तो ये रहा आपका मौका! इतना कहते ही शहनाज ब्रांड के प्रोडक्ट्स को यूज करके दिखाती हैं। वीडियो में शहनाज आगे कहती हैं- ये है यंग इंडिया की फेवरेट मेकअप ब्रांड। वीडियो में शहनाज व्हाइट क्रॉप टॉप- डेनिम शॉर्ट्स और पिंक ओवरसाइज्ड शर्ट में दिख रही हैं। वहीं, एक बार शहनाज सिल्वर शिमरी ड्रेस में भी नजर आती हैं। इस वीडियो में शहनाज के फैंस उनकी खूब तारीफ कर रहे हैं। वीडियो पर एक यूजर ने लिखा- एक महीने पहले ही शहनाज ने बताया था कि वो किसी ब्यूटी ब्रांड की ऐंबैस्डर बनना चाहती हैं। आज उनका ये सपना भी पूरा हो गया। मैं आपके लिए बहुत खुश हूं शहनाज। ऐसे ही आपकी हर इच्छा पूरी होती जाए। जल्द ही शहनाज गिल जॉन अब्राहम, रितेश देशमुख और नोरा फतेही के साथ फिल्म 100% में दिखेंगी।

अनुप्रिया गोयनका ने किया खुलासा, सेक्रेड गेम्स में कैसा था सैफ का रवैया?

अनुप्रिया गोयनका अपनी अदाकारी से लाखों दिलों में खास जगह बना चुकी हैं। अब तक वह कई वेब सीरीज में दमदार एक्टिंग कर चुकी हैं। उनकी नई सीरीज असुर 2 कुछ ही समय पहले रिलीज हुई है, जिसे दर्शकों का भरपूर प्यार मिला है। अभिनेत्री ने हाल ही में खुलासा किया है कि कैसे सेक्रेड गेम्स में सैफ अली खान के साथ उनके अंतरंग दृश्यों को नेटफ्लिक्स शो के दोनों सीजन से हटा दिया गया था। हाल ही में आईवीएम पॉप पोडकास्ट पर गोयनका ने कहा, उन्होंने (निर्माताओं ने) मुझे एक डिस्क्लेमर दिया। मेरे और सैफ के बीच कुछ इंटीमेट सीन होने वाले थे। शो में एक इंटीमेट सीन था, जिसके लिए हमने शूट किया था, लेकिन सीजन एक से किसी कारण इसे हटा दिया गया था। इस बातचीत में अनुप्रिया ने सैफ की जमकर तारीफ करते हुए उन्हें बेहद शिष्ट व्यक्ति बताया। अभिनेत्री ने कहा, वह बहुत शिष्ट, बहुत जानकार और बहुत बुद्धिमान इंसान हैं। वह जमीन से जुड़े हुए और बेहद प्यारे इंसान है। मुझे याद है कि जब हम ये इंटीमेट सीन कर रहे थे तो विक्रम ने मुझसे कहा था कि चिंता मत करो उन्हें देखो (सैफ) वह तुमसे ज्यादा जागरूक हैं। एक्ट्रेस ने आगे कहा कि हर सीन के बाद वह (सैफ) आए और मुझसे पूछा कि क्या तुम ठीक हो? एक समय के बाद मैंने कहा कि मैं अच्छी हूं, क्या आप ठीक हो। अनुराग कश्यप, विक्रमादित्य मोटवानी और नीरज घायवन के निर्देशन में बनी सेक्रेड गेम्स में नवाजुद्दीन सिद्दीकी, राधिका आप्टे और कुब्रा सैत ने भी अभिनय किया था। शो में सैफ ने इंस्पेक्टर सरताज सिंह का रोल प्ले किया था।

किसी भी स्टार किड के दोस्त नहीं हैं मिमोह, बोले- दूसरे कलाकारों की सफलता देख होती है जलन

दिग्गज अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती और योगिता बाली के बेटे मिमोह चक्रवर्ती इन दिनों लगातार खुलासे पर खुलासे कर रहे हैं। अपने संघर्ष के दिनों को याद करने से लेकर फिल्मों के अपने सफर तक उन्होंने पिछले कुछ दिनों में कई सारी ऐसी बातें कही हैं, जिसे सुनकर सब हैरान हैं। इसी क्रम में मिमोह ने हाल ही में साझा किया कि खुद एक स्टार किड होने के बावजूद, वह अपनी पीढ़ी के अन्य स्टार किड्स जैसे रणबीर कपूर, अभिषेक बच्चन या अन्य किसी के भी दोस्त नहीं हैं। मिमोह ने कहा कि उनके पिता मिथुन की स्वर्गीय ऋषि कपूर के साथ बहुत अच्छी दोस्ती थी और अमिताभ बच्चन के साथ उनकी दोस्ती बनी हुई है, लेकिन ये दोस्ती वास्तव में अगली पीढ़ी तक नहीं पहुंची है। एक इंटरव्यू में मिमोह ने साझा किया कि इनमें से कई दोस्ती कम उम्र में बनती हैं, लेकिन क्योंकि वह अपनी युवावस्था में ऊटी में रह रहे थे, इसलिए उन्होंने कभी भी फिल्म इंडस्ट्री के लोगों से बातचीत नहीं की। मिमोह ने कहा कि वह रणबीर कपूर से सिर्फ एक बार अवॉर्ड फंक्शन में मिले हैं और वहां भी रणबीर ही उनके पास आए थे और उनसे मिले थे। वह बोले, उस समय, रणबीर प्रदर्शन कर रहे थे, और वह बस वहां से गुजर रहे थे और उन्होंने आकर नमस्ते कहा। वह हमारी एकमात्र बातचीत थी। मिमोह ने कहा कि उनके फिल्मों में आने की वजह ऋतिक रोशन हैं, लेकिन करीब 15 साल मुंबई में रहने के बावजूद भी वह अपने रोल मॉडल से कभी नहीं मिले। वह बोले, मैं ऋतिक रोशन का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। मैं उनकी वजह से इंडस्ट्री में हूं और मैं उनसे कभी नहीं मिला, लेकिन मैं राकेश सर से मिला हूं। मैं उनसे मिला और उनसे कहा कि मैं आपके बेटे का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं और उनसे मिलना मेरा सपना है। अभिनेता ने कहा कि उसने कभी इसका पीछा नहीं किया, क्योंकि वह यह नहीं दिखाना चाहता थे कि वह इसके लिए कितने उत्सुक हैं।

प्रमोशन का हिस्सा का था काजोल का सोशल मीडिया से ब्रेक लेना, वेबसीरीज द ट्रायल में आएंगी नजर

काजोल ने शुक्रवार दोपहर सोशल मीडिया से अचानक ब्रेक ले लिया था। काजोल ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर इसकी घोषणा करके फैंस को चौंका दिया था। हालांकि, महज 5 घंटे बाद ही काजोल सोशल मीडिया पर वापस लौट आईं। वापस आते ही उन्होंने अपनी अपकमिंग वेब सीरीज द ट्रायल- प्यार कानून धोखा का टीजर पोस्टर शेयर किया। इस कमबैक पोस्ट के साथ ही यह भी क्लीयर हो गया कि काजोल का सोशल मीडिया से ब्रेक लेना महज प्रमोशन का एक हिस्सा था। काजोल की इस अपकमिंग वेब सीरीज का नाम द ट्रायल है, जिसमें वे लॉयर के रोल में नजर आएंगी। इसकी जानकारी शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा, ट्रायल जितना मुश्किल होता है, आप उतना ही बेहतरीन कमबैक करते हैं। डिज्नी+हॉटस्टार पर रिलीज होने वाली इस कोर्टरूम ड्रामा सीरीज का ट्रेलर 12 जून को रिलीज होगा। इससे पहले काजोल ने इस ब्रेक के बारे में अनाउंस करते हुए लिखा था, अपने जीवन के सबसे मुश्किल दौर का सामना कर रही हूं। इस पोस्ट के कैप्शन में उन्होंने लिखा था, सोशल मीडिया से ब्रेक ले रही हूं। काजोल ने इस ब्रेक की वजह नहीं बताई थी और इसी वजह से फैंस कई तरह के कयास लगाने लगे थे।

अंबाला के साइंस उद्योग ने चीन को छोड़ा पीछे, कोरोना काल के बाद किए हैं कई बड़े परिवर्तन

नई दिल्ली, एजेंसी। चीन से कड़ी प्रतिस्पर्धा मिलने के बावजूद अंबाला का साइंस उद्योग विदेश में भी अपनी धाक जमा चुका है।खास बात है कि यह उद्योग बढ़कर 5,000 करोड़ रुपये से अधिक का हो चुका है।कईदेशों में तो यह चीन को भी पीछे छोड़ चुका है और यूरोपीय देशों में अब अंबाला के साइंस उद्योग के उत्पादों की आपूर्ति हो रही है।

कोरोना काल के बाद से साइंस उद्योग ने अपने यहां बड़े परिवर्तन किए हैं। गुणवत्ता में सुधार के लिए ऑटोमेशन तकनीक और आधुनिक मशीनों का सहारा ले रहे हैं। गुणवत्ता में सुधार की वजह से विदेश में भी यहां के उत्पादों की मांग बढ़ी है।उद्योग से जुड़े लोगों का कहना है कि अभी तक अंबाला में बनने वाले साइंस उद्योग के उत्पाद सार्क और गल्फ देशों में जाते थे, लेकिन अब यूरोपीय देशों में भी इनकी मांग बढ़ी है।

अंबाला के लघु एवं कुटीर उद्योग के तहत एक हजार उद्योग और 100 बड़े उद्योगपति एवं कर्मचारी चीन की प्रतिस्पर्धा के बीच विदेश में अपने उत्पादों की मांग बढ़ाने के काम को बखूबी अंजाम दे रहे हैं।यह उद्योग स्कूल कॉलेजों में प्रयोग होने वाले साइंस उत्पादों से लेकर अस्पतालों में इस्तेमाल होने वाली मशीनों तक का निर्माण करता है।

5000 करोड़ से अधिक का है अंबाला का साइंस उद्योग: अंबाला का साइंस उद्योग अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार के लिएऑटोमेशन और रोबोटिक तकनीक का सहारा ले रहा है।इसके लिएअंबाला साइंटिफिक इंस्ट्रूमेंट मैन्युफेक्चर्स एसोसिएशन (असीमा) के तहत उद्योगपतियों ने देश में विभिन्न स्थानों पर मशीनों के एक्सपो में भाग लेना शुरू किया।वहां उन्हें पता चला कि कई ऐसी नई मशीनें आ गई हैं जो कम समय में अधिक मात्रा में और ज्यादा गुणवत्ता के साथ उत्पाद तैयार कर सकती हैं। साइंस उद्योग से जुड़े कारोबारी इन आधुनिक मशीनों को खरीदकर अपने यहां लगा रहे हैं।

रिवर्स इंजीनियरिंग का सहारा लेकर चीन को पछाड़ा : असीमा के अधिकारी बताते हैं कि कोविड-19 के समय से पहले कई उत्पादों के लिए चीन पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन, केंद्र सरकार के आत्मनिर्भर भारत अभियान ने सबकुछ बदल दिया। सरकार से प्रोत्साहन मिला तो उद्योग से जुड़े कारोबारियों ने चीन में बनने वाले उत्पादों को अंबाला में रिवर्स इंजीनियरिंग के माध्यम से तैयार किया। इसमें गुणवत्ता अच्छी मिली तो अन्य देश चीन की जगह भारत से उत्पाद खरीद रहे हैं।

और प्रतिस्पर्धा के लिए सरकारी मदद की जरूरत: असीमा के महासचिव गौरव सोनी बताते हैं कि उद्योग अभी तरक्की कर रहा है।लेकिन, सरकार की ओर से उनके लिए अलग स्थान मुहैया कराने के साथऐसी सहूलियत देने की जरूरत है, जिससे उद्योग और तेजी से बढ़ोतरी कर सकें। उन्होंने बताया कि अंबाला में कई छोटी यूनिट हैं। लेकिन, आज के दौर की प्रतिस्पर्धा को देखा जाए तो हम बड़ी यूनिटों की तरफ जाना चाहते हैं, लेकिन सरकारी विभागों में इतनी कागजी कार्रवाई होती है कि चाहकर भी हमें योजना का अधिक फायदा नहीं मिलता।

-अंबाला के बाद गुजरात में साइंस कारोबार शुरू हो रहा है। वहां बड़ी-बड़ी यूनिटें खोली जा रही हैं। अगर हरियाणा के साइंस उद्योग को बढ़ाना है तो सरकार को कागजी कार्रवाई कम करनी होगी।

-असीमा के महासचिव ने कहा, इससे चीन के साथप्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी।

भारत में निवेश करने में यूएई 7वें से चौथे स्थान पर, सिंगापुर 17 अरब डॉलर के साथ सबसे आगे

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में निवेश करने के मामले में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) चौथा सबसे बड़ा देश बन गया है। पिछले साल मई में दोनों देशों के बीच मुफ्त कारोबार एग्रीमेंट हुआ था। पिछले वित्त वर्ष में यूएई से भारत में 3.35 अरब डॉलर का निवेश आया जो 2021-22 में महज 1.03 अरब डॉलर था।

उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) के आंकड़ों के मुताबिक, 2021-22 में भारत में निवेश करने के मामले में यूएई सातवें स्थान पर था। सिंगापुर 17.2 अरब डॉलर के साथ पहले स्थान पर है जबकि मॉरीशस 6.1 अरब डॉलर के साथ दूसरे और अमेरिका 6 अरब डॉलर के साथ तीसरे स्थान पर बना हुआ है।

द्विपक्षीय संबंधों और नीतिगत सुधारों का असर: संयुक्त अरब अमीरात भारत में मुख्य रूप से सेवाओं, समुद्री परिवहन, ऊर्जा और विनिर्माण क्षेत्रों में निवेश करता है। दोनों देशों के बीच निवेश के तेजी से मजबूत होने का श्रेय मजबूत द्विपक्षीय संबंधों, यूएई से निवेश प्रतिबद्धताओं में वृद्धि व व्यापार करने में आसानी के लिए नीतिगत सुधारों को दिया जा सकता है।

यूएई से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण कारकों में से एक 18 फरवरी, 2022 को भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर करना भी है। यह समझौता एक मई, 2022 को लागू हुआ है। यूएई भारतीय बुनियादी ढांचा क्षेत्र में 75 अरब डॉलर का निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बूढ़ा, जिद्दी और खतरनाक अमीर जॉर्ज सोरोस ने बेटे को सौंपा कारोबार, विवादित रही है जॉर्ज की छवि

नई दिल्ली, एजेंसी। अमेरिकी अरबपति जॉर्ज सोरोस आपको याद है ना भारत के आंतरिम मामलों में टिप्पणी करने वाले,भारत में सरकार बदलने की वकालत करने वाले और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले अमेरिकी अरबपति ने अपना साम्राज्य अपेन बेटे को सौंप दिया है। पीएम पर विवादित बयान करने वाले जॉर्ज सोरोस पर खूब हंगामा हुआ था। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने तो सोरोस को बूढ़ा, जिद्दी, अमीर और खतरनाक बताया था। अब इस अमेरिकी अरबपति ने अपने कारोबार के 25 अरब डॉलर का कंट्रोल अपने बेटे अलेक्जेंडर सोरोस को सौंप दिया है।

कौन हैं जॉर्ज सोरेस: अरबपति फाइनेंसर जॉर्ज सोरोस ने अपने विशाल साम्राज्य का नियंत्रण अपने बेटे अलेक्जेंडर सोरोस को सौंपा दिया है। 92 साल के सोरोस ने अपने बड़े बेटे अलेक्जेंडर सोरोस को 25 अरब डॉलर का कारोबार सौंप दिया है। सोरेन चाहते थे कि ओपन सोसाइटी फ़ाउंडेशन को उनके पांचों बच्चे मिल कर संभालें, लेकिन अब अब उन्होंने इसकी जिम्मेदारी अपने बड़े बेटे को सौंपने का फैसला किया है। 37 साल के अलेक्जेंडर सोरोस अब ओपन सोसाइटी फ़ाउंडेशन के चेयरमैन होंगे। ह्रस्त्र बोर्ड ने दिसंबर में एलेक्स को अपना चेयरमैन चुना।

अमेरिका के बड़े कारोबारियों में शामिल

जॉर्ज सोरोस अमेरिका के बड़े कारोबारियों में शामिल है, लेकिन उनकी छवि विवादित रही है। साल 1930 में हंगरी के बुडापेस्ट में उनका जन्म एक यहूदी परिवार में पैदा हुआ। साल 1947 में सोरोस अपने परिवार के साथ बुडापेस्ट से लंदन आ गए। परिवार को पालन-पोषण करने के लिए उन्होंने कुली और वेटर के तौर पर काम किया। इसी से पैसा जुटाकर उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में पढ़ाई की। साल 1956 में वो लंदन से अमेरिका चले गए। अमेरिका में सोरोस ने फाइनेंस और इन्वेस्टमेंट सेक्टर में काम करने का फैसला किया। साल 1973 में सोरोस फंड मैनेजमेंट के नाम से कंपनी बनाई। इसके बाद उन्होंने अमेरिकी शेयर मार्केट में पैसा इन्वेस्ट करना शुरू कर दिया। अगले 6 साल में वो करोड़पति बन गए। उन्होंने रंगभेद का सामना कर रहे ब्लैक छात्रों को स्कॉलरशिप देने लगे। उनकी पहचान दुनिया के सबसे बड़े करेंसी ट्रेडर के तौर पर हो गई।

जॉर्ज पर लगते रहे आरोप

जॉर्ज सोरोस पर कई गंभीर आरपो लगे। उनपर साल 1992 में बैंक ऑफ इंग्लैंड को तबाह कर कमाई करने का आरोप लगा। अपनी ओपन सोसाइटी फाउंडेशन की मदद से वो 100 देशों तक पहुंच गए। उन्होंने जॉर्ज बुश को हराने के लिए 125 करोड़ रुपए खर्च कर दिए। इतना ही नहीं उन्होंने मीडिया कंपनी फॉक्स न्यूज को बर्बाद करने के लिए 1 मिलियन डॉलर लगा दिए। उन्होंने ब्रेक्जिट के खिलाफ अभियान चलाने में 4 लाख पाउंड खर्च कर दिए। उन्होंने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को ठग कहा था। भारत में भी उन्होंने गंभीर आरोप लगाए।

भारत की जीडीपी 3.75 ट्रिलियन डॉलर पर पहुंची, वित्त मंत्री के कार्यालय ने ट्वीट कर कही ये बात

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) सोमवार को 3.75 ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े पर पहुंच गया। प्रमुख विकास संकेतक 2023 में 3.75 ट्रिलियन तक पहुंच गया है, जो 2014 में लगभग 2 ट्रिलियन डॉलर था। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के कार्यालय ने एक ट्वीट में इसकी पुष्टि की।

ट्वीट में कहा गया, भारत की जीडीपी 2023 में 3.75 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गई है, जो 2014 में लगभग 2 ट्रिलियन डॉलर थी। इस तरह भारत दुनिया की 10 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। भारत को अब वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक उज्ज्वल स्थान के रूप में जाना जाता है।

जीडीपी के मामले में ये देश भारत से आगे: वित्त मंत्रालय ने आगे कहा कि भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वर्तमान मूल्य के संदर्भ में 3,737 अरब डॉलर है, जो सिर्फ अमेरिका (26,854 डॉलर), चीन (19,374 अरब डॉलर) और जर्मनी (4,309 अरब डॉलर) से कम है।

इन देशों से आगे निकली हमारी जीडीपी: मौजूदा कीमतों पर भारत की जीडीपी ब्रिटेन (3,159 अरब डॉलर), फ्रांस (2,924 अरब डॉलर), कनाडा (2,089 अरब डॉलर), रूस (1,840 अरब डॉलर) और ऑस्ट्रेलिया (1,550 अरब डॉलर) से बेहतर है।

मूडीज ने जून तिमाही में 6 से 6.3 प्रतिशत विकास दर का अनुमान जताया: इस बीच, रेटिंग एजेंसी मूडीज ने रविवार को भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर जून तिमाही में 6 से 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है। मूडीज का अनुमान भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ओर से पिछले सप्ताह लगाए गए 8 प्रतिशत की वृद्धि दर के अनुमान से काफी कम है। मूडीज इन्वेस्टर्स सर्विस के सहायक प्रबंध निदेशक जीन फैंग ने एक समाचार एजेंसी से से साक्षात्कार में कहा, हमारा अनुमान है कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में भारत की वृद्धि दर 6-6.3 प्रतिशत के आसपास रहेगी, जो वित्त वर्ष 2022-23 की अंतिम तिमाही में दर्ज 6.1 प्रतिशत से अपेक्षाकृत स्थिर रहेगी।

सेंसेक्स 99 अंक बढ़कर 62,724 पर बंद, ऊर्जा ग्लोबल का शेयर 19.81 प्रतिशत चढ़ा

मुंबई एजेंसी। आज हफ्ते के पहले कारोबारी दिन यानी सोमवार (12 जून) को शेयर बाजार में बढ़त देखने को मिली है। सेंसेक्स 99 अंक बढ़कर 62,724 के स्तर पर बंद हुआ है। वहीं निफ्टी में भी 38 अंकों की तेजी रही, ये 18,601 के लेवल पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 20 में तेजी और 10 में गिरावट देखने को मिली।

आज IT सेक्टर 1.51 प्रतिशत और रियल्टी में 1.41 प्रतिशत की तेजी रही। वहीं, ऑयल एंड गैस सेक्टर 0.85 प्रतिशत मजबूत हुआ। बैंक निफ्टी में 0.1 प्रतिशत की गिरावट रही। सोमवार को रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 4 पैसे मजबूत होकर 82.43 रुपए पर बंद हुआ। शुक्रवार को ये 82.42 रुपए पर बंद हुआ था। सोमवार को ऊर्जा ग्लोबल के शेयरों में 19.81 प्रतिशत की तेजी के साथ अपर सर्किट लगा। कंपनी के टेस्ला पावर ॠ के साथ पार्टनरशिप की जानकारी देने के बाद ये तेजी देखने को मिली है। कंपनी का शेयर आज 2.10 रुपए बढ़कर 12.70 रुपए पर पहुंच गया है। टेस्ला पावर ॠ का एलन मस्क की कंपनी टेस्ला के साथ कोई संबंध नहीं है। टेस्ला पावर अमेरिका के डेलावेयर की कंपनी है। ये कार की बैटरी, इन्वर्टर बैटरी और टू-व्हीलर की बैटरी बनाती है। डिस्ट्रिब्यूशन चैनल और रिटेल के जरिए कंपनी भारत में है। आज रिटेल महंगाई और इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन का डेटा जारी किया जाएगा, जिस पर मार्केट की नजर रहेगी। भारत में एनुअल इन्फ्लेशन की दर 2023 के अप्रैल में घटकर 4.7 प्रतिशत हो गई है, जो 2021 के अक्टूबर के बाद से सबसे कम है। यह मार्च में 5.7 प्रतिशत थी।

यूबीएस ने क्रेडिट सुइस का अधिग्रहण पूरा किया, कंपनी के सीईओ और चेयरमैन ने कही ये बात

नई दिल्ली, एजेंसी। स्विस बैंक यूबीएस ने सोमवार को कहा कि उसने संकटग्रस्त स्थानीय प्रतिद्वंद्वी क्रेडिट सुइस का आपातकालीन अधिग्रहण पूरा कर लिया है। यह 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से सबसे बड़ा बैंकिंग सौदा है, जिससे वह 1.6 ट्रिलियन डॉलर की बैलेंस शीट के साथ एक विशाल बैंक बन गया है। स्विस समाचार पत्रों में प्रकाशित एक खुले पत्र में यूबीएस के सीईओ सर्जियो एर्मोट्टी और चेयरमैन कोल्म केलेहर ने कहा, यूबीएस, स्विट्जरलैंड के लिए एक वित्तीय केंद्र और वैश्विक वित्तीय उद्योग के रूप में यह एक नए अध्याय की शुरुआत है। मेगा समूह दुनिया के सबसे बड़े धन प्रबंधक यूबीएस को प्रमुख बाजारों में एक अग्रणी स्थान प्रदान करते हुए 5 ट्रिलियन डॉलर की संपत्ति की देखरेख करेगा।

रिटायर होने के बाद बना डाली 30,000 करोड़ की कंपनी, 78 साल में नया वेंचर शुरू करने की तैयारी

नई दिल्ली, एजेंसी। अमूमन लोग रिटायर होने के बाद अपनी बाकी जिंदगी आराम के साथ बिताना चाहते हैं। लेकिन वेंकटसामी जगन्नाथन जब यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस के सीएमडी पद से रिटायर हुए तो उनका कुछ और ही प्लान था। सरकारी इंश्योरेंस कंपनी से रिटायर होने के बाद उन्होंने मई 2006 में देश की पहले स्टैंडअलोन हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी स्टार हेल्थ ऐंड अलायड इंश्योरेंस कंपनी (की शुरुआत की। तब उनके 12 कर्मचारी चेन्नई में माधा चर्च रोड पर एक छोटे से कमरे में बैठकर काम करते थे।

जगन्नाथन ने शनिवार को स्टार हेल्थ के नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन एवं डायरेक्टर के पद से इस्तीफा दे दिया। आज इस कंपनी का मार्केट कैप करीब 30,100 करोड़ रुपये है। कंपनी के कर्मचारियों की संख्या करीब 14,000 पहुंच गई है। 78 साल की उम्र में जगन्नाथन एक नया वेंचर शुरू करने की तैयारी में हैं। जगन्नाथन कहते हैं कि उन्होंने 12 लोगों के साथ किराये के एक मकान में स्टार हेल्थ की शुरुआत की थी। तब उस मकान का किराया 30,000 रुपये था। आज स्टार हेल्थ की वैल्यू 30,000 करोड़ रुपये से अधिक है। इसमें दिवंगत इन्वेस्टर राकेश झुनझुनवाला और उनकी पत्नी रेखा झुनझुनवाला का भी भारी निवेश है। जगन्नाथन ने कहा, मैंने 53 साल पहले इंश्योरेंस की दुनिया में कदम रखा था और पिछले साल रेकॉर्ड प्रॉफिट दिया। स्टार हेल्त का प्रॉफिट 2022-23 में सबसे ज्यादा रहा। इस दौरान कंपनी का प्रॉफिट 619 करोड़ रुपये रहा जबकि फाइनेंशियल ईयर 2022 में कंपनी को 1041 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था।

53 साल का करियर: जगन्नाथन ने अपना करियर 1970 को हरक्यूलस इंश्योरेंस के साथ शुरू किया था। राष्ट्रीयकरण के दौरान वह यूनाइटेड के साथ प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर जुड़ गए और बाद में कंपनी के ष्टस्ष्ठ के पद तक पहुंचे।

36 बैंकों को लगाया 56000 करोड़ का चूना, भूषण स्टील के नीरज सिंघल ने तो विजय माल्या और नीरव मोदी को पीछे छोड़ दिया

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में बैंकों को चूना लगाकर फरार हो जाना कोई नई बात नहीं है। विजय माल्या , नीरव मोदी , मेहुल चोकसी जैसे कारोबारी इसकी मिसाल बन चुके हैं। भारतीय बैंकों को हजारों करोड़ का चूना लगाकर ये विदेश में बैठे हैं, लेकिन आज जिस घोटाले के बारे में बताने जा रहे हैं, उसके सामने नीरव मोदी और माल्या का घोटाला कुछ नहीं है। भूषण स्टील के पूर्व एमडी नीरज सिंघल के इस बैंक फ्रॉड के सामने इन सबकी करतूतें बहुत छोटी हैं। ईडी ने इस मामले में अब नीरज को गिरफ्तार कर लिया है। इससे पहले भी वो दो बार इस मामले में गिरफ्तार किए जा चुके हैं।

क्या है भूषण स्टील घोटाला: भगोड़े कारोबारी विजय माल्या ने भारतीय बैंकों को करीब 9900 करोड़ रुपये का चूना लगाया। हीरा कारोबारी नीरव मोदी ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) को 13,540 करोड़ का झटका दिया। आपके पैरों तले जमीन खिसक जाएगी, जब आपको पता चलेगा कि भूषण स्टील लिमिटेड के प्रबंध निदेशक रहे नीरज सिंघल ने 36 से ज्यादा बैंकों के साथ फ्रॉड कर उन्हें 56000 करोड़ रुपये का चूना लगाया। कंपनी के पूर्व एमडी नीरज सिंघल ने 3 दर्जन से ज्यादा बैंकों को 56 हजार करोड़ रुपये का चूना लगाकर इस बैंक फ्रॉड को अंजाम दिया ।

56000 करोड़ रुपये का बैंक स्कैम: इसे देश का सबसे बड़ा बैंक स्कैम कहा जा रहा है। भूषण स्टील के पूर्व एमडी नीरज सिंघल ने बैंकों के साथ हेरफेर कर 56 हजार करोड़ रुपये का झटका दिया है। इस स्कैम का खुलासा पहले ही हो चुका है। भूषण स्टील भी दिवालिया हो चुकी है। कंपनी का अधिग्रहण टाटा स्टील कर चुकी है। लंबे वक्त से ईडी और सीबीआई इस घोटाले की जांच कर रही थी। ईडी ने 56 हजार करोड़ रुपये के घोटाला मामले में नीरज सिंघल को गिरफ्तार कर लिया है।

36 बैंकों को 56 हजार करोड़ का चूना: नीरज सिंघल पर कई गंभीर आरोप रहे हैं। नीरज ने 36 बैंकों को 56000 करोड़ रुपये का चूना लगाया। कंपनी के नाम पर नीरज ने करोड़ों की हेरफेर की। शेल कंपनियां बनाकर पैसे की मल्टीपल ट्रांजेक्शन दिखाकर हेर-फेर करने का गंभीर आरोप लगा है। बैंकों से कंपनी और कारोबार के नाम पर लोन उठाकर नीरज ने उसका इस्तेमाल पर्सनल इस्तेमाल के लिए। बैंकों से कंपनी के नाम पर लोन लेकर अपने लिए प्रॉपर्टी खरीदी, शॉपिंग, पार्टी , महंगी कारों में खर्च कर दिया। बैंकों से लोन के लिए फर्जी दस्तावेजों के इस्तेमाल काआरोप है। इस स्कैम बैंकों को 56 हजार करोड़ का नुकसान हुआ है। जिन बैंकों को नीरज ने चूना लगाया उनमें एसबीआई और पीएनबी , समेत देश के 36 बैंकों के नाम शामिल हैं।

कैसे लिखी स्कैम की पूरी कहानी: नीरज ने जेएसडब्ल्यू स्टील और हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के साथ कारोबार बढ़ाने के नाम पर बैंकों से लोन लिए, लेकिन इसका इस्तेमाल पर्सनल यूज के लिए किया। नीरज सिंघल भूषण स्टील की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। उन्होंने कंपनी के नाम पर कई सरकारी और प्राइवेट बैंकों से लोन लिया। लोन के लिए डमी कंपनियां बनाई। उन्होंने बड़ी ही चालाकी से एक शेल कंपनी से दूसरी कंपनी में ट्रांसफर करके फंड का मल्टीपल इंट्रीज दिखाया और उसका इस्तेमाल अपने निजी कामों के लिए किया। नीरज ने कंपनी में नया प्लांट लगाने और मशीनरी खरीदने के नाम पर हजारों करोड़ का लोन लिया, लेकिन कंपनी के बजाए नीरज उन पैसों को खुद पर खर्च करते रहे। पंजाब नेशनल बैंक, इलाहाबाद बैंक से 1700 करोड़ रुपये का लोन लिया। इन लोन को चुकाना तो दूर, वो और लोन लेते रहे। साल 2007 से 2014 के बीच से खेल चलता रहा। सबसे ज्यादा लोन पीएनबी ले लिया गया। बैंकों का ब्याज और मूलधन कुछ भी नहीं चुकाया। बैंकों ने इन लोन्स को ह्क्क में डाल दिया है।

कैसे हुई भूषण स्टील कंपनी की शुरुआत: गौरतलब है कि नीरज सिंघल के पिता बृजभूषण सिंघल ने साल 1987 में भूषण स्टील की शुरुआत की। शुरुआत में वो दरवाजे के हैंडल , हैंगर आदि बनाते थे। साल 2003 में उन्होंने ओडिशा में बड़ा स्टील प्लांट लगाया। वो भूषण स्टील को देश की सबसे बड़ी स्टील कंपनी बनाना चाहते थे। बेटे के हाथों में कमान आने के बाद नीरज का अधिकांश समय पार्टी और फिजूलखर्चों में बितता रहा।

बैंकों के बढ़ते कर्ज और कंपनी के एमडी के रवैये के कारण भूषण स्टील दिवालिया हो गई। साल 2018 में टाटा स्टील ने इसका अधिग्रहण कर लिया। पहले साल 2014 में सीबीआई ने नीरज सिंघल को गिरफ्तार किया। फिर साल 2018 में सीरियस फ्रॉड इंवेस्टिगेशन ऑफिस ने सिंघल को गंभीर कॉरपोरेट फ्रॉड से जुड़े आरोपों के में गिरफ्तार किया।

भारत-पाकिस्तान वर्ल्ड कप मैच 15 अक्टूबर को अहमदाबाद में

ओपनिंग मुकाबला इंग्लैंड-न्यूजीलैंड के बीच, बीसीसीआई ने आईसीसी को भेजा शेड्यूल ड्राफ्ट

मुंबई (एजेंसी)। क्रिकेट का वन डे वर्ल्ड कप अक्टूबर से नवंबर के बीच भारत में खेला जाएगा। बीसीसीआई ने मैचों का शेड्यूल ड्राफ्ट तैयार कर आईसीसी को भेज दिया है। ड्राफ्ट के मुताबिक, टूर्नामेंट की शुरुआत 5 अक्टूबर को अहमदाबाद से होगी। ओपनिंग मैच इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच खेला जाएगा। भारत का पहला मैच 8 अक्टूबर को चेन्नई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होगा। टूर्नामेंट का सबसे बड़ा मैच यानी भारत और पाकिस्तान का मुकाबला 15 अक्टूबर को खेला जाएगा। ये मैच अहमदाबाद में एक लाख दर्शक क्षमता वाले नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होगा। वर्ल्ड कप फाइनल 19 नवंबर को अहमदाबाद में खेला जाएगा। पाकिस्तान के मैच अहमदाबाद के अलावा हैदराबाद, बेंगलुरु, चेन्नई और कोलकाता में होंगे। क्रिकेट वेबसाइट ईएसपीएन के मुताबिक, यह शेड्यूल ड्राफ्ट आईसीसी ने वर्ल्ड कप खेलने वाली सभी टीमों को भेज दिया है। उनका फीड बैक लेने के बाद अगले हफ्ते फाइनल शेड्यूल जारी किया जाएगा।

शेड्यूल में बीसीसीआई लेट, टिकटों की जानकारी भी सामने नहीं आई – 2015 और

2019 में हुए वन डे वर्ल्ड कप का शेड्यूल एक साल पहले जारी कर दिया गया था। 2023 वर्ल्ड कप का शेड्यूल अभी तक फाइनल नहीं हुआ है। टूर्नामेंट शुरू होने में 4 महीने से कम का वक्त बचा है। 27 मई को बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने कहा था कि वर्ल्ड कप का शेड्यूल वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप के दौरान जारी कर दिया जाएगा। शेड्यूल में देरी के चलते ही आईसीसी वर्ल्ड कप मुकाबलों के लिए टिकटों की डिटेल भी जारी नहीं कर पाया है। एशिया कप में पाकिस्तान के प्रपोजल को मंजूरी संभव, फिर टीम वर्ल्ड कप खेलने में शर्तें नहीं रखेगी।

एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) एशिया कप के लिए पाकिस्तान के क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) का प्रस्ताव मंजूर कर सकती है। मीडिया के मुताबिक, पीसीबी ने प्रपोजल दिया है कि भारत के सभी मैच श्रीलंका में कराए जाएं और बाकी मुकाबले पाकिस्तान में हों। एसीसी एशिया कप को लेकर आधिकारिक ऐलान मंगलवार यानी 13 जून को कर सकती है। इसके बाद पाकिस्तान के भारत में वर्ल्ड कप खेलने का रास्ता भी साफ हो जाएगा।

एसीसी के एक मेंबर ने बताया कि सीईओ जिऑफ एलार्डिस और चेयरमैन ग्रेग बार्कले ने कराची में पीसीबी के चेयरमैन नजम सेठी से मुलाकात की थी। इस मीटिंग में ही यह स्पष्ट कर दिया गया था कि पाकिस्तान वर्ल्ड कप में खेलने के लिए कोई शर्त नहीं रखेगा, क्योंकि एशिया कप के 4 मैच उसके देश में ही कराए जाएंगे।

पूर्व कप्तान आरोन फिंच ने माना, पहले एशेज टेस्ट में खेलेंगे स्कॉट बोलैंड

लंदन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सीमित ओवरों के कप्तान आरोन फिंच का मानना है कि तेज गेंदबाज स्कॉट बोलैंड का शुक्रवार से एजबेस्टन में पहला एशेज टेस्ट खेलना तय है। बोलैंड ने द ओवल में पांचवे दिन ऑस्ट्रेलिया को 234 रनों पर आउट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विराट कोहली और रवींद्र जडेजा को 209 रनों की जीत के लिए आधार तैयार करने के लिए जल्दी-जल्दी आउट किया क्योंकि तेज गेंदबाज ने मैच में कुल मिलाकर पांच विकेट लिए थे। माइकल नेसर को डब्ल्यूटीसी फाइनल प्लेइंग इलेवन में जोश हेजलवुड के चोटिल होने के कारण चयन किया गया था।

एजबेस्टन टेस्ट के लिए हेज़लवुड की उपलब्धता पर थोड़ी स्पष्टता के साथ फिंच को लगता है कि बोलैंड बहुप्रतीक्षित एशेज ओपनर के लिए निश्चित है। उन्होंने कहा, वह उत्कृष्ट था, मुझे लगता है कि वह ठीक है और वास्तव में पहले टेस्ट में उस तीसरे त्वरित स्थान को सिल दिया। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि जोश हेजलवुड की चोट की वापसी के बारे में मुझे यकीन नहीं है, इसलिए स्कॉट बोलैंड निश्चित रूप से (एजबेस्टन में) खेलेंगे।

2021 पुरुष टी20 विश्व कप विजेता कप्तान फिंच ने स्टीव स्मिथ (121) और ट्रैविस हेड (163) के बीच 285 रनों की पहली पारी की साझेदारी को श्रेय दिया जो ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रतिष्ठित ट्रॉफी हासिल करने का मुख्य कारण था। उन्होंने कहा, विश्व टेस्ट चैंपियंस का ताज पहनाया जाना क्या उपलब्धि है। मुझे लगता है कि ट्रैविस हेड और स्टीव स्मिथ की साझेदारी ने खेल में अंतर पैदा किया, लेकिन स्टीव स्मिथ यही कुछ करते हैं। जब वह इंग्लैंड की ओर मुड़ते हैं तो ऐसा लगता है कि वे बाहर चले गए हैं और अपनी इच्छा से 100 रन बना रहे हैं। यह शानदार प्रदर्शन था और मैं टीम के लिए बहुत खुश हूं।

हमारी उम्मीदें आंसुओं में बह गईं, हार का कारण कप्तान नहीं, अन्य मुद्दे हैं :चोपड़ा

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने कहा है कि लंदन के केनिंगटन ओवल में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 209 रन की हार के कारण कप्तान नहीं हैं, बल्कि अन्य मुद्दे हैं।

हमारी उम्मीदें हमारे आंसुओं में बह गई हैं – अपने यूट्यूब चैनल पर बोलते हुए चोपड़ा ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया ने भारत को बहुत ही शानदार तरीके से हराया। चोपड़ा ने कहा, ऑस्ट्रेलिया ने हमें बहुत ही कायल अंदाज में हरा दिया। उन्होंने डब्ल्यूटीसी ट्रॉफी भी उठा ली है और सभी आईसीसी ट्रॉफी जीतने वाली दुनिया की एकमात्र टीम बन गई है। ऐसी कोई ट्रॉफी नहीं है जो ऑस्ट्रेलिया की कैबिनेट में न हो। और अगर हम अपनी बात करें तो 2013 से हमारी उम्मीदें हमारे आंसुओं में बह गई हैं।

उन्होंने आगे कहा कि भारत के एक दशक तक ढ्ढष्टष्ट ट्रॉफी नहीं जीतने के पीछे के मुद्दे कप्तान के साथ नहीं बल्कि कहीं और हैं। भारत ने आखिरी बार 2013 में चैंपियंस

ट्रॉफी जीतकर एमएस धोनी के नेतृत्व में आईसीसी ट्रॉफी जीती थी। उन्होंने कहा, अच्छा खेलने और 10 साल में ट्रॉफी नहीं उठाने के लिए आत्ममंथन की जरूरत है क्योंकि आपने कप्तान तक बदल दिया। पहले यह होता था कि अगर विराट कोहली अच्छे कप्तान नहीं हैं तो हमें कप्तान बदल देना चाहिए, लेकिन आप किसी दूसरे कप्तान के आने पर भी ट्रॉफी नहीं जीतते। यह कप्तान के बारे में नहीं है, वजह कुछ और है।

चोपड़ा ने कहा कि आईसीसी प्रतियोगिताओं में ट्रॉफी के बिना 10 साल बीताना बहुत लंबा समय है। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को टीम प्रबंधन द्वारा संबोधित करने की जरूरत है। भारत के पास अक्टूबर और नवंबर में 50 ओवरों के विश्व कप की मेजबानी करने पर आईसीसी ट्रॉफी जीतने का मौका होगा। उन्होंने कहा, आपको इस पर ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि 10 साल आपने अच्छा क्रिकेट खेला, लेकिन लेकिन ट्रॉफी नहीं उठाई। यह लंबा समय है। ऑस्ट्रेलिया ने दुबई में ट्रॉफी जीती। वे कहते हैं कि वे हालात उनके अनुकूल नहीं हैं और हम सेमीफाइनल के लिए भी क्वालीफाई नहीं कर पाए। भारत अब 2021 में केन विलियमसन के न्यूजीलैंड के खिलाफ और 2023 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आठ विकेट से हारकर लगातार डब्ल्यूटीसी फाइनल हार गया है।

अदिति 'एलपीजीए' रैंकिंग में शीर्ष 20वें स्थान पर

गालोवे (अमेरिका)(एजेंसी)। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक शॉपराइट एलपीजीए क्लासिक में संयुक्त 49वें स्थान पर रही । आखिरी दिन एक बोगी और चार बर्डी के साथ अदिति ने तीन अंडर 68 का कार्ड खेला लेकिन 54 होल में उनका कुल स्कोर दो अंडर 211 रहा। अदिति रेस टू सीएमई वैश्विक रैंकिंग में 20वें स्थान पर है जो एलपीजीए टूर का आर्डर आफ मेरिट है। इस साल निराशाजनक शुरूआत के बाद वह लगातार तीन टूर्नामेंटों में कट में प्रवेश से चूक गई थी । उसके बाद से वह शानदार फॉर्म में है और तीन बार शीर्ष पांच में रही । अब अगले सप्ताह वह मिशिगन में 25 लाख डॉलर ईनामी राशि का टूर्नामेंट खेलेगी ।

भारतीय बल्लेबाजों से निराश, बाबर आजम और केन विलियमसन से सीखने की जरूरत :नासिर हुसैन

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के हाथों शर्मनाक हार के बाद इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने भारतीय शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों को सलाह दी है कि उन्हें बाबर आजम और केन विलियमसन जैसे खिलाड़ियों से सीख लेनी चाहिए।

रविवार को द ओवल में रोमांचक मुकाबले के पांचवें दिन ऑस्ट्रेलिया ने 209 रनों की शानदार जीत दर्ज की। 444 रनों का असंभव लक्ष्य निर्धारित करने के बाद ऑस्ट्रेलिया ने भारत को पांचवे दिन लंच से पहले 234 रनों पर आउट कर अपना पहला डब्ल्यूटीसी खिताब जीता।

हुसैन ने कहा, वास्तव में भारतीय बल्लेबाजों से निराश, उनके प्रशंसक ऐसा कहने के लिए मेरी आलोचना कर सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि भारतीय शीर्ष क्रम को बाबर और केन विलियमसन से सीखने की जरूरत है कि जब गेंद घूम रही हो तो तेज गेंदबाजों को कैसे खेलना है। दोनों ऐसा बहुत देर से करते हैं।

चौथे दिन विराट कोहली और अजिंक्य रहाणे के नाबाद रहने से भारत के लिए कुछ उम्मीद थी लेकिन कि वे पांचवें दिन के खेल के पहले घंटे के भीतर ही समाप्त हो गई। बोलैंड ने कोहली और रवींद्र जडेजा को एक ही ओवर में आउट कर दिया। नाथन लायन और मिचेल स्टार्क ने भी विकेट लिए क्योंकि ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 234 रनों पर आउट कर जीत पर मुहर लगा दी। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भारत की यह लगातार दूसरी हार थी। इससे पहले उसे 2021 में न्यूजीलैंड के खिलाफ इसी तरह से हार का सामना करना पड़ा था।

12 जून विराट कोहली के लिए खास

टी-20 में किया था डेब्यू, नाबाद पारी खेलकर दिलाई थी जीत

बेंगलूर (एजेंसी)। भारतीय पूर्व कप्तान विराट कोहली के लिए आज का दिन काफी खास है। आज ही के दिन 13 साल पहले कोहली ने 12 जून 2010 को टी-20 डेब्यू किया था और फिर टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस दौरान उन्हें कभी किंग कोहली, कभी चेज मास्टर तो कभी रन मशीन समेत न जाने कितने नामों से जाना जाने लगा। वहीं विराट कोहली टी20 मैचों में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों में से एक हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ञ्20 विश्व कप में सबसे ज्यादा रन बनाने और प्लेयर ऑफ द मैच का खिताब हासिल किया है।

टी-20 में कोहली का शानदार प्रदर्शन

भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली टी-20 क्रिकेट में 4008 रन बनाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज हैं, उन्होंने टी-20 के 115 मैचों में 52.74 की औसत से इतने रन बनाए है। इस दौरान भारतीय बल्लेबाज 32 बार नॉट आउट रहा। 122 रन नाबाद उनका उच्चतम स्कोर है। इस एक शतक के अलावा विराट ने 37 फिफ्टी भी लगाई है। टी20 क्रिकेट में विराट ने 356 चौके और 117 छक्के लगाए हैं।

टी–20 सबसे ज्यादा रन बनाने टॉप 5 खिलाड़ी

1. विराट कोहली (भारत) - 4,008
2. रोहित शर्मा (भारत)-3,853
3. मार्टिन गुप्टिल (न्यूजीलैंड)- 3531 रन
4. बाबर आजम (पाकिस्तान)- 3323 रन
5. पॉल स्टर्लिंग (आयरलैंड)- 3181 रन

विराट कोहली का यह सफर किसी जंग से कम नहीं है। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2023 में विराट कोहली कुछ खराब फार्म से गुजरे है। इस दौरान उनकी खूब आलोचना भी हुई। विराट ने आलोचनाओं पर ध्यान देने के बजाए अपने खेल पर ध्यान दिया और आज स्थिति यह है कि वे टी-20 विश्व कप से सबसे सफल बल्लेबाज हैं।

स्मिथ और हेड की 285 रन की साझेदारी से फर्क पड़ा : फिंच

मेलबर्न (एजेंसी)। आस्ट्रेलिया के सीमित ओवरों के कप्तान आरोन फिंच का मानना है कि भारत के खिलाफ विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में ट्रेविस हेड और स्टीव स्मिथ के बीच पहली पारी में 285 रन की साझेदारी निर्णायक साबित हुई । आस्ट्रेलिया ने भारत को 209 रन से हराकर पहली बार डब्ल्यूटीसी खिताब जीता । फिंच ने 'सेन रेडियो' से कहा , ''विश्व टेस्ट चैम्पियन बनना बड़ी उपलब्धि है । मुझे लगता है कि ट्रेविस हेड और स्टीव स्मिथ की साझेदारी निर्णायक साबित हुई । स्टीव स्मिथ ऐसा ही खेलता है । उन्होंने कहा , ''इंग्लैंड में खेलते समय वह जब चाहता है शतक बना लेता है । यह शानदार प्रदर्शन है और मैं टीम के लिये बहुत खुश हूं । हार के बाद भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने बेस्ट आफ थ्री फाइनल की मांग की थी लेकिन फिंच ने कहा ,''मुझे मौजूदा प्रारूप से कोई दिक्कत नहीं है । अगर तीन टेस्ट भी खेले जायें तो वह समय की बर्बादी होगी ।

शुभमन गिल को आईसीसी ने दी सजा, टीम इंडिया पर भी लगा भारी जुर्माना

नईदिल्ली (एजेंसी)। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से 209 रनों से हारने के बाद रोहित शर्मा और उनकी पूरी यूनिट पर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा भारी जुर्माना लगाए जाने के बाद टीम इंडिया के लिए हालात बद से बदतर होते चले गए। आईसीसी ने सोमवार को कहा कि भारतीय टीम पर धीमी ओवर गति के लिए डब्ल्यूटीसी फाइनल मैच फीस का पूरा जुर्माना लगाया गया है। रोहित एंड कंपनी पर लक्ष्य से पांच ओवर कम होने का दोषी पाए जाने के बाद यह कार्रवाई की गई है।

ऑस्ट्रेलिया को भी चार ओवर कम होने के कारण मैच फीस का 80 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। खिलाड़ियों और खिलाड़ी सहयोगी कार्मिकों के लिए आईसीसी की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के अनुसार, खिलाड़ियों पर प्रत्येक ओवर के लिए उनकी मैच फीस का 20 प्रतिशत जुर्माना लगाया जाता है, जो आवंटित समय में गेंदबाजी करने में विफल रहते हैं।

गिल को भी लगा जुर्माना

एक अन्य झटके में भारत के सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल पर भी नाराजगी जताने के लिए मैच फीस का 15 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। गिल, भारत की दूसरी पारी में उन्हें आउट करने के अंपायर के फैसले से परेशान दिख रहे थे, कैमरून ग्रीन द्वारा स्लिप में कैच आउट दिए जाने के बाद अपनी नाराजगी दिखाने के लिए उन्होंने ट्विटर और इंस्टाग्राम का सहारा लिया था। उन पर मैच फीस का कुल 115 प्रतिशत जुर्माना लगाया जाएगा। शुभमन गिल को खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ के लिए आईसीसी की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.7 का उल्लंघन करते पाया गया। यह एक इंटरनेशनल मैच में होने वाली घटना के संबंध में सार्वजनिक आलोचना या अनुचित टिप्पणी करने से संबंधित है।

गिल ने स्कॉट बोलैंड की एक गेंद को तीसरी स्लिप में भेजा था जहां डाइविंग ग्रीन ने कैच लपका। लेकिन जैसा कि आस्ट्रेलियाई लोगों ने जश्न मनाया, गिल अपनी जिद्द पर अड़े रहे। निर्णय को तीसरे अंपायर, रिचर्ड केटलबोरो के पास भेजा गया, जिन्होंने जांच करने के बाद आउट घोषित कर दिया, जिससे गिल निराश हो गए। फिर उन्होंने अपने ट्विटर अकाउंट पर थर्ड अंपायर के प्रति निराशा जताई, जिसके बाद भारतीय मीडिया ने भी थर्ड अंपायर की जमकर क्लास लगाई।

डब्ल्यूटीसी जीतकर बोले सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज स्टार्क

ऑस्ट्रेलिया के लिए टेस्ट खेलना आईपीएल के पैसे से अधिक अहम

लंदन (एजेंसी)। मौजूदा पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाजों में से एक मिचेल स्टार्क ने खुद को आईपीएल समेत फ्रेंचाइजी क्रिकेट से दूर रखा है और उनका मानना है कि वह ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलते समय अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं। स्टार्क के लिए ऑस्ट्रेलिया की ओर से टेस्ट क्रिकेट खेलना सर्वोपरि है और उन्हें उम्मीद है कि भविष्य में युवा क्रिकेटर भी ऐसा ही सोचेंगे। स्टार्क हाल ही में समाप्त हुई विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप में ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा रहे हैं जिसने भारत को फाइनल में हराकर खिताब अपने नाम किया।

स्टार्क के कई साथी खिलाड़ी आईपीएल, बिग बैश समेत दुनिया की शीर्ष टी20 लीगों में खेल रहे हैं लेकिन स्टार्क इस मोह से दूर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे आईपीएल अच्छा लगा और यार्कशर के लिए काउंटी क्रिकेट खेलना भी लेकिन ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलना मेरी प्राथमिकता है। मुझे इसका कोई मलाल नहीं। पैसा आता जाता रहेगा लेकिन मुझे जो मौके मिले, उसके लिए मैं कृतज्ञ हूं।

स्टार्क ने कहा, 'टेस्ट क्रिकेट सौ से अधिक साल से खेला जाता रहा है और ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने वाले 500 से कम पुरूष खिलाड़ी है जो इसे अपने आप में खास बनाता है। उन्होंने कहा, 'मेरे भीतर का परंपरावादी उम्मीद करता है कि आने वाले पीढ़ी के लड़के और लड़कियां टेस्ट क्रिकेट को प्राथमिकता देंगे। फ्रेंचाइजी क्रिकेट में इतना पैसा है कि इसका ही बोलबाला दिख रहा है।

स्टार्क ने 2015 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के लिए आईपीएल खेला था। उन्होंने कहा, 'मैं फिर आईपीएल खेलना चाहूंगा लेकिन मेरा दीर्घकालिन लक्ष्य ऑस्ट्रेलिया के लिये अच्छा खेलना है, प्रारूप चाहे जो हो। आस्ट्रेलिया ने ओवल पर भारत को 209 रन से हराकर विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप खिताब जीता।

मार्केटिंग और पीआर टीम ने धोनी को 2007-2011 विश्व कप का हीरो बना दिया: गंभीर

नईदिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली, एमएस धोनी जैसे शीर्ष सितारों के प्रति जुनून को लेकर गौतम गंभीर ने खिलाड़ियों को भगवान की तरह पूजने के लिए लताड़ लगाई है और कहा कि प्रसारकों और मीडिया को अन्यों पर भी ध्यान देना चाहिए। गंभीर ने एमएस धोनी का नाम लिए बिना कहा कि एक व्यक्ति और उनकी पीआर टीम ने उन्हें 2007 और 2011 विश्व कप का हीरो बनाया था लेकिन वास्तव में यह युवराज सिंह थे, जो भारत को दोनों टूर्नामेंट के फाइनल में ले गए थे।

गंभीर ने कहा, वह हमेशा कहते हैं कि मैंने विश्व कप जीता लेकिन मेरा मानना है कि जो व्यक्ति हमें 2011 और 2007 के विश्व कप के फाइनल में ले गया वह युवराज सिंह थे, मुझे लगता है कि वह दोनों टूर्नामेंट में मैन ऑफ द टूर्नामेंट रहे। मुझे यकीन नहीं है (हालांकि युवराज ने 2011 में पुरस्कार जीता था, शाहिद अफरीदी 2007 टी20 विश्व कप में मैन ऑफ द टूर्नामेंट थे)। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब हम 2007 और 2011 विश्व कप की बात करते हैं तो हम युवराज सिंह का नाम नहीं लेते हैं। क्यों नहीं? यह केवल और केवल मार्केटिंग और पीआर है और एक व्यक्ति को सबसे बड़ा और बाकी सभी को उससे छोटा के रूप में चित्रित करना है।

गंभीर ने कहा, कोई भी कम नहीं है, यह सब पीआर और मार्केटिंग है। हमें बताया गया है कि हमें 2007 और 2011 विश्व कप किसने जिताए

[लेकिन] यह एक व्यक्ति नहीं था यह पूरी टीम थी। कोई एक व्यक्ति बड़ा टूर्नामेंट नहीं जीत सकता। अगर ऐसा होता तो भारत के पास 5-10 विश्व कप होते। गंभीर ने यह भी कहा कि भारत एक टीम-ओब्सेस्ड देश नहीं था, बल्कि एक ऐसा राष्ट्र था जो व्यक्तियों के प्रति जुनूनी है, यही कारण है कि टीम काफी समय तक किसी भी आईसीसी ट्रॉफी को नहीं जीत पाई।

उन्होंने कहा, बहुत से लोग यह नहीं कहेंगे लेकिन यह सच्चाई है और मुझे लगता है कि मुझे यह कहना चाहिए क्योंकि यह दुनिया के सामने आना चाहिए- हमारा देश एक टीम-जुनूनी देश नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति-जुनूनी देश है। उन्होंने कहा, हम व्यक्तियों को टीम से बड़ा मानते हैं। अन्य देशों में इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में टीम व्यक्ति से बड़ी है। भारतीय क्रिकेट के सभी हितधारक, ब्रॉडकास्टर और मीडिया से लेकर सभी- ये सभी एक पीआर एजेंसी में सिमट कर रह गए हैं। अगर ब्रॉडकास्टर आपको श्रेय नहीं देंगे, तो आपको हमेशा कम आंका जाएगा। यह सबसे बड़ा सच है। यही कारण है कि हमने इतने लंबे समय तक आईसीसी टूर्नामेंट नहीं जीता है क्योंकि हम व्यक्तियों को लेकर इतने जुनूनी हैं।

गंभीर ने कहा कि यह 1983 से कपिल देव के समय से ही है जब भारत ने विश्व कप जीता था। मोहिंदर अमरनाथ के बारे में कितने लोग बात करते हैं? इनमें से किसी से भी पूछिए कि उन्होंने 1983 विश्व कप के साथ मोहिंदर अमरनाथ की तस्वीर कितनी बार देखी है। पूर्व क्रिकेटर ने कहा, विश्व कप में मोहिंदर अमरनाथ जी का प्रदर्शन कैसा रहा? आपने सिर्फ कपिल देव जी को ट्रॉफी उठाते देखा है ना? सेमीफाइनल और फाइनल में मोहिंदर अमरनाथ जी मैन ऑफ द मैच रहे। क्या आप में से कोई जानता है कि फाइनल में मोहिंदर अमरनाथ जी मैन ऑफ द मैच थे? (दर्शक उत्तर नहीं देते हैं) यही समस्या है। आज तक 1983 वर्ल्ड कप की एक ही तस्वीर दिखाई गई है- उस ट्रॉफी को उठाते हुए कपिल देव जी। कभी मोहिंदर अमरनाथ जी को भी दिखा देना !

संक्षिप्त समाचार

कोरोना के एक्टिव केस लगातार हो रहे कम, पिछले 24 घंटे में 92 नए मामले आए सामने

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में कोरोना मामलों में एक बार फिर गिरावट देखने को मिली है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सोमवार को ताजा रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार भारत में कोरोना वायरस संक्रमण के 92 नए मामले सामने आए हैं, जबकि सक्रिय मामलों की संख्या घटकर 2,350 रह गई है। मंत्रालय ने सुबह 8 बजे अपडेट किए गए आंकड़ों में कहा है कि कोरोना के मामले एक दिन में 92 सामने आए हैं। इसी के साथ मरने वालों की संख्या बढ़कर 5,31,891 हो गई है। कोविड मामले की कुल संख्या भी 4.49 करोड़ दर्ज की गई। मंत्रालय के अनुसार, बीमारी से ठीक होने वालों की संख्या में इजाफा हुआ है। राष्ट्रीय कोरोना रिकवरी दर 98.81 प्रतिशत दर्ज की गई है। मृत्यु दर भी अब 1.18 प्रतिशत हो गई है। मंत्रालय की वेबसाइट के अनुसार, राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान के तहत देश में अब तक कोविड टीके की 220.66 करोड़ डोज दी जा चुकी हैं। गौरतलब है कि भारत में सात अगस्त 2020 को कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी। संक्रमण के कुल मामले 16 सितंबर 2020 को 50 लाख, 28 सितंबर 2020 को 60 लाख, 11 अक्टूबर 2020 को 70 लाख, 29 अक्टूबर 2020 को 80 लाख और 20 नवंबर को 90 लाख के पार चले गए थे। देश में 19 दिसंबर 2020 को ये मामले एक करोड़ से अधिक हो गए थे। चार मई 2021 को संक्रमितों की संख्या दो करोड़ और 23 जून 2021 को तीन करोड़ के पार पहुंच गई थी। पिछले साल 25 जनवरी को संक्रमण के कुल मामले चार करोड़ के पार चले गए थे।

बेंगलुरु के चोर बाजार में डच यूट्यूबर के साथ बदसलूकी

बेंगलुरु, एजेंसी। बेंगलुरु में एक डच के साथ दुर्व्यवहार करने के आरोप में एक व्यापारी को गिरफ्तार किया गया है। पूरे भारत में यात्रा कर रहे पेद्रो एक यूट्यूबर ब्लॉगर है और वह 11 जून को एक वीडियो ब्लॉग की शूटिंग करने के लिए बेंगलुरु के चिकपेट के एक चोर बाजार पहुंचे थे। इस दौरान एक स्थानीय व्यापारी ने उनके साथ बदसलूकी करना शुरू कर दिया। बेंगलुरू पुलिस ने एक वीडियो जारी किया है, जो पेद्रो के रिकॉर्डिंग डिवाइस से शूट किया गया है। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि पेद्रो बाजार में एक सेल्फी वीडियो शूट करते समय मुस्कुरा रहे होते है और उसी दौरान एक व्यापारी उनकी रिकॉर्डिंग पर आपत्ति जताता है और हाथ पकड़ लेता है। यूट्यूबर बार-बार व्यापारी से उसे जाने देने का अनुरोध करता है। कुछ सेंकड में यूट्यूबर खुद को बचाता है और वहां से भाग जाता है। पुलिस ने व्यापारी को गिरफ्तार कर लिया है, जिसकी पहचान नवाब हयात शरीफ के रूप में हुई है। आरोपी के खिलाफ कर्नाटक पुलिस अधिनियम की धारा 92 के तहत मामला दर्ज किया गया है। डीसीपी लक्ष्मण बी निम्बार्गी ने इस मामले पर कहा कि विदेशी नागरिक पेद्रो की शिकायत पर नवाब हयात शरीफ के खिलाफ कर्नाटक पुलिस अधिनियम की धारा 92 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

क्राइम ब्रांच लॉरेंस बिश्नोई का बदमाश अक्षय उर्फ बालाजी से कराएगी आमना-सामना

नई दिल्ली, एजेंसी। साकेत अदालत ने रविवार को फिरौती के एक मामले में गैंगस्टर लारेंस बिश्नोई की पुलिस हिरासत तीन दिन के लिए बढ़ा दी। दिल्ली पुलिस की अपराध शाख ने राजस्थान के गंगानगर में एक अन्य आरोपी अक्षय उर्फ बालाजी से आमना-सामना कराने के लिए लारेंस बिश्नोई की रिमांड बढ़ाने की मांग की थी। अक्षय ने कथित तौर पर मौजूदा मामले में पीड़ित को धमकाने के लिए हथियार और गोला-बारूद मुहैया कराया था। दिल्ली पुलिस आरोपी कपिल के बारे में जानकारी जुटाना चाहती है कि कैसे आरोपी लारेंस बिश्नोई जेल में रहने के बावजूद आरोपी अक्षय को निर्देश दे पाया। जांच अधिकारी की दलीलों पर विचार करने के बाद साकेत स्थित ड्यूटी मजिस्ट्रेट (एमएम) हिमांशु तंवर की अदालत ने लारेंस बिश्नोई की पुलिस रिमांड अगले तीन दिनों के लिए बढ़ा दी। आरोपी लारेंस बिश्नोई की तीन दिन की रिमांड प्रदान की जा रही है। अदालत ने आगे कहा कि आरोपी लारेंस बिश्नोई को संबंधित ड्यूटी मजिस्ट्रेट के समक्ष 14 जून को पेश किया जाए। अदालत ने इसी मामले में संपत नेहरा को नौ दिन की पुलिस रिमांड के बाद 25 जून तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया था। अधिवक्ता विशाल चोपड़ा लारेंस बिश्नोई की तरफ से पेश हुए और रिमांड बढ़ाने का विरोध किया। जांच अधिकारी ने 10 दिनों के रिमांड के बाद लारेंस बिश्नोई को अदालत में पेश किया। हथियार / गोला-बारूद खरीदने के लिए पैसे के स्रोत को स्थापित करने के लिए अक्षय उर्फ बालाजी के साथ लारेंस सामना करने के लिए चार दिन रिमांड बढ़ाई जाए। जांच अधिकारी ने कहा कि इस मामले में वर्तमान मामले में साजिश की श्रृंखला का पता लगाने और शिकायतकर्ता के बारे में जानकारी के स्रोत को स्थापित करने एवं सांठगांठ के अन्य सदस्यों को पकड़ने के लिए आरोपी की रिमांड जरूरी है। जांच अधिकारी ने अदालत को यह भी बताया कि आरोपी अक्षय को गुजरात के सुंदर नगर से गिरफ्तार किया गया है। इस मामले में दो नाबालिग भी आरोपी हैं। पुलिस का कहना है कि उनके रहने व अन्य व्यवस्थाएं अक्षय ने की थीं। अदालत ने पुलिस का पक्ष सुनने के बाद लारेंस की रिमांड तीन दिन बढ़ाने का निर्णय लिया। यह मामला साउथ ईस्ट दिल्ली के सनलाइट कॉलोनी इलाके में एक वकील पर फायरिंग और फिरौती की कॉल से जुड़ा है।

नोएडा में दिखा रफ्तार का कहर, बेकाबू पिकअप ने बाइक को मारी टक्कर; नाइट ड्यूटी के बाद घर जा रहे 2 पत्रकारों की

नोएडा एजेंसी। नोएडा सेक्टर-24 थानाक्षेत्र में रविवार सुबह करीब 8 बजे एलिवेटेड रोड पर पिकअप चालक ने एक बाइक पर सवार दो युवकों को टक्कर मार दी। गंभीर हालत में दोनों को कैलाश अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया, जहां उनकी मौत हो गई। दोनों एक मीडिया संस्थान से जुड़े थे और नाइट ड्यूटी खत्म कर सुबह गाजियाबाद में अपने घर जा रहे थे। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

एडिशनल डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि रविवार सुबह गाजियाबाद के विजयनगर निवासी 45 वर्षीय मनोज कुमार और अक्रूपुकरी निवासी 38 वर्षीय गौरव फिल्म सिटी स्थित एक मीडिया संस्थान से नौकरी कर अपने घर लौट रहे थे। सात बजकर 45 मिनट के करीब दोनों जब सेक्टर-62 की ओर जाने वाली एलिवेटेड रोड पर इस्कॉन मंदिर के पास पहुंचे, तभी पीछे से आए एक पिकअप चालक ने बाइक में टक्कर मार दी। तेज रफ्तार के कारण बाइक दूर जाकर गिरी। इसमें गौरव और मनोज गंभीर रूप से घायल हो गए। पीछे बैठे व्यक्ति ने हेलमेट नहीं पहना था। टक्कर के चलते दोनों वाहन क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे के बाद पिकअप चालक मौके से फरार हो गया। इस कारण एलिवेटेड रोड पर कुछ समय के लिए यातायात बाधित हो गया। लोगों ने इसकी सूचना पुलिस स्टेशन में दी।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान दोनों की मौत हो गई। मौत की सूचना मिलते ही दोनों के परिजन नोएडा पहुंच गए। पुलिस ने क्षतिग्रस्त दोनों वाहनों को कब्जे में ले लिया। फरार चालक की तलाश की जा रही है। पुलिस ने बताया कि जिस पिकअप से यह हादसा हुआ वह मदर डेयरी की थी। ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक, 4.6 किलोमीटर लंबे एलिवेटेड पर केवल एक जगह पर सीसीटीवी कैमरा लगा है। यह कैमरा इस्कॉन मंदिर के पास लगा है। यह कैमरे आईटीएमएस कमांड सेंटर से जुड़ा है। रोड पर लाइटिंग का काम चल रहा है। ऐसे में इस समय यहां कोई भी कैमरा काम नहीं कर रहा है।

असम में एनएच-17 के पास मिला महिला भाजपा नेता का शव, पुलिस को हत्या की आशंका; दो संदिग्ध हिरासत में

नई दिल्ली, एजेंसी।
असम में भाजपा की एक महिला नेता राज्य के गोलपारा जिले में मृत पाई गई हैं। मृतक असम भाजपा नेता की पहचान जोनाली नाथ के रूप में हुई है। पुलिस ने कहा कि असम में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की एक महिला नेता राज्य के गोलपारा जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग -17 के पास पाई गई।

मृतक जोनाली नाथ के परिवार ने आरोप लगाया कि यह एक सुनियोजित हत्या है, लेकिन पुलिस ने कहा कि वे सभी एंगल से मामले की जांच कर रहे हैं।

नाथ गोलपारा में भाजपा की जिला सचिव थीं। रविवार आधी रात को उसका शव कृष्णई सालपर इलाके में मिला। पुलिस के मुताबिक, उसके परिवार के सदस्यों ने कहा कि वह रविवार को शाम करीब साढ़े चार बजे किसी निजी काम से इस्लामपुर के लिए निकली थी। शाम करीब सात बजे उसके पति ने फोन करने की कोशिश की तो फोन नहीं लग रहा था। बाद में परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दी और रात करीब 12 बजे उसका शव मिला। परिजनों का आरोप है कि जोनाली के शरीर पर चोट के कई निशान थे। परिवार के सदस्यों ने सोमवार को मीडियाकर्मियों से कहा, इससे पता चलता है कि उसकी बेरहमी से हत्या की गई थी और बदमाशों ने हत्या के बाद उसके शरीर को फेंक दिया।

गोलपाड़ा पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मामले की जानकारी रखने वाले अधिकारियों के मुताबिक, दो संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है। भाजपा नेता अशोक सिंघल ने घटना पर शोक व्यक्त करते हुए इसकी जांच की मांग की है।

नोएडा फिल्म सिटी में फैशन शो से पहले दर्दनाक हादसा, महिला मॉडल की मौके पर ही मौत

नोएडा एजेंसी।
नोएडा फिल्म सिटी स्थित एक स्टूडियो में रविवार दोपहर डेढ़ बजे फैशन शो से ठीक पहले लाइटिंग ट्रस (लोहे के जालनुमा खंभे) गिरने से एक मॉडल की मौत हो गई। एक अन्य युवक भी घायल हुआ है, जिसका इलाज चल रहा है। मॉडल के भाई की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हादसे में स्टूडियो के मैनेजर, शो के आयोजक और लाइटिंग ट्रस लगाने वाले ठेकेदार को पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। हादसे के बाद आयोजन बंद करा दिया गया। बताया गया है कि जिस समय हादसा हुआ, स्टूडियो परिसर में 130 से अधिक लोग मौजूद थे। एडिशनल डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि ग्रेटर नोएडा वेस्ट की निवासी 24 वर्षीय मॉडल वंशिका चोपड़ा की मौके पर ही मौत हो गई। वंशिका के पीछे खड़ा आगरा का 35 वर्षीय बॉबी राज भी घायल हो गया।

पता चला है कि आयोजकों ने फिल्म सिटी में बिना सुरक्षा इंतजाम के फैशन शो का आयोजन कराया था। लाइटिंग ट्रस को ढीले और बेतरतीब तरीके से बांधने के कारण यह हादसा हुआ है। हादसे के समय प्रतिभागी रिहर्सल कर रहे थे। पुलिस के मुताबिक, फैशन शो के नाम पर आयोजक, स्टूडियो मैनेजर और लाइटिंग ट्रस लगाने वाले ठेकेदार ने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन सही तरीके से न कर सैकड़ों लोगों की जिंदगी को मुश्किल में डाला। हादसे के समय दर्शक दीर्घा में भी लोग मौजूद थे। अगर शो शुरू होने के बाद यह हादसा होता मंजर इतना भयावह होता, जिसकी कल्पना कर पाना मुश्किल है। घटना का जो वीडियो वायरल हुआ है उसमें घटनास्थल पर खून बिखरा हुआ दिख रहा है। वीडियो में लोग इधर से उधर भाग रहे हैं और मदद की गुहार लगा रहे हैं। साथ ही एक अन्य युवती बेहोशी की हालत में गिरी है। हादसे के करीब 15 मिनट बाद पुलिस को सूचना दी गई। घटना के तुरंत बाद अगर पुलिस को सूचना दे दी जाती और समय से युवती को अस्पताल पहुंचा दिया जाता तो उसकी जान बच भी सकती थी। दूसरे घायल को भी अस्पताल पहुंचाने में देरी हुई। वंशिका ग्रेटर नोएडा वेस्ट की दिव्यांश फ्लोरा हाउसिंग सोसाइटी में रहती थीं। सोसाइटी के एओए पदाधिकारी ने बताया कि वंशिका अक्सर कहा करती थी कि जब वह 70 एमएम के रूपहले पर्दे पर आएगी तो सोसाइटी के सारे लोग उसकी फिल्म देखने जरूर आना।

पिछली केंद्र सरकारें लोगों की समस्याओं का समाधान करने में रहीं विफल: केसीआर

हैदराबाद, एजेंसी। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने रविवार को आरोप लगाया कि पिछली केंद्रीय सरकारें देश की कई समस्याओं का समाधान करने में विफल रही हैं और पार्टियों के द्वारा चुनाव जीतने के लिए किए तमाम हथकंड़ों की प्रथा को रोकने में चुनाव आयोग नाकाम रहा है। राव ने यह टिप्पणी भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) में शामिल हुए मध्य प्रदेश के कुछ नेताओं को संबोधित करते हुए की।

पूर्व सांसद बुद्धसेन पटेल को बीआरएस की मध्य प्रदेश इकाई का समन्वयक नियुक्त किया गया है। उन्हीं के नेतृत्व में राज्य के राजनीतिक नेता, बुद्धिजीवी और अन्य लोग रविवार को राव की उपस्थिति में पार्टी में शामिल हुए। बीआरएस अध्यक्ष राव ने कहा कि चुनाव आयोग झूठे वादे करने और किसी भी कीमत पर चुनाव जीतने के लिए लोगों के बीच नफरत भड़काने की प्रैक्टिस को

रोकने में विफल रहा है। इस अवसर पर राव ने कहा कि देश प्राकृतिक संसाधनों जैसे पानी, कृषि योग्य भूमि, बिजली के लिए कोयले के भंडार और कृषि के लिए अच्छी जलवायु से धन्य है। उन्होंने आरोप लगाया कि इन सबके बावजूद यह दुखद है कि देश के किसान आत्महत्या कर रहे हैं और इसका कारण केंद्र सरकार का लोगों की समस्याओं पर ध्यान न देना है।केसीआर ने आगे आरोप लगाया कि पिछली केंद्र सरकारों ने स्वतंत्र भारत में लक्ष्यों की उपेक्षा की और बिना किसी दिशा के देश पर शासन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि काम करने के तरीके में बदलाव लाने वाली सरकारें बनाना लोगों की जिम्मेदारी है। केसीआर ने कहा कि देश बदलाव चाहता है और बुद्धिजीवियों को इस दिशा में सोचना चाहिए। बुद्धिजीवियों को लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप एक साथ आना चाहिए। केसीआर ने दोहराया कि अगर उनकी पार्टी बीआरएस केंद्र की सत्ता पर काबिज होती है तो वे दो साल में भारत के लोगों को 24 घंटे बिजली मुहैया कराएंगे। उन्होंने कहा कि बीआरएस सिर्फ एक राजनीतिक दल नहीं है बल्कि देश को बदलने का मिशन है। केसीआर ने कहा कि वर्तमान में तेलंगाना गठन दिवस का दसवां वार्षिक समारोह चल रहा है और उन्होंने प्रमुख दलित कल्याण योजना दलित बंधु जैसी अपनी सरकार की योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए रायथु बंधु निवेश योजना, रायथु बीमा जीवन बीमा योजना, किसानों को मुफ्त बिजली और पेंशन सहायता को तेलंगाना में लागू किया गया है। मुख्यमंत्री ने सवाल किया कि जब इसे तेलंगाना में लागू किया जा रहा था तो मध्य प्रदेश में इसे लागू क्यों नहीं किया गया।

पूर्वी गोदावरी जिले में दर्दनाक सड़क हादसा

राजमहेंद्रवरम , एजेंसी। आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले में सोमवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। इस सड़क हादसे में छह लोगों की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, पूर्वी गोदावरी जिले में सोमवार तड़के एक कार और लॉरी की टक्कर हो गई, जिसमें कार सवार छह लोगों की मौके पर ही मौत हो गई।

पूर्वी गोदावरी के पुलिस अधीक्षक सीएच सुधीर कुमार रेड्डी ने बताया कि ये भीषण सड़क दुर्घटना नल्लाचरला गांव हुई। उन्होंने कहा कि एक कार सड़क किनारे खड़े लॉरी से टकरा गई।

पुलिस ने कहा कि मरने वाले छह लोग एक ही परिवार के थे। मृतकों में दो महिलाएं और एक बच्चा शामिल है। पुलिस ने कहा कि कार में सवार लोग विजयवाड़ा से राजामहेंद्रवरम जा रहे थे। इधर, सड़क हादसे के मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया गया है। पुलिस ने कहा कि आगे की जांच जारी है।

मनोज साने ने सरस्वती की हत्या करने के बाद ली थी तस्वीरें, बदबू छुपाने को अपनाया था ये हथकंडा

मुंबई, एजेंसी।
मुंबई के लिव-इन पार्टनर मर्डर केस में कई नए खुलासे हुए हैं। सरस्वती वैद्य के टुकड़े कर कुकर में उबालने वाले आरोपी मनोज साने ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि कैसे उसने शव के टुकड़ों से बदबू न आए, इसका हल गूगल से निकाला था।

पुलिस ने खुलासा किया कि साने ने हत्या करने के बाद शव की तस्वीरें ली थीं। साने ने शरीर को ठिकाने लगाने का तरीका जानने के लिए कई गूगल सर्च भी किए। पुलिस ने कहा कि साने पूछताछ के दौरान बार-बार अपना बयान बदल रहा है। हालांकि, पुलिस ने उसके कई बयानों का क्रॉस वेरिफिकेशन भी किया। मामले की जांच कर रही पुलिस को यह भी पता चला है कि सरस्वती वैद्य की तीन बहनें थीं। तीनों ने पुलिस के सामने अपने बयान दर्ज कराए। समाचार एजेंसी एएनआई ने बताया कि वे आरोपी मनोज साने को कड़ी सजा दिलाने के लिए पुलिस से उसके खिलाफ मजबूत मामला बनाने की अपील कर रही हैं।

पुलिस के सामने सरस्वती वैद्य के लंबे बालों की एक तस्वीर देखकर उनकी एक बहन भावुक हो गई थी, जो आरोपी ने खींची थी। साने ने सरस्वती के बाल काटकर अपने फ्लैट के किचन के प्लेटफॉर्म पर रख दिए थे। वसई-विरार पुलिस ने कहा कि बहन ने कहा कि सरस्वती को उसके लंबे बाल बहुत पसंद थे। साने ने वुडकटर से सरस्वती के शव के टुकड़े कर उसे पूरी तरह से साफ कर दिया था। आरोपी ने इसके बाद शरीर के टुकड़ों से आने वाली दुर्गंध से बचने के लिए क्या करना चाहिए, इस बारे में जानकारी जुटाने के लिए गूगल पर सर्च किया। इसके बाद वो अपने इलाके की एक दुकान से नीलगिरी के तेल की पांच बोतलें ले आया और उसे छिड़का।

इटली के पूर्व प्रधानमंत्री बर्लुस्कोनी का निधन, 17 साल तक सत्ता संभाली, सेक्स स्कैंडल्स और टैक्स फ्रॉड की वजह से कुर्सी गंवाई

रोम, एजेंसी।
1994 से 2011 तक इटली के प्राइम मिनिस्टर रहे सिल्वियो बर्लुस्कोनी का सोमवार को निधन हो गया। उन्हें 9 साल से ब्लड कैंसर था। इटली में फिलहाल जो सरकार है, उसमें सिल्वियो की फोर्जा पार्टी भी सहयोगी है।

बर्लुस्कोनी को इटली में मीडिया टायकून भी कहा जाता है। 2017 में उन्होंने दावा किया था कि वो एक बार फिर प्रधानमंत्री बनेंगे। हालांकि, उस वक्त उन पर कई सेक्स स्कैंडल्स में शामिल होने के आरोप थे और कुछ गवाह भी सामने आ चुके थे।

'ला इटालिया' की एक रिपोर्ट के मुताबिक- 2011 में कुर्सी गंवाने के बाद बर्लुस्कोनी के सितारे गर्दिश में आ गए। उन पर सेक्स स्कैंडल्स, करप्शन और टैक्स फ्रॉड के कई आरोप लगते चले गए। इसके बावजूद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बर्लुस्कोनी ने कहा- मुझे सियासत आती है, क्योंकि बतौर मीडिया टायकून मैंने नेताओं को बहुत करीब से समझा है।

2017 में उन्होंने वापसी की कोशिश भी की और एक अलायंस बनाया। ये फिलहाल, सत्ता में है। इसके बावजूद वो फिर प्रधानमंत्री इसलिए नहीं बन सके, क्योंकि उनके कई केस चल रहे थे। 1936 में जन्में बर्लुस्कोनी ने शुरुआत में प्रॉपर्टी डेवलपमेंट से जुड़े काम किए। इसके बाद मीडियासेट नाम से एक ब्रॉडकास्टिंग कंपनी बनाई। बर्लुस्कोनी काफी अमीर थे। इसकी मिसाल ये है कि एसी मिलान जैसा अरबों डॉलर वाला फुटबॉल क्लब 1986 से 2017 तक उनकी कंपनी ने ही चलाया। 1993 में उन्होंने फोर्जा इटालिया पार्टी बनाई और चंद साल बाद ही प्रधानमंत्री बन गए। बर्लुस्कोनी तीन बार प्रधानमंत्री रहे। 2001 से 2006 तक जब वो प्रधानमंत्री थे तो उन्होंने इटली के फाइनेंशियल सेक्टर को यूरोप में सबसे ताकतवर बना दिया। 2008 में वो तीसरी बार प्रधानमंत्री बने, लेकिन वो इटली जो यूरोप की सबसे मजबूत इकोनॉमीज में शुमार होता था, अचानक फाइनेंशियल क्राइसिस में घिर गया। खुद बर्लुस्कोनी के कई सेक्स स्कैंडल्स सामने आए। टैक्स फ्रॉड के सबूत भी मिलते चले गए। सियासी दबाव में उन्होंने इस्तीफा दे दिया। इटली के इस पूर्व को चाहने वाले उन्हें किंगमेकर कहते रहे। इसकी वजह यह थी कि उनके समर्थन के बिना सरकार बनना मुश्किल था।

भारत से ज्यादा तेजी से एटमी हथियार बना रहे चीन-पाकिस्तान

दुनिया में 12,512 न्यूक्लियर वेपन; दुनिया सबसे खतरनाक दौर की ओर

स्वीडन, एजेंसी।
चीन और पाकिस्तान ने भारत के मुकाबले तेजी से अपने परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ाई है। ये दावा स्वीडन के थिंक टैंक ने किया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले कुछ सालों में चीन ने अपने हथियारों के जखीरे में 60 तो पाकिस्तान ने 5 परमाणु हथियार जोड़े हैं।

जबकि भारत ने 4 नए परमाणु हथियार डेवलेप किए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक सिर्फ एशिया ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में ऑपरेशनल परमाणु हथियारों का जखीरा लगातार बढ़ता जा रहा है। मानवता सबसे खतरनाक दौर से गुजर रही है।

दुनिया में अब 12,512 परमाणु हथियार हैं। इनमें से 9576 ऐसे हैं जो हमले के लिए तैयार है। पिछली साल के मुकाबले इस साल 86 परमाणु हथियार बढ़े हैं। पूरी दुनिया में चीन ने अपने परमाणु हथियारों का जखीरा तेजी से बढ़ाया है। शीत युद्ध के खत्म होने के बाद दुनिया में परमाणु हथियारों में तेजी से

कमी आई थी।

अब ये ट्रेंड बदल रहा है। फिर से परमाणु हथियारों की रेस शुरू हो चुकी है। सिपरी ने बताया है कि दुनिया के 90त्न परमाणु हथियार रूस और अमेरिका के पास हैं। वहीं, 12,512 हथियारों में से 3,844 परमाणु हथियार मिसाइलों और एयक्राफ्ट में लगाए गए हैं। सिपरी का कहना है कि रूस-यूक्रेन जंग शुरू होने के बाद से परमाणु हथियारों की जानकारी देने में पारदर्शिता घटी है। 2021 में ह्रस्ष्ट के सदस्य देशों ने परमाणु हथियारों को कम करने का वादा किया था। उनका कहना था- परमाणु जंग कभी नहीं जीती जा सकती है। ये हथियार कभी इस्तेमाल नहीं किए जाने चाहिए। जबकि इस वक्त अमेरिका और रूस ने अपने 2000 परमाणु हथियारों को हाई अलर्ट पर रखा है। परमाणु हथियारों की रेस को बंद करने के लिए रूस और अमेरिका ने न्यू स्टार्ट ट्रीटी समझौता किया था। जिसे यूक्रेन जंग का एक साल पूरा होने पर रूस ने रद्द कर दिया था। न्यू स्ब्रत्रक्ष ट्रीटी अमेरिका और रूस के बीच इकलौता परमाणु समझौता बचा था। जिसके तहत दोनों देश एक दूसरे के साथ अपने परमाणु हथियारों के परीक्षण की जानकारी को एक्सचेंज करते थे। रूस ने आरोप लगाया था कि अमेरिका रूस के परमाणु हथियारों की जानकारी का गलत इस्तेमाल कर रहा है।

चीनी सेना ने वुहान के वैज्ञानिकों संग मिलकर बनाया कोरोना वायरस जांचकर्ताओं ने किया बड़ा खुलासा

बीजिंग एजेंसी।
कोरोना वायरस की उत्पत्ति को लेकर नया खुलासा हुआ है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि वुहान में चीनी सेना के साथ काम करने वाले वैज्ञानिक एक खतरनाक प्रयोग में लगे हुए थे। ये लोग दुनिया के सबसे घातक कोरोना वायरसों को मिलाकर एक नया म्यूटेंट वायरस बनाना चाहते थे। इसी दौरान कोरोना वायरस महामारी की शुरुआत हुई। द संडे टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, जांचकर्ताओं का मानना है कि चीनी वैज्ञानिक खतरनाक प्रयोगों से जुड़े गुप्त प्रोजेक्ट पर काम रहे थे। इसी वक्त वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी से रिसाव हुआ और कोविड-19 का प्रकोप शुरू हुआ। यह रिपोर्ट सैकड़ों दस्तावेजों पर आधारित है, जिसमें गोपनीय रिपोर्ट, आंतरिक मेमो, वैज्ञानिक कागजात और ईमेल से हुई बातचीत शामिल है। एक जांचकर्ता ने कहा, अब तो यह साफ हो गया है कि वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी में कोविड-19 वायरस से जुड़े प्रयोग किए जा रहे थे। इस काम को लेकर किसी तरह की प्रकाशित

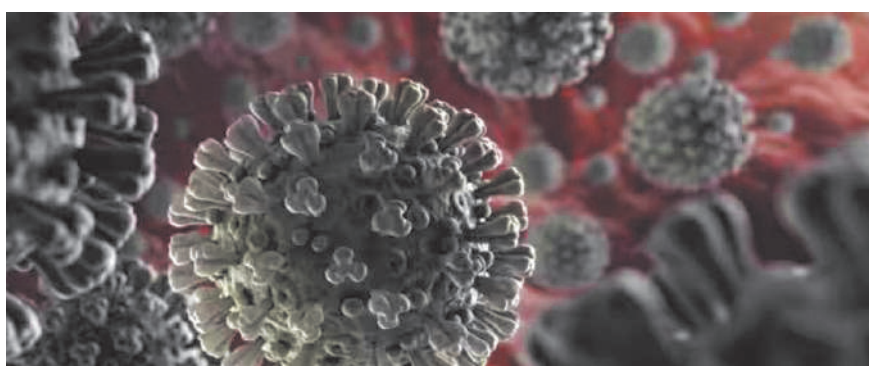

जानकारी नहीं है क्योंकि यह चीनी सेना के शोधकर्ताओं के सहयोग से किया गया था। चीन की आर्मी ही इसे फंड मुहैया कराती थी। ऐसे में हमारा मानना है कि चीन की ओर से जैविक हथियारों का विकास करने के मकसद से ये एक्सपेरिमेंट किए जा रहे थे। वहान इंस्टीटयट ऑफ वायरोलॉजी में 2003 में सार्स वायरस की उत्पत्ति का पता लगाने का काम शुरू हुआ। इसके लिए दक्षिणी चीन की बैट गुफाओं से लिए गए कोरोना वायरसों पर जोखिम भरे प्रयोग शुरू हुए। इसके नतीजे शुरू में सार्वजनिक किए गए थे। 2016 में शोधकर्ताओं को यन्नान प्रांत के मोजियांग में खदान में सार्स के समान नए प्रकार का कोरोना वायरस मिला। इसके बाद चीन ने इन मौतों की जानकारी पब्लिक नहीं की। हालांकि, उस वक्त पाए गए वायरस को अब कोविड-19 फैमिली का सदस्य माना जाता है। इसके बाद उन्हें वुहान संस्थान ले जाया गया और इन पर वैज्ञानिकों के अलग-अलग प्रयोग शुरू हुए। रिपोर्ट में बताया गया कि एक दर्जन से अधिक जांचकर्ताओं को अमेरिकी खुफिया सर्विस की ओर से जुटाई गई जानकारियां मुहैया कराई गईं। इनमें मेटाडेटा, फोन इंफॉर्मेशन और इंटरनेट सूचना शामिल हैं। अमेरिकी विदेश विभाग के जांचकर्ताओं ने कहा कि वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी खुद को नागरिक संस्थान के रूप में पेश करता है। इसके बावजूद, यहां चीन की सेना के साथ मिलकर गुप्त प्रोजेक्ट्स पर काम किया गया। वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी 2017 से ही एनमिल एक्सपेरिमेंट समेत कई तरह के प्रयोगों में लगा हुआ है। यह सब चीन की सेना की देखरेख में होता रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129